www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने दीपक आप बनो तुम!

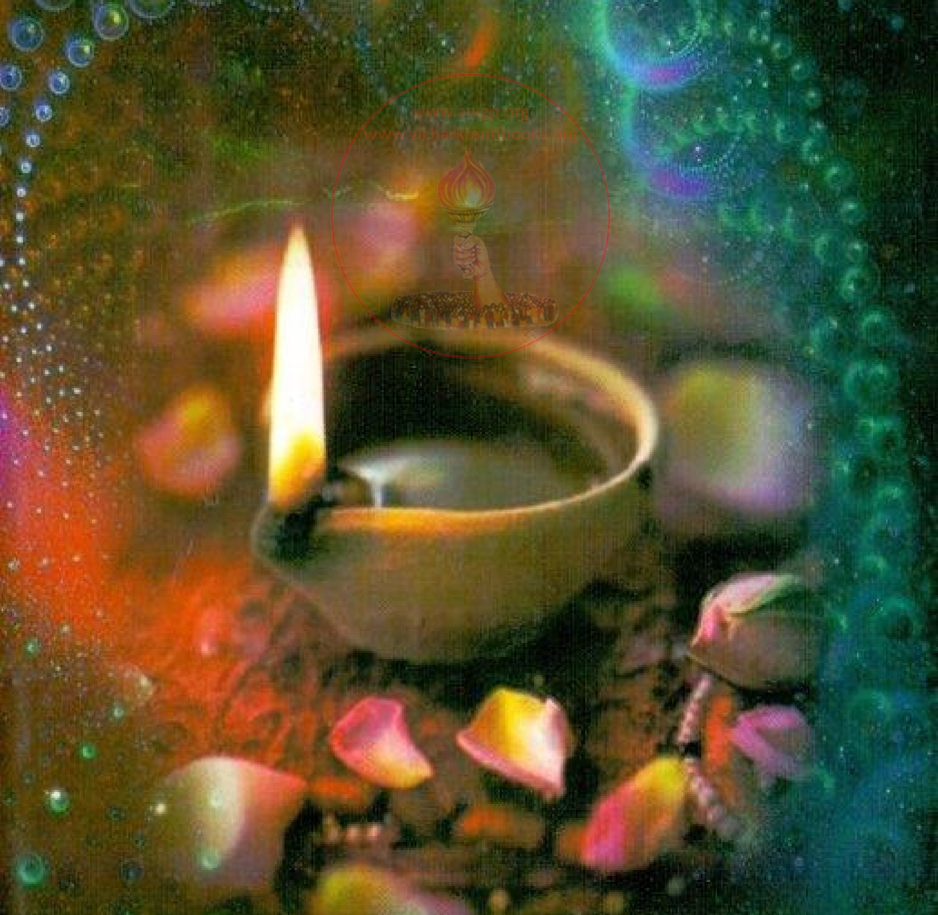

— डॉ० प्रणव पण्ड्या

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने दीपक आप बनो तुम!

लेखक

डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

सन्- 2011 मूल्य-34/-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय सूची

01. पहले सेवा, फिर उपदेश 09

02. शांति से बढ़कर कोई सुख नहीं 11

03. बुद्धत्व ही जीवन का परम स्रोत 16

04. सत्य प्रकट होता है एकांत मौन में 20

05. बोधि के दिव्यास्त्र से विकारों का हनन 26

06. प्रभु प्रेम की कसौटी, उनका ध्यान 30

07. स्वच्छता-निर्मलता का मर्म 36

08. और, अंगुलिमाल अरिहन्त हो गया 40

09. ध्यान की आँख, विवेक की आँख 46

10. आसक्ति अनंत बार मारती है 50

11. क्रोध छोड़ें, अभिमान त्यागें 54

12. नमामि देवं भवरोग वैद्यम् 58

13. महानिर्वाण की अनुभूति 62

14. जीवन का अपने मूल स्रोत से जा मिलना 66

15. श्रद्धा की परिणति 70

16. गलत प्रव्रज्या में रमण दुःखदायी है 74

17. अहंकार गंदगी है, मल है 78

18. सदगुरु का स्मरण 82

19. मनुष्य अपना स्वामी स्वयं 86

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

20. प्रभु का सान्निध्य 90
21. अब फिर बज उठे रणभेरी 94
22. वीतराग रेवत की सन्निधि का चमत्कार 98
23. बुद्धत्व के सान्निध्य से जन्मा ब्राह्मणत्व 103
24. मोहजनित भ्रांति से प्रभु ने उबारा 107
25. सच्चा भिक्षु 111
26. जहाँ सत्य है, निश्छलता है, वहीं विजय है 115
27. बन्धन मुक्त ही ब्राह्मण है 119
28. सच्चा ब्राह्मण 123
29. पूर्णा चली पूर्णता की डगर पर 127
30. बहिरंग नहीं, प्रभु के अंतरंग को जाना 131
31. निंदा छोड़ो–ध्यान सीखो 135

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेखक की ओर से

यह पुस्तक आपके हाथों में बुद्ध गाथा लेकर आयी है। आज से लगभग २५०० वर्ष पहले इसी पुण्य दिन धरती की गोद में महाराज शुद्धोधन के यहाँ राजकुमार सिद्धार्थ ने जन्म लिया था। इसके बाद एक-एक करके कई बैसाख पूर्णिमा आयी और चली गयीं। लेकिन फिर से एक महापुण्यवती बैसाख पूर्णिमा आयी, जब महातपस्वी सिद्धार्थ की अन्तर्चेतना में बुद्ध ने जन्म लिया। इस अनूठे जन्मोत्सव को मनुष्यों के साथ देवों ने भी अलौकिक रीति से मनाया। इस पुण्य घड़ी में सिद्धार्थ सम्यक् सम्बुद्ध बन गए और बैसाख पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा में रूपान्तरित हो गयी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इस पूर्णिमा से जुड़ी दोनों ही कथाएँ बड़ी ही मीठी और प्यारी हैं। आज से २५०० साल पहले, जिस दिन सिद्धार्थ का जन्म हुआ, समूची कपिलवस्तु में उत्सव की धूम मच गयी। पूरा नगर सज गया। रात भर लोगों ने दिए जलाए, नाचे। उत्सव की घड़ी थी, चिर दिनों की प्रतीक्षा पूरी हुई थी। बड़ी पुरानी अभिलाषा थी पूरे राज्य की। इसलिए राजकुमार को सिद्धार्थ नाम दिया गया। सिद्धार्थ का मतलब होता है, जीवन का अर्थ सिद्ध हो जाना, अभिलाषा का पूरा हो जाना।

पहले ही दिन, जब द्वार पर बैंड बाजे बज रहे थे, शहनाइयाँ गूँज रही थी, फूल बरसाए जा रहे थे, महलों में, चारों तरफ प्रसाद बांटा जा रहा था। तभी हिमालय से भागते हुए एक वृद्ध तपस्वी महलों के द्वार पर आकर खड़ा हो गया। उसका नाम असिता था। नगर वासियों के साथ स्वयं सम्राट उनका सम्मान करते थे। वह अब तक कभी राजधानी न आए थे। स्वयं सम्राट को भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनसे मिलने के लिए जाना पड़ता था। आज अचानक उन्हें महलों की ड्योढ़ी पर देखकर सभी चकित थे। सम्राट ने आकर बड़े अचकचाए स्वर में उनसे पूछा- हे महातपस्वी, क्या सेवा करूँ आपकी।

असिता ने उनकी दुविधा का निवारण करते हुए कहा, परेशान न हो शुद्धोधन। तुम्हारे घर बेटा पैदा हुआ है, उसके दर्शन को आया हूँ। शुद्धोधन तो समझ ही न पाए। सौभाग्य की घड़ी थी यह कि असिता जैसा महान् वीतरागी उनके बेटे को देखने के लिए आया। वह भागे हुए अन्तःपुर में गए और नवजात शिशु को बाहर लेकर आए। असिता झुके और उन्होंने शिशु के चरणों में सिर रख दिया। और कहते हैं, शिशु ने अपने पांव उनकी जटाओं में उलझा दिए। असिता पहले तो हंसे, फिर रोने लगे। शुद्धोधन तो हतप्रभ हो गए, वह पूछने लगे, महामुनि आप रोते क्यों हैं ?

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असिता ने कहा, तुम्हारे घर में जो यह बेटा आया है, यह कोई साधारण आत्मा नहीं है, अरे यह तो सब तरह से अलौकिक है। कई सदियाँ बीत जाती है, तब कहीं यह आता है। यह तुम्हारे लिए ही सिद्धार्थ नहीं, यह तो अनन्त-अनन्त लोगों के लिए समूची मनुष्यता के लिए सिद्धार्थ है। अनन्त जनों के जीवन का अर्थ इससे सिद्ध होगा। हंसता हूँ कि इसके दर्शन मिल गए। बहुत प्रसन्न हूँ कि इसने मुझ बूढ़े की जटाओं में अपने पांव उलझा दिए। मेरे लिए यह परम सौभाग्य का क्षण है। पर रुलाई इसलिए आ रही है कि जब यह कली खिलेगी, फूल बनेगी, जब दसो दिशाओं में इसकी महक उठेगी, तब मैं न रहूँगा। मेरे शरीर छूटने की घड़ी करीब आ गयी है।

महातपस्वी असिता की यह बात बड़ी अनूठी पर सच्ची है। बुद्धत्व का लुभावनापन ही कुछ ऐसा है। उनकी मोहकता है ही कुछ ऐसी। असिता जीवनमुक्त हो गए, पर उन्हें पछतावा होने लगा, कि काश एक जन्म अगर और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलता तो इस महाबुद्ध के चरणों में बैठने की, इनकी वाणी सुनने की, इनकी सुगन्ध पीने की, इनके बुद्धत्व में डूबने की सुविधा हो जाती। ऐसे अनूठे पल होते हैं, बुद्धत्व के विकसित होने के। महातपस्वी असिता में भी चाहत पैदा हो गयी कि मोक्ष दांव पर लगता हो लगे, कोई हर्जा नहीं। वह रोने लगे थे उनके पांवों पर सिर रखकर कि सदा ही चेष्टा कि कब छुटकारा हो इस शरीर से, जीवन के आवागमन से, पर आज पछतावा हो रहा है।

काल प्रवाह में क्षण, दिवस, वर्ष बीते। और एक बैसाख पूर्णिमा को सत्य का, सम्बोधि का, बुद्धत्व का वही चाँद निकला, जिसकी चांदनी में जीने की चाहत कभी असिता ने की थी। यह पूर्णचन्द्र महातपस्वी शाक्यमुनि सिद्धार्थ के अन्तर्गगन में उदय हुआ। इस बीच अनेकों घटनाएँ काल सरिता में घटकर बह गयीं। शिशु सिद्धार्थ किशोर हुए, युवा हुए, यशोधरा उनकी राजरानी बनीं, राहुल के रूप में उन्हें पुत्र मिला। पर ये तो दृश्य घटनाएँ थी। अदृश्य में भी बहुत कुछ घटा। प्रचण्ड वैराग्य, अनूठा विवेक- जिसकी परिणति महाभिनिष्क्रमण क़े रूप में हुई। युवराज तपस्वी हो गए। तपस्या से दुर्बल, जर्जर सिद्धार्थ को सुजाता ने खीर खिलायी। और उनकी देह को ही नहीं जीवन चेतना को भी नव जीवन मिला। और वह गौतम बुद्ध हो गए।

गौतम बुद्ध के रूप में वे ऐसे है जैसे हिमाच्छादित हिमालय। जिससे करूणा की अनेकों जलधाराएँ निकलती हैं। जहाँ से महाकरूणा की गंगा बहती है। जो पतितपावनी, कलिमलहारिणी, सर्वपापनाशिनी है। पर्वत तो और भी है हिमाच्छादित पर्वत भी और है। पर हिमालय अतुलनीय है। उसकी कोई उपमा नहीं है। हिमालय बस हिमालय जैसा है। गौतम बुद्ध बस गौतम बुद्ध जैसे हैं। पूरी मनुष्य जाति में उनके जैसा महिमापूर्ण नाम दूसरा नहीं। उन्होंने जितने हृदयों की वीणा को बसाया है, उतना किसी और ने नहीं। उनके माध्यम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से जितने लोग जागे और जितने लोगों ने परम भगवत्ता उपलब्ध की, उतनी किसी और के माध्यम से नहीं।

बुद्ध के बोल अत्यन्त मीठे हैं, उनके वचन बहुत अनूठे हैं। उनके द्वारा कही गयी धम्म गाथाओं में जीवन के बहुआयामी सच है। प्रत्येक धम्मगाथा एक कथा कहती है और जिन्दगी को राह दिखाती है। इस पुस्तक में इन अनूठी कथाओं को पिरोया गया है। एच.जी. वेल्स ने बुद्ध के सम्बन्ध में एक अद्भुत सच्चाई बयान की। उन्होंने कहा- कि समूची धरती पर उन जैसा ईश्वरीय व्यक्ति और उनकी तरह ईश्वर शून्य व्यक्ति एक साथ पाना कठिन है- सो गॉड लाइफ एण्ड सो गॉड लेस। अगर कोई ईश्वरीय प्रतिभाओं को खोजने निकले तो बुद्ध से ज्यादा ईश्वरीय प्रतिभा भला कहाँ मिलेगी ? फिर भी सो गॉडलेस- इतना ईश्वर शून्य। ईश्वर शून्यता का अर्थ ईश्वर विरोधी होना नहीं है। जैसा कि कुछ समझदार समझे जाने वाले नासमझों ने समझ लिया है। इसका मतलब सिर्फ इतना ही है कि उन्होंने इस परम सत्य का उच्चार नहीं किया।

उपनिषद् कहते हैं कि ईश्वर के बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन इतना तो कह ही दिया। बुद्ध ने इतना भी नहीं कहा। वे परम उपनिषद् हैं। वह ईश्वर की चर्चा करने वाले केवल नाम मात्र के आस्तिक नहीं हैं। वह तो ईश्वरत्व को उपलब्ध करने वाले महाआस्तिक हैं। अगर परमात्मा के सम्बन्ध में कुछ कहना सम्भव नहीं, तो फिर बुद्ध ने कुछ नहीं कहा। बस चुप रहकर- इशारा किया। पश्चिम में एक बहुत बड़ा दार्शनिक हुआ है- लुडविग पिट्गिंस्टाइन। उसने अपनी बड़ी अनूठी किताब 'ट्रैफ्टेटस' में लिखा है कि जिस सम्बन्ध में कुछ कहा न जा सके, उस सम्बन्ध में बिल्कुल चुप रह जाना उचित है। दैट व्हिच कैन नॉट बी सेड, मस्ट नॉट बी सेड। जो नहीं कहा जा सकता, कहना ही नहीं चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगर विट्गिंस्टाइन ने बुद्ध को देखा होता तो वे अपने कहे हुए सच की अनुभूति कर लेते। अगर विट्गिंस्टाइन की बातों को बुद्ध ने सुना होता तो अवश्य मुस्करा देते। बड़े ही प्यार से वे उसके कथन को अपनी स्वीकृति दे देते। पश्चिम के लोगों ने विट्गिंस्टाइन को समझने में भूल की। यही भूल पूरब के लोगों को हुई, बुद्ध को समझने में। बुद्ध दार्शनिक और विचारक नहीं, वह रुग्ण मनुश्यता के लिए बड़े ही करूणावान वैद्य थे। बहुत लोगों ने मनुष्य के रोग का विश्लेषण किया है। पर इतना करूणापूर्ण होकर और इतने सटीक ढंग से नहीं। बड़े ढंग से लोगों ने बातें कही हैं, बड़े गहरे प्रतीक उपाय में लाए हैं। पर बुद्ध के कहने का ढंग ही कुछ और है, जिसने एक बार सुना, पकड़ा गया। जिसकी ओर एक बार उन्होंने भर नजर देख लिया, फिर वह भटक न पाया। जिसे उनके बुद्धत्व की थोड़ी सी झलक मिल गयी, उसका समूचा जीवन ही रूपान्तरित हो गया। 'अप्प दीपो भव' यही बुद्ध का अन्तिम वचन है। बुद्ध पूर्णिमा के शुभ क्षणों में इसे इस भांति भी स्मरण किया जा सकता है-

महाबुद्ध ने मुझसे-तुमसे,

एक-एक से, हम सबसे

सुनो, यह सत्य कहा,

अपने दीपक आप बनो तुम

तिमिर का व्यूह भेद करना है,

कैसा यहाँ विराम

शिखा को झंझा में पलना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले सेवा, फिर उपदेश

भिक्षु कलम्भन ने धर्म प्रचार के लिए जाते समय प्रस्थान की घड़ी में भगवान् तथागत को प्रणाम किया। भगवान् तथागत ने अपने इस प्रिय शिष्य को दोनों हाथों से उठाया और हृदय से लगाते हुए कहा- वत्स! संसार बड़ा दु:खी है। लोग अज्ञानवश कुरीतियों से जकड़े हुए हैं। तुम उन्हें जागृति का संदेश दो। ध्यान रहे विचार क्रान्ति ही धर्म चक्र प्रवर्तन की धुरी है और आत्मकल्याण के साथ लोक कल्याण का महामंत्र भी।

अपने शास्ता की चरण धूलि को माथे पर लगाकर कलम्भन चल पड़े। दिन छिपने से कुछ पूर्व ही वह एक गांव में जा पहुँचे। इस गांव में महामारी का प्रकोप था। वहाँ के प्राय: सभी पुरुष बीमार पड़े थे। स्त्रियाँ उनकी सेवा-शुश्रूषा में व्यस्त थीं। बच्चों की त्वचा हड्डियों से चिपक गयी थी। ऐसा लग रहा था कि इस पूरे गांव में किसी को भी न तो भर-पेट अन्न मिलता था और न ही उन्हें बीमारियों से लड़ने के लिए जीवन रक्षक औषधियाँ। शिक्षा की दृष्टि से भी उनमें से किसी को कोई चेतना न थी। सभी एक से बढ़कर एक म्लान-मलिन और दु:खी थे।

कलम्भन के गांव में प्रवेश करते ही गांव में जैसे आशा की एक किरण दिखाई दी। जिसने भी सुना भगवान तथागत के शिष्य कलम्भन अपने गांव में आए हैं, वही उल्लसित हो उठा। विद्युत् गति से यह उल्लास भरा समाचार पूरे गांव में फैल गया। सभी एक दूसरे से कहने बतियाने लगे- भगवान् तथागत के शिष्य भिक्षु कलम्भन हम सभी के दु:ख दूर करने के लिए हैं। भगवान् शाक्य मुनि ने उन्हें स्वयं भेजा है। हम लोगों के दु:ख निश्चय ही दूर होंगे।

श्रद्धालु ग्रामवासियों ने उनके लिए विश्राम की सुखद व्यवस्था कर दी। सभी ने रात्रि बड़ी प्रसन्नता एवं शान्ति से काटी। हर एक का मन आशान्वित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था। प्रात:काल बौद्धभिक्षु जब तक अपना ध्यान समाप्त करें, तब तक द्वार ग्रामवासियों की भीड़ से भर गया। भिक्षु कलम्भन जब बाहर निकले तब जरा-जीर्ण व्याधिग्रस्त ग्राम निवासियों को देखकर एक पल के लिए उनका मन क्षुब्ध हुआ, लेकिन दूसरे ही पल उन्होंने सभी को बैठने के लिए कहा।

सबको सामने बिठाकर उन्होंने उपदेश प्रारम्भ किया। तप का उपदेश, ज्ञानी बनने का उपेदश। और सब से बढ़कर बुद्ध धर्म एवं संघ की शरण में जाने का उपदेश। पर आपत्ति के मारे ग्रामीणों को न बुद्धं शरणं गच्छामि समझ में आया और न ही धम्मं शरणं गच्छामि एवं संघं शरणं गच्छामि के महामंत्र।

हताश भिक्षु कलम्भन उल्टे पांव चल पड़े। और अपने शास्ता के पास लौट कर बोले- भगवन्! पता नहीं मेरे में कुछ त्रुटि है अथवा फिर मेरे ज्ञानोपदेश में। यह भी हो सकता है प्रभु! कि ग्रामीणों में ग्रहणशील चेतना न हो। कारण जो भी हो, पर मेरा प्रयास पूर्णतया निष्फल रहा। भगवान् तथागत ने बड़ी धैर्य एवं सहिष्णुता से अपने प्रिय शिष्य की कथा सुनी। सब कुछ सुनकर वह एक पल के लिए चुप रहे, फिर उन्होंने आचार्य महाकाश्यप एवं जीवक भी बुलाकर कहा- देखो वत्स! तुम लोग उस गांव में पहुँचकर ग्राम निवासियों के लिए औषधि एवं शिक्षा का प्रबन्ध करो।

तथागत की आज्ञा मानकर महाकाश्यप और जीवक वहाँ से चल पड़े। तब भिक्षु कलम्भन ने उनसे प्रश्न किया। भगवन्! आपने इन दोनों महानुभावों को तत्त्वोपदेश के लिए तो कहा ही नहीं। तथागत यत्किंचित गम्भीर हुए और बोले- वत्स! समाज की प्राथमिक आवश्यकताओं और सुधार की मूल आवश्यकता को पूरा किए बगैर तत्त्वोपदेश सम्भव नहीं। वत्स आज की आवश्यकता स्वास्थ्य है, शिक्षा है। इसके बाद कुरीतियों एवं रुढ़ियों के संजाल से उन्हें मुक्त करना है। अभी उन्हें जीवन की आशा चाहिए। आज जिएँगे तो कल ये ही सम्यक् सम्बुद्ध बनेंगे। कलम्भन को सत्य समझ में आ गया। उसने भी सोचा कि कोरे धर्मोपदेश की अपेक्षा समाज सेवा कहीं अधिक श्रेयस्कर है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शांति से बढ़कर कोई सुख नहीं

श्रावस्ती की शोभा अवर्णनीय थी। नगर द्वार से लेकर गृह द्वार तक हर कहीं प्रकाश लड़ियों के वन्दनवार जगमग कर रहे थे। नगर की प्रत्येक वीथिका महक रही थी। महाराज से लेकर सामान्य जन तक सभी उल्लसित थे। प्रत्येक की दृष्टि नगर श्रेष्ठी विशाखदत्त के भवन की ओर लगी थी। नगर का प्रत्येक पथ आज उसी ओर जाता लगता था। हर कोई उनके भवन में होने वाले समारोह में भागीदार होना चाहता था। मेहमानों के स्वागत की व्यवस्था स्वयं महाराज देख रहे थे। उनकी आँखें द्वार पर एकटक टिकी थी। यदा-कदा उनके चेहरे पर अधीरता की लहरें कांप उठती थीं। उनके अन्तःकरण में एक अनूठी हिल्लोर उठती, जिसे सम्हालते हुए वह पुनः अपने काम में लग जाते।

उन्होंने यही कहते हुए स्वागत व्यवस्था सम्हाली थी कि श्रेष्ठी विशाखदत्त की कन्या स्वयं उनकी भी कन्या है। और कुलकन्या के इस विवाह समारोह में स्वागत व्यवस्था का दायित्व वह स्वयं सम्हालेंगे। पर मन के किसी कोने में यह भाव भी छुपा था कि उन्हें भिक्षु संघ के साथ भगवान् बुद्ध के दर्शन, सत्कार एवं सेवा का सुयोग अनायास ही मिल जाएगा। श्रेष्ठी विशाखदत्त भगवान् तथागत के अनन्य भक्त थे। भगवान् में ही उनके प्राण विराजते थे। उन्होंने अपनी कन्या के विवाह समारोह में भगवान् को विशेष रूप से आमंत्रित किया था। आमंत्रण सुनकर तथागत एक पल को विंहसे और कहने लगे- श्रेष्ठी! मेरे वहाँ जाने पर कहीं राग की अग्नि बुझ न जाय। कहीं सप्तपदी के लिए बढ़ने वाले पग तप के लिए न बढ़ जाएँ?

प्रभु के ये वचन सुनकर श्रेष्ठी ने विनीत भाव से कहा- भगवान् मैं तो सर्वतोभावेन आपकी शरण में हूँ। आपकी कृपा से जो कुछ होगा- मंगलमय ही होगा। मेरी कन्या सौम्यदर्शना आपकी अनुगामिनी है। आपके आशीष स्वरूप कुछ भी होगा, उसके लिए वही श्रेष्ठ होगा। श्रेष्ठी की इन बातों को सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथागत बोले- तुम्हारा कल्याण हो श्रेष्ठी, हम अवश्य आएँगे। हमारे साथ में हमारा भिक्षु संघ भी होगा। और फिर तो यह खबर पूरे नगर में वायु के झोंके के साथ फैल गयी कि कुल कन्या सौम्यदर्शना के विवाह समारोह में शास्ता स्वयं अपने भिक्षु संघ के साथ पधारेंगे।

शास्ता के आगमन की घड़ी आज ही थी। इन्हीं शुभ क्षणों के लिए समूची श्रावस्ती महीनों से सज रही थी। नगर का प्रत्येक नागरिक तथागत के दर्शनों के लिए उत्साहित था। वैसे भी श्रेष्ठी विशाखदत्त प्रत्येक नगर-जन के प्रिय थे। पर हित के लिए अपने सर्वस्व को न्यौछावर कर देने वाले श्रेष्ठी के प्रति हर नागरिक के मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव था। महाराज तो उन्हें अपना सहोदर भ्राता मानते थे। राजमहिषी सौम्यदर्शना को अपनी सगी पुत्री की भांति प्यार करती थी। उसके विवाह समारोह में समूचे नगर की प्राण चेतना विवाह मण्डप में केन्द्रित होना स्वाभाविक थी।

उसी समय किसी ने खबर दी कि शास्ता पधार रहे हैं, साथ में उनका भिक्षु संघ भी है। इस समाचार ने समूचे वातावरण को कुछ विशिष्ट तरंगित और स्पन्दित किया। असंख्य प्राण हुलसे, असंख्य मन श्रद्धा विगलित हो उठे। प्रभु आ रहे हैं, यह सुनकर श्रेष्ठी कन्या सौम्यदर्शना को गहरी आश्वस्ति हुई। उसे भरोसा हुआ, उसके प्राणों की आतुर पुकार अब अवश्य सुनी जाएगी। परन्तु विवाह मण्डप में उसी के साथ बैठे वर महोदय को जैसे इस सबकी कोई खबर ही नहीं थी। वह अपनी ही धुन में कहीं खोए थे। सम्भवतः सौम्यदर्शना की मुखछवि उन्हें बेसुध बनाए दे रही थी।

तभी स्वयं महाराज भगवान् और उनके भिक्षुओं को लेकर विवाह मण्डप में आ गए। शास्ता के तप तेज के सामने मण्डप में फैला कृत्रिम प्रकाश फीका पड़ गया। एक अनूठी आभा वहाँ बिखरने लगी। उनके आने से कुलकन्या सौम्यदर्शना को तो जैसे अपने खोए प्राण मिले। वह पहले भगवान् के चरणों में झुकी, फिर अन्य भिक्षुओं के चरणों में। उसके लिए तो जैसे भगवान् के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलावा अन्य किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति का अस्तित्त्व ही न रहा। लेकिन उसका होने वाला पति उसे देखकर नाना प्रकार के काम-सम्बन्धी विचार करता हुआ रागाग्नि में जल रहा था। उसका मन काम-वासना की गहन बदलियों और धुंओं से ढंका था। उसने भगवान् को देखा ही नहीं। न देखा उस विशाल भिक्षुओं के संघ को। उसका मन तो जैसे वहाँ था ही नहीं। वह तो भविष्य में था। उसके भीतर तो सुहागरात चल रही थी। वह अपनी कल्पित सुहाग सेज के अंधेरों में खोया हुआ था। वह इस समय एक अंधे की भाँति था।

भगवान् से उसकी यह विपन्न-दीन दशा देखी न गयी। उन्होंने करुणा विगलित हृदय से उसकी ओर देखा। कुछ अनोखा और अलौकिक था प्रभु की उस अमृतवर्षिणी दृष्टि में। आधे से भी आधे पल में क्या कुछ नहीं घटित हो गया। कुछ यूँ हुआ जैसे घुप-घने और गहन अंधेरों में प्रकाश का महासमुद्र उफन-उमड़ आया हो। सर्वत्र-सब ओर प्रकाश ही प्रकाश सौम्यदर्शना के होने वाले पति कुमार सुयश की अन्तर्चेतना में छा गया। अब अंधेरे का कण भी वहाँ न था। जब अंधेरा ही न रहा, तब भला ऐसे में सपने और कल्पनाएँ कहाँ रहतीं।

वह जैसे अनायास नींद से जागा। कुलकन्या सौम्यदर्शना की मुख छवि अचानक उसके हृदयपट से विलीन हो गयी है। वहाँ तो बोधिज्ञान की प्रकाश धाराएँ उतर रही थीं। किसी भी तरह उसकी कल्पनाएँ टिक न सकीं। वह चौंक कर खड़ा हो गया। और तब उसे भगवान् दिखाई पड़े। और दिखाई पड़ा उसे भगवान् का भिक्षु संघ। और तब दिखाई पड़ा उसे कि अब तक मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा था। संसार का धुँआ जहाँ नहीं है, वहीं तो सत्य के दर्शन होते हैं। वासना जहाँ नहीं है, वहीं तो भगवत्ता की प्रतीति होती है। उसे चौकन्ना और विस्मय में डूबा हुआ देखकर भगवान् ने कहा, कुमार! रागाग्नि के समान दूसरी कोई अग्नि नहीं है। वही है नर्क, वही है निद्रा। जागो, प्रिय सुयश! जागो! और जैसे शरीर उठ बैठा है, ऐसे ही तुम भी उत्तिष्ठ हो जाओ। उठो! उठने में ही मनुष्यता की शुरूआत है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवाह मण्डप का समूचा वातावरण यकायक परिवर्तित होने लगा। श्रृंगार की झुलसाने वाली हवा के स्थान पर प्रभु करूणा की बयार वहाँ बहने लगी। भगवान् कह रहे थे-

नत्थि राग समो अग्गि नत्थि दोस समो कलि।

नत्थि खंध समा दुक्खा नत्थि संति परं सुखं॥

शास्ता के इन वचनों को सुनकर श्रेष्ठी विशाखदत्त ने उनसे प्रार्थना की कि भगवान् कृपा करके अपने वचनों का अर्थ स्पष्ट करे। पर आज तो प्रभु जैसे केवल कुमार सुयश से ही बोल रहे थे। वह उसे सम्बोधित करके कहने लगे- भन्ते! 'नत्थि राग समो अग्गि' अर्थात् 'राग के समान आग नही'। 'नत्थि दोस समो कलि' यानि कि 'द्वेष के समान मैल नहीं।' 'नत्थि खंध समा दुक्खा' 'पंच स्कन्धों के समान दुःख नहीं।'

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ये पंच स्कन्ध क्या है भगवान्। पहली बार कुमार सुयश ने अपना मुँह खोला। भगवान् की कृपा से उनकी अन्तर्चेतना निर्मल हो चली थी। भगवान् ने भी उन पर अपनी और भी अधिक कृपादृष्टि करते हुए कहा- भन्ते! मनुष्य का व्यक्तित्व बना है दो चीजों से- नाम, रूप। रूप यानि देह, नाम यानि मन। स्थूल देह तो एक है, लेकिन मन के चार रूप हैं- वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान। ऐसे सब मिलाकर पांच। इन पांच में जो जीता है- वह समझो कि दुःख में ही जीता है। इन पांच में जीने का अर्थ है या तो शरीर की आसक्ति में जीना अथवा फिर मन की वासनाओं में जीना। जो इन पंचस्कन्धों में जी रहा है- वह समझो कि दुःख में जी रहा है। इसी के साथ भगवान् ने आगे समझाया- 'नत्थि संति परं सुखं' अर्थात् 'शान्ति से बढ़कर और कोई सुख नहीं है।'

तथागत के इन वचनों के साथ ही कुमार सुयश के मन में शान्ति उतर आयी। उसे भगवान् के वचनों की सार्थकता अनुभव होने लगी। उसने बड़ी कृतज्ञता पूर्ण दृष्टि से प्रभु की ओर देखा। विवाह अब आवश्यक न रहा प्रभु, अब आप मुझे अपनी शरण में ले लें। होने वाले पति की इन बातों को सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुलकन्या सौम्यदर्शना को जैसे मनवांछित मिला। वह कहने लगी भगवान्! मैं तो सदा से आपकी करूणा की आकांक्षी हूँ। श्रेष्ठी विशाखदत्त तो शास्ता के अनुगत थे ही। बस फिर क्या था? मण्डप में विवाह मंत्रों के स्थान पर बुद्धं शरणं गच्छामि! धम्मं शरणं गच्छामि!! संघं शरणं गच्छामि!!! के स्वर गूँजने लगे। समूचा परिवार भगवान् तथागत के धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए समर्पित हो गया। वहाँ उपस्थित सभी जन अनुभव कर रहे थे कि सचमुच ही शान्ति से बढ़कर और कोई सुख नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धत्व ही जीवन का परम स्रोत

भगवान् बुद्ध ने उसकी ओर देखा। बड़ी पारदर्शी और करूणापूर्ण थी वह दृष्टि। उनके अलौकिक जीवन की ही भांति उनकी दृष्टि भी अनोखी थी। यह ऐसी दृष्टि थी जो बाहर ही नहीं भीतर भी देखती थी। रूप और आकार को ही नहीं, स्वभाव एवं संस्कारों को भी निहारती थी। बड़े ही सौभाग्यशाली होते वे, जिन्हें प्रभु भर नजर देख लेते। आज उसके जीवन में सौभाग्य-सूर्य की किरणें झिलमिलायी थी। प्रभु की करूणा उसे छू रही थी और वह धन्य हो रहा था।

बड़ी ही मुश्किल से मिले थे ये पल उसे। इन दिनों भगवान् आलवी नगर आए थे। उनके साथ पांच सौ भिक्षु भी थे। प्रभु के साथ भिक्षुओं की उपस्थिति ऐसी थी, जैसे सूर्य के साथ किरणें होती हैं। ये किरणें चारों ओर सूर्य की प्रभा-प्रकाश बिखेरती हैं। इन्हें देखकर बरबस ही सूर्य की उपस्थिति का अहसास हो जाता है। प्रभु का भिक्षु संघ भी कुछ ऐसा ही था। भिक्षु संघ के सदस्यों से भगवान् की अलौकिक चेतना झरती, बहती और बिखरती थी। आलवी नगर में इस समय यही हो रहा था। भगवान् की उपस्थिति की सुगन्ध सब ओर फैल रही थी।

उसकी चेतना भी इसके स्पर्श से अछूती न रही। भगवान् आए हैं, उसने भी सुना, जाना और अनुभव किया। और तब- मैं भी भगवान् के दर्शन करूँगा। ऐसा निश्चय उसके मन में उभरा। इस निश्चय ने उसे भारी खुशी दी। उसकी अन्तर्चेतना खुशी की तरंगों से तरंगित होती रही। सुबह-सुबह उठकर भगवान् के वास-स्थान की ओर जाने के लिए उसने पहला-पग बढ़ाया ही था। तभी उसे दिखाई दिया कि उसका एक बैल कहीं गायब है। अब क्या करे ? पहले से ही वह गरीबी के दंश का दर्द झेल रहा था। उसकी तरह गरीबी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की मार सहने वाला, शायद पूरे आलवी नगर में और कोई न था। बैल के भाग जाने से गरीबी का दर्द अनायास ही असह्य एवं सघन हो गया।

व्यथित-पीड़ित वह बैल को खोजने के लिए चल पड़ा। गली, खेत, वन की भटकन से उसके पांव दुःख आए। बैल को खोजते हुए बीच-बीच में वह सोचने लगता, क्या मेरे ही मन में कोई खोट है, जो प्रभु से नहीं मिल पा रहा हूँ। उसकी भटकन अब थकन बन गयी थी। अब उससे रहा न गया, वह व्यथित मन से पुकार उठा- अंगुलीमाल का उद्धार करने वाले हे तथागत! प्रभु, मुझे भी अपनी शरण में लो। उसकी पुकार इतनी गहरी और सघन थी, कि उससे सूक्ष्म स्पन्दित हो उठा। इसका सुखद परिणाम भी उसे कुछ ही पलों में दिखाई दिया। उसका बैल वन में एक ओर खड़ा घास चर रहा था। उसने भागकर उसकी रस्सी पकड़ी और घर की ओर लौट पड़ा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अब तक दोपहर हो आयी थी। उसने अभी तक कुछ खाया भी न था। पर भगवान् के दर्शन की खुशी ने उसकी भूख एवं थकान दोनों को ही हर लिया था। उसके हृदय में कृतज्ञता के अहोभाव थे। अन्तर्यामी प्रभु सब कुछ सुनते हैं, सभी कुछ जानते हैं। भक्ति के उद्रेक से उसकी गति तीव्र हो गयी। पल-क्षण पता नहीं चले, इनकी गणना भी कौन करे? वह तो बस भगवान् के समीप पहुँच गया। भीड़ से घिरे परम करूणावान भगवान् बुद्ध ने उसके पहुँचते ही उसे अपने पास बुला लिया। बड़ी ही प्रीतिपूर्ण नजरों से उसकी ओर देखा। फिर अपने एक शिष्य महाकाश्यप की ओर इशारा करके कहा- भन्ते! इनके लिए यहीं भोजन ले आओ।

भगवान् के इन वचनों से सभी को भारी अचरज हुआ। न कोई बात, न चीत, बस सीधे भोजन। वह भी भोजनालय में नहीं, ठीक अपने सामने। सबके सब कौतुहल एवं आश्चर्य में थे। लेकिन प्रभु-अनुगत महाकाश्यप ने शीघ्र ही आज्ञा पालन किया। उन्हें ज्ञात था कि भगवान् अकारण कुछ नहीं कहते, कुछ नहीं करते। भोजन की थाली से एक कौर तोड़कर प्रभु जब स्वयं उसको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खिलाने लगे तो भिक्षु संघ का आश्चर्य शतगुणित हो गया। उसकी आँखों में तो आँसू आ गए। आँसू की इन गोल बूंदों में भक्ति का भूगोल उभर एवं छलक रहा था। उसे यह भी नहीं समझ में आया, कि जिन प्रभु की सेवा उसे स्वयं करनी चाहिए, वह स्वयं उनकी सेवा कैसे स्वीकार करे?

असमंजस में उसने काफी न-नुकुर की। भगवान् उसके संकोच को जान गए। वह बोले संकोच त्याग दो वत्स कौशल्यायन। इसे मेरी आज्ञा मानो या अनुरोध प्रीतिपूर्वक भोजन करो। भगवान् ने हठपूर्वक उसे भोजन कराया। उसका समूचा अस्तित्त्व रोमांचित हो आया। जब से वह आया, तभी से चुप था। अभी भी वह कुछ न बोला। बस आनदपूर्वक प्रभु के हाथों से कौर खाए। भोजन के उपरान्त भगवान् ने कहा, अब तुम उस पास के पेड़ के नीचे बैठकर विश्राम करो। बुद्ध की इस बात को सुनकर वह चुपचाप उठा और जाकर पेड़ के नीचे बैठ गया। बैठते ही वह गहरी समाधि में खो गया। उसकी यह भावदशा भिक्षुओं से छुपी न रही। उन्हें परम आश्चर्य हो रहा था कि ध्यान का परम फल भोजन से किस तरह मिल गया? अन्ततः सबने भगवान् से जिज्ञासा की।

तब भगवान् ने यह गाथा कही-

जिघच्छा परमा रोगा संखारा परमा दुखा।

एतं ञत्वा यथाभूतं निब्बानं परमं सुखं॥

भिक्षुओं, भूख सबसे बड़ा रोग है, संस्कार सबसे बड़े दुःख हैं। ऐसा यथार्थ जो जानता है, वही जानता है कि निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।

भगवान् की इस गाथा को भिक्षु संघ बड़े ही मनोयोग से सुन रहा था। भगवान् बता रहे थे, कौशल्यायन की भूख गहरी थी। उसका शरीर ही नहीं, उसकी जीवन चेतना भूखी थी। उसे अपने संस्कारों के गहरे दुःख का बोध था। मुझ तक पहुँचने तक उसकी वेदना ही वेद बन गयी थी। और यही कारण है कि जब मैंने उसे अपने हाथों से भोजन कराया, तो उसे परम तृप्ति मिली। अकेली देह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं, समूचा अस्तित्त्व तृप्त हो गया। वेदना वेद में रूपान्तरित हो गयी। दुःख का घना अंधेरा ज्ञान के उजाले में बदल गया। और उसे पल में ही स्रोतापत्ति का फल मिल गया।

यह स्रोतापत्ति क्या है भगवन्? महाकाश्यप पहली बार बोले।

भदन्त स्रोतापत्ति का अर्थ है स्रोत में पड़ जाना। और स्रोतापत्ति के फल का मतलब है- स्रोत में पड़ जाना ही नहीं स्रोत में विलीन हो जाना। बुद्धत्व ही जीवन का परम स्रोत है। भन्ते कौशल्यायन की जीवन चेतना पहले तो तृप्ति की छुअन के साथ बुद्धत्त्व के परम स्रोत में पड़ी और अब तुम सब देखो वह गहरी समाधि में लीन है। यानि की वह बुद्ध के परम स्रोत में विलीन हो गए हैं। उन्होंने अब जान लिया है- 'निब्बानं परमं सुखं' अर्थात् निर्वाण परम सुख है।

भगवान् के इन वचनों के साथ ही सभी ने कौशल्यायन के मुख की ओर देखा। सचमुच ही उनके मुख पर निर्वाण का परमतेज छा गया था। चेहरे पर एक अनोखी अलौकिक आभा फैल रही थी। एक अनूठा संगीत उनके अस्तित्त्व में गूंज रहा था। जिसकी मधुर धुन उत्तरोत्तर गहरी होती जा रही थी। अब तो भिक्षु संघ के प्राण भी इससे झंकृत होने लगे। सभी जान गए कि कौशल्यायन के अस्तित्त्व में आज पात्रता और कृपा का मिलन हुआ है।

बुद्ध कह रहे थे- भिक्षुओं, पात्रता हो तभी कृपा असरकारक होती है। जो यह जान लेता है कि भूख सबसे बड़ा रोग है, संस्कार सबसे बड़े दुःख हैं, वही यह जानने में समर्थ होता है कि निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।

इस धम्मपद को सुनाकर भगवान् मौन में डूब गए। भिक्षु उनके वचनों को सुनकर गुनने लगे। उनमें से कई तो स्रोतापत्ति की ओर अन्तर्गमन भी करने लगे। भगवान् तथागत की कृपादृष्टि एवं कृपावृष्टि का अहसास अनुभव में बदलने लगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्य प्रकट होता है एकांत मौन में

अर्हत एकुदान जंगल में रहते थे। वृक्ष-वनस्पतियाँ, पर्वत-झरने यही उनके साथी थे। वन की देव शक्तियाँ वनदेवी-वन देवता उनके आत्मीय सखा थे। उनके जीवन का एक ही सत्य था- 'बुद्धं शरणं गच्छामि।' इसी का चिन्तन करते हुए वह ध्यानस्थ हो जाते। इसी सूत्र वाक्य का वह उपदेश करते। अपने इस जीवन मंत्र के अलावा अन्य कोई बात उनको आती ही नहीं थी। हालांकि इसे कहते हुए उनके जीवन का समाधि सुख छलक उठता था। वह एक अनोखे अहोभाव से भर उठते थे। इस एक वाक्य को बोलते हुए उनकी अन्तर्चेतना में अनेकों अलौकिक रंग निखर उठते थे। पर वह बोलते बस एक ही वाक्य थे-**बुद्धं शरणं गच्छामि**।

उधर जंगल से जो भी गुजरता उन्हें रोज एक ही उपेदश कहते हुए सुनता। एक ही वाक्य में रोज-रोज भला किसको रस आता। इसलिए कोई उनके पास टिकता न था। अपने वन कुटीर में भिक्षु एकुदान अकेले वक्ता थे, स्रोता भी वही अकेले होते। दूसरा कोई होता भी तो कैसे? किसी भी तरह कोई आ भी जाता तो भाग जाता। रोज वही उपदेश शब्दश: वही। उसमें कभी भेद ही नहीं पड़ता था। शायद उन्हें इसके अलावा और कुछ आता भी नहीं था।

लेकिन वह अपने इस एक जीवन सत्य को जब भी कहते पूरे जंगल में एक अनोखा समां छा जाता। वृक्ष-वनस्पतियाँ, पर्वत-निर्झर सभी एक अलौकिक चेतना से तरंगित हो उठते। वन देवी- वन देवता उन्हें साधुवाद देते। सारा जंगल गुंजायमान हो जाता था, साधु! साधु! धन्यवाद! धन्यवाद! एक अनोखी छटा-एक अलौकिक जीवन्तता सब ओर छा जाती।

एक दिन उसी जंगल में पाँच-पाँच सौ शिष्यों के साथ दो त्रिपटकधारी भिक्षु आए। उनके अगाध पाण्डित्य की सब ओर ख्याति थी। अर्हत एकुदान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके आगमन से बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उन सबका हार्दिक सत्कार किया और बोले, भंते, बहुत अच्छा हुआ जो आप पधारे। मैं तो निपट गंवार हूँ, मुझे कुछ ज्ञान नहीं है। बस एक बात मुझे समझ में आयी है, उसी का रोज उपदेश करता हूँ। और कोई तो सुनता नहीं, बस जंगल के देवता दयावश उसे सुनते हैं, और साधुवाद देते हैं। हालांकि वे भी उसे सुन-सुनकर थक गए होंगे। यह उनका मुझ बूढ़े पर अनुग्रह ही है कि वे मेरी एक ही बात को बार-बार सुनकर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं।

आप दोनों ही महाज्ञानी हैं। त्रिपटक आपको कण्ठस्थ हैं। आपके ज्ञान की महिमा से आकर्षित होकर ही आप के पाँच-पाँच सौ शिष्य हैं। मुझे कुछ आता ही नहीं है- इसीलिए मेरा एक भी शिष्य नहीं है। भला एक ही उपदेश देना हो तो कोई शिष्य बनेगा ही क्यों? वे त्रिपटकधारी दोनों महापण्डित अर्हत एकुदान की बातें सुनकर एक दूसरे की तरफ अर्थगर्भित दृष्टियों से देखते हुए मुस्कराए। उनकी आँखों में पाण्डित्य का अभिमान छलक रहा था।

उन दोनों ने ही सोचा, यह बेचारा बूढ़ा अकेले रहते-रहते एकदम पागल हो गया है। अकेलेपन के कारण इसे विक्षिप्तता ने घेर लिया है। अन्यथा कोई एक ही उपदेश रोज-रोज देता है? अपनी विक्षिप्तता के कारण ही यह कहता है कि इसका उपदेश जंगल के देवता सुनते हैं, और साधुवाद देते हैं। अरे, कहाँ के देवता। भला देवता भी कहीं किसी का उपदेश सुनने आते हैं। जब हम दोनों जैसे ज्ञानी पण्डितों का उपदेश सुनने के लिए वे आज तक नहीं आए। तब इन मूर्ख की वही एक तोता रटन्त सुनने के लिए भला वे क्या आएँगे। बेचारा, वृद्ध! अपने बुढ़ापे के कारण यह परेशान है। और इसी विक्षिप्तता एवं परेशानी के कारण इसका मन परेशानी से भर गया है। कोई बात नहीं, चलो आज बताएँगे इसको कि उपदेश क्या होता है? कुछ क्षणों में ही उन दोनों महापण्डितों ने इतनी सारी बातें सोच डाली। पर प्रत्यक्ष में उन्होंने एकुदान की आयु का ख्याल करते हुए बड़ी शालीनता से कहा- भन्ते! हम दोनों को ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आपका प्रस्ताव स्वीकार है। मेरे उपदेश से आपको भी यथार्थ का बोध पाने में मदद मिलेगी।

आप दोनों महाज्ञानियों की इस कृपा से कृतार्थ हुआ भन्ते। भिक्षु एकुदान का हृदय कृतज्ञता के भावों से ओत-प्रोत हो गया। उसने बड़े प्रेम और परिश्रम से उनके प्रवचन का इन्तजाम किया। महापण्डितों के बैठने के लिए धर्मासन की व्यवस्था की। आज वह स्वयं को कृतकृत्य मान रहा था कि उसे इतनी पाण्डित्यपूर्ण वाणी सुनने को मिलेगी।

हुआ भी वही। धर्मासन पर बैठकर उन दोनों ने बारी-बारी से उपेदश दिया। वे बड़े पण्डित थे, त्रिपटक के ज्ञाता थे। बुद्ध के सारे वचन उन्हें कण्ठस्थ थे। हमेशा ही वे अपने प्रशंकों और शिष्यों से घिरे रहते थे। पाँच सौ शिष्यों की मण्डली सदा ही उनकी सेवा के लिए तैयार और तत्पर रहती थी। उन पण्डितों ने एक-एक करके उपदेश दिया। उपदेश से पहले शिष्यों ने उनकी विद्वता एवं प्रभुता का परिचय दिया। यह बताया कि समाज में उनका कितना प्रभाव है। कितने लोग उनकी जय-जयकार करते हैं। कितने देशों का उन्होंने भ्रमण किया है। कितनी उपाधियाँ एवं प्रमाण पत्र उन्हें मिले हैं। राजन्यवर्ग उनका कितना सम्मान करता है।

इस परिचय के बाद शिष्यों ने साज और संगीत के साथ गीत गाया। कुल मिलाकर प्रवचन की प्रस्तुति को प्रभावी बनाने की कोई कसर नहीं छोड़ी गयी। प्रवचन हुआ, शास्त्र सम्मत, पाण्डित्य से भरपूर, तर्क से प्रतिष्ठित। शिष्यों ने हर्षध्वनि की- साधु! साधु! वृद्ध भिक्षु एकुदान भी परम आनन्दित हुए। उन्होंने भी सराहना की। बस एक बात उन्हें खटक रही थी कि आज वन की देवशक्तियों ने कुछ नहीं कहा। जंगल के देवता कुछ भी नहीं बोले। वन देवी-वन देवता चुप थे सो चुप ही रहे। उन्होंने यह बात पण्डितों को भी कही कि बात क्या है? आज जंगल के देवता चुप क्यों हैं? इनको क्या हो गया? आज ये कहाँ चले गए? ये रोज मेरा उपदेश सुनते हैं तो पूरा जंगल इनके साधुवाद से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भर जाता है। और आज ऐसा परम उपदेश हुआ, ऐसा ज्ञान से भरा। फिर भी ये सब मौन हैं, आखिर बात क्या है?

वे दोनों महापण्डितों ने वृद्ध एकुदान की इन बातों को फिर से उनकी विक्षिप्तता से उपजा पागलपन समझा। उन दोनों ने सोचा एक तो हमने महानगरों में लाखों की भीड़ की जगह यहाँ जंगल में प्रवचन देने की कृपा की। इसके ऊपर इतना बड़ा अहसान किया। पर ये है कि मेरा अनुग्रह मानने के स्थान पर कहता है कि जंगल के देवता नहीं बोले। पर प्रकट में उन दोनों ने यही कहा, भन्ते अच्छा यही है, आप अपना उपदेश करें। हम दोनों को भी सुनने का अवसर मिलेगा। साथ ही जंगल के देवताओं की वाणी भी हमें सुनने को मिल जाएगी। उन्होंने ये बात एक तरह से मजाक में ही कही। उन्होंने सोचा तो यही कि वैसे भी इस बूढ़े गंवार को कुछ आता-जाता नहीं। बस इसकी एक बात सुनकर छुट्टी मिल जाएगी।

साधे-सरल वृद्ध एकुदान ने उन पण्डितों के मजाक को उनका आग्रह समझा। और बड़े ही संकोच से धर्मासन पर चढ़े। फिर बड़ी विनम्रता से उपस्थित जनों को प्रणाम किया। सभी देवशक्तियों की अभ्यर्थना करके अपने आराध्य भगवान् बुद्ध को सिर नवाया। फिर हृदय की गहराइयों से- समूचे मन-प्राण से कहा- 'बुद्धं शरणं गच्छामि।' इसी के साथ वे गहरी भाव समाधि में डूब गए। उनके मुख मण्डल पर सम्बोधि की आभा छलकने लगी। उनके अस्तित्त्व का कण-कण रोमांचित हो उठा। उपस्थित जनों पर भी उनकी इस अनुभूति के अमृत कलश से कुछ बूँदें छलक पड़ी। समूचे जंगल से साधु! साधु! का अपूर्व निनाद गूँज उठा। जैसे वृक्ष-वृक्ष से आवाज उठी। पत्थर-पत्थर से आवाज उठी- जंगल के सारे देवता मुखरित हो उठे। सारा धर्मासन उनके द्वारा की गयी अलौकिक पुष्पवृष्टि से भर उठा।

अब तो दोनों महापण्डित बड़े हैरान हुए। वे सोचने लगे, तो यह बूढ़ा पागल नहीं है। देवता सचमुच में ही हैं। पर क्या देवता पागल हैं? क्योंकि ऐसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा क्या इसने, बस एक साधारण सा वाक्य- बुद्ध शरणं गच्छामि। क्या धरा है इसमें? कोई कह सकता है- कभी कह सकता है- कहीं कह सकता है। पण्डितों ने अपने दम्भ में यह भी सोच डाला कि ये देवता जंगल के हैं, जंगली होंगे, नासमझ होंगे। जरूर इन्हें मेरा प्रवचन समझ में नहीं आया होगा। ऐसी ही अनेकों तरह की कल्पना-जल्पना करते वे चले गए।

उन दिनों बुद्ध संघ में यह घटना बड़ी प्रचारित हुई। पर कोई भी इसका ठीक भेद न जान पाया। भगवान के शिष्य महाकाश्यप ने भगवान से यह कथा कही- और इसके भेद को स्पष्ट करने की प्रार्थना की। बुद्ध मुस्कराए- उन्होंने कहा, वत्स महाकाश्यप! एकुदान 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का मर्म जान चुके हैं। वह क्षीणास्रव हो चुके हैं। महाकाश्यप ने विनम्रता से पूछा- भगवान् क्षीणास्रव होना क्या है? बुद्ध बोले- चार आस्रव होते हैं। पहला है- कामास्रव। इसके क्षीण होने का मतलब है अब कुछ पाने की कामना नहीं रही। सारी चाहतें मिट गयीं। अब नाम, धन, यश, पद या कुछ और पाने की धुन नहीं है। दूसरा आस्रव है- भवास्रव, यानि कि स्वर्ग, मोक्ष या फिर अगले अच्छे जीवन की कामना। इसके क्षीण होने का मतलब है- जीवेषणा गिर गयी। लौकिक ही नहीं अलौकिक चाहतें भी मिट गयीं।

इसे समझाते हुए भगवान तथागत ने कहा- भन्ते, तीसरा आस्रव है- दृष्टास्रव। यानि दृष्टि, शास्त्र एवं सिद्धान्त से आसक्ति। इसके क्षीण होने का अर्थ है, जाति, धर्म, कुल, देश, शास्त्र या सिद्धान्त से मोह टूट जाना। संकुचित दृष्टि का व्यापक हो जाना। और चौथा आस्रव है- अविद्यास्राव- मैं हूँ। इसकी क्षीणता का अर्थ है- मैं पन का गिर जाना। सारी सीमाओं का समाप्त हो जाना, असीम हो जाना।

महाकाश्यप सुन रहे थे, भगवान के वचनों को। भगवान ने आगे हृदयस्पर्शी स्वरों में कहा- भिक्षु एकुदान के ये चारों ही आस्रव क्षीण हो चुके हैं। वे अब क्षीणास्रव हैं। यह कहते-कहते अन्तर्यामी भगवान ने महाकाश्यप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अगली जिज्ञासा जान ली। वह हल्के से हंसे फिर बोले- बुद्धं शरणं गच्छामि। भिक्षु एकुदान के लिए यह वाक्य नहीं अनुभूति है। उन्होंने सचमुच ही बुद्ध की बुद्धत्व की शरण पा ली है। वह बुद्धत्व की धारा में निमग्न हो चुके हैं। उनके लिए यह वाक्य शास्त्र वचन नहीं, समाधि सत्य है। इसके उच्चारण के साथ ही वह बुद्धत्व से एकात्म होते हैं। उनकी अनुभूति के पलों को निहार कर देवता धन्य होते हैं। उन्हें साधुवाद देते हैं।

अपनी बात को समझाते हुए भगवान ने यह धम्म गाथा कही-

न तेन पंडितो होति होति यावता बहु भासति।
खेमी अवेरी अभयो पंडितोति यवुच्चति॥

हे भिक्षुओं! बहुत भाषण करने से कोई पंडित नहीं होता। बल्कि जो क्षेमवान, अवैरी और निर्भय होता है, वही पंडित है।

महाकाश्यप सहित सभी भिक्षु शान्त थे। भगवान कह रहे थे- 'सत्य शास्त्र में नहीं है। सत्य शब्द में भी नहीं है, सत्य तथाकथित बौद्धिक ज्ञान में भी नहीं है, सत्य है अनुभव। और अनुभव शून्य में प्रकट होता है, मौन और आन्तरिक एकान्त में प्रकट होता है। वैसे जीवन्त अनुभव की अभिव्यक्ति पर सारा अस्तित्त्व आच्छादित होता है। ऐसे में देवताओं का प्रसन्न होकर साधुवाद देना स्वाभाविक है।' ऐसा कहकर भगवान मौन में डूब गए। महाकाश्यप सहित अन्य भिक्षु भगवान के द्वारा कहे गए वचनों का मनन करने की चेष्टा करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बोधि के दिव्यास्त्र से विकारों का हनन

जेतवन के आम्रकुञ्ज में भगवान तथागत ध्यानस्थ थे। ध्यानस्थ अवस्था में भगवान का मंजुल सौन्दर्य और भी मुखर हो उठा था। सुहानी प्रभात बेला इसमें और भी अभिवृद्धि करने के लिए भगवान के समीप आ जुटी थी। महादानी भुवन भास्कर अपनी सहस्त्र किरणों से भगवान के ऊपर सुवर्ण लुटाते हुए आकाश के आंगन में बढ़ आए थे। समूची प्रकृति ध्यानलीन महाबुद्ध की महिमा का गान कर रही थी। आम्रवन में पक्षियों के कलरव की मधुर गूंज प्रकृति के स्वरों को संगीत में सजाने के प्रयास में लीन थी। सब ओर महाबुद्ध के मंगलमय रूप की प्रभा बिखरी थी। अकेला आम्रकुञ्ज ही नहीं समूचे जेतवन के पूरे परिक्षेत्र में ध्यानस्थ भगवान का दिव्य आलोक छाया हुआ था।

भगवान से कुछ दूर बैठे हुए भिक्षुगण शास्ता के ध्यानोन्मीलन की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें प्रतीक्षा थी कि कब प्रभु नेत्र खोलें और कब वे सब उन्हें प्रणाम निवेदित करें। महाकाश्यप, मौद्‌गलायन, रेवत आदि सिद्ध साधकों के साथ नव भिक्षुदल के सभी सदस्य भगवान की वाणी को सुनने की त्वरा में थे। इस सबके साथ आज एक नए सदस्य लवकुंठक भद्दीय स्थविर की भी उपस्थिति थी। आयु में अल्पवयस होने के बावजूद लवकुंठक की साधना अत्यन्त गहन थी। मितभाषी, सेवाभावी, ध्यान परायण लवकुंठक सभी की प्रीति का केन्द्र था। महाकाश्यप एवं रेवत आदि सिद्धजन उस पर अपना हृदय उड़ेलते थे। भिक्षुसंघ के नए सदस्य उस पर अपनापन लुटाते थे।

लवकुंठक पिछले कुछ दिनों से प्रव्रज्या के लिए गया हुआ था। अभी कल ही रात्रि को वापस लौटा था। इन बीच के कुछ दिनों में वह कहाँ रहा, उसने क्या किया, किसी को भी पता नहीं था। हाँ, वापस लौटने के बाद से वह कुछ अधिक शान्त हो गया था। साथी भिक्षुओं ने आने पर रात्रि में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ा-बहुत कुरेदने की कोशिश की, परन्तु बाद में उसे थका हुआ जानकर छोड़ दिया। लवकुंठक भी अपनी स्थिति पर मौन ही रहा। किसी की भी जिज्ञासा के उत्तर में उसने कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं समझी। हालांकि साथियों को उसका यह मौन बड़ा ही रहस्यमय लगा। पर किसी ने ज्यादा कुछ नहीं कहा। सभी को प्रातः की प्रतीक्षा थी। हर कोई सोच रहा था कि प्रणाम के समय शास्ता अवश्य ही रहस्योन्मीलन करेंगे।

सभी भिक्षुओं के इन फंसते-उलझते, बनते-बुनते विचार तन्तुओं के पार और परे भगवान आसीन थे। उन्होंने धीरे-धीरे अपने नेत्र उन्मीलित किए। उनके उन्मीलित नेत्रों से करूणा और कृपा की धार सब पर बरस पड़ी। सभी अपने शास्ता को प्रणाम करने लगे। महाकाश्यप, रेवत, मौदग्लायन प्रणाम करके प्रभु के पास ही बैठ गए। अन्य भिक्षुओं के साथ लवकुंठक ने भी प्रणाम किया। लवकुंठक के प्रणाम करते ही भगवान बोले- भिक्षुओं, देखते हो इस भाग्यशाली भिक्षु को? यह माता-पिता को मारकर दुःख रहित होकर आ रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भगवान की वाणी सुनकर महाकाश्यप मुस्कराए। जबकि अन्य भिक्षु चौंके। उन्हें एक बारगी तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। वे चौंक कर एक-दूसरे का मुख देखने लगे कि भगवान ने यह क्या कहा? 'माता-पिता को मारकर दुःख रहित होकर आ रहा है, इस भाग्यशाली भिक्षु को देखो।' उन्हें तो अपने कानों पर भरोसा ही नहीं हुआ। वे सोचने लगे, माता-पिता की हत्या से बड़ा तो कोई और पाप नहीं है। भगवान यह क्या कहते हैं? कहीं कुछ चूक है। या तो हम सुनने में चूक गए या फिर भगवान कहने में चूक गए हैं। माता-पिता के हत्यारे को भाग्यशाली कहना, भला यह बात हुई?

महाकाश्यप, रेवत, मौद्ग्लायन को छोड़कर अन्य सभी के सन्देह और विभ्रम गाढ़े हो गए। ये तीनों सिद्धजन शास्ता की बातें सुनकर मुस्करा रहे थे। स्वयं लवकुंठक मौन था। उसके लिए तो भगवान का हर शब्द उनका कृपाशीष था। अन्य भिक्षुओं से तो रहा ही नहीं गया। उन्होंने तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान से पूछ ही लिया- आप यह क्या कह रहे हैं प्रभु? ऐसी बात न तो आँखों देखी और न ही कानों सुनी।

भगवान तब विंहसे और कहने लगे- अरे बात इतनी ही नहीं है। इस अपूर्व भिक्षु ने और भी हत्याएँ की हैं। और बड़ी सफलता से की है, बड़ी कुशलता से की है। मैं तो कहता हूँ हत्या करने में इसका कोई सानी नहीं है। भिक्षुओं तुम भी इससे कुछ सीख लो। तुम भी इस जैसे बनो तो तुम भी दुख:सागर के पार हो जाओगे। भिक्षुओं ने कहा- आप क्या कहते हैं, भगवान? लेकिन तथागत तो जैसे आज रहस्य को और भी गहरा, घना और गाढ़ा करने में तुले थे। उन्होंने सभी को चकित करते हुए ये गाथाएँ कही-

मातरं पितरं हंत्वा राजानो द्वे च खत्तिये।
रट्ठं सानुचरं हंत्वा अनीघो याति ब्राह्मणो॥
मातरं पितरं हंत्वा राजानो द्वे च सोत्थिये।
वेय्यग्घपञ्चमं हंत्वा अनीघो याति ब्राह्मणो॥

भगवान द्वारा कही गयी इन धम्म गाथाओं ने सभी को और उलझा दिया। सारे भिक्षुओं की बुद्धि चकित और स्तब्ध थी। सब के सब हैरत से हैरान थे। भिक्षुओं को इस तरह उलझन में फंसे देखकर महाबुद्ध की करूणा उमड़ आयी। उन्होंने महाकाश्यप से इन धम्म गाथाओं के गूढ़ अर्थ को प्रकट करने का संकेत किया। शास्ता का संकेत पाकर सबसे पहले महाकाश्यप ने उनके चरणों में सिर नवाया। फिर उपस्थित सभी जनों को बुद्धवाणी के मर्म को प्रकट करने लगे।

उन्होंने कहा- भिक्षुओं! माता-तृष्णा है, पिता अहंकार है। इन्हीं के कारण जीव बार-बार जन्म-मरण के चक्र में फँसता है। इन्हें मारने वाले का जन्म-मरण के दु:ख से छूटना निश्चित है। सभी भिक्षु इस गुह्य अर्थ को सुनकर अवाक् थे। महाकाश्यप निर्विघ्न भाव से अपने शास्ता की वाणी को अर्थ दे रहे थे- दो क्षत्रिय राजा आस्तिकता और नास्तिकता के मत वाद हैं। सारे शास्त्रीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिद्धान्त इनके अनुचर हैं। ये किसी न किसी तरह से जीव को अपने शासन में रखते हैं। जो इन्हें मारता है, वह स्वतंत्र होता है। आसक्तियों सहित अपने भीतर का संसार ही राष्ट्र है, जो इसे मारता है वह सभी सीमा बन्धनों से छुटकारा पाता है।

उपस्थित भिक्षु जन अभी कुछ और कह पाते कि उन्हें सम्बोधित करते हुए महाकाश्यप ने कहा- भिक्षुओं! व्याघ्र पंचम, अपनी ही पांच इन्द्रियाँ हैं। इन पंच इन्द्रियों की वासनाओं को, इनकी तन्मात्राओं की आसक्ति को जो मारता है, वह व्याघ्रपंचम को मारने वाला है। जिसने इन सभी को एक साथ मारने की सफलता प्राप्त की, समझो उसकी महामृत्यु हो गयी। उसने अपनी भी हत्या कर ली। उसे निर्वाण प्राप्त हो गया। भन्ते लवकुंठक भद्दीय स्थविर को यही महामृत्यु प्राप्त हुई है। पहले उन्होंने अपनी ध्यान साधना से उपजे बोधि के दिव्यास्त्र से एक-एक करके सबको मारा। और अन्त में उन्होंने स्वयं को भी मारने में सफलता प्राप्त की। अब वह निर्वाण को उपलब्ध हो चुके हैं।

भिक्षुसंघ शास्ता के रहस्यमय वचनों की इस अपूर्व व्याख्या को सुनकर सम्बोधि चेतना की छुअन को अनुभव करने लगा था। महाकाश्यप सभी के लिए सदा से श्रद्धास्पद थे। सब को यह विश्वास था कि भगवान की अन्तर्चेतना में महाकाश्यप की अन्तर्चेतना समर्पित, विसर्जित एवं विलीन हो चुकी है। महाकाश्यप अद्भुत एवं अपूर्व शिष्य हैं। शास्ता तो परम गुरु हैं ही। आज सभी को शिष्य एवं गुरु के इस अनोखे अन्तर्मिलन का प्रमाण मिल गया। सबके सब महाबुद्ध के वचनों पर ध्यानस्थ होने का प्रयास कर रहे थे। भगवान की धम्मगाथाएँ सब के लिए राह प्रकाशित कर रही थी। यह वही राह थी जिस पर अभी-अभी लवकुंठक भद्दीय स्थविर चल कर आए थे। महाकाश्यप जिस पर काफी पहले चल चुके थे। धम्म सन्देश देने वाला आज का प्रभात सभी के लिए मंगल पर्व बन गया। सभी के मन-प्राण, अन्तर्भावनाओं में इन धम्म गाथाओं के निदिध्यासन का सूर्य प्रकाशित होने लगा। जीवन में हर्ष की हिलोरें उठने लगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रभु प्रेम की कसौटी, उनका ध्यान

सूर्यदेव ने अपना रथ पश्चिम दिशा की ओर मोड़ लिया था। आकाश में उभरती हुई लालिमा एक छोर पर सिमटने लगी थी। प्रकृति में सूर्यदेव के थोड़े समय बाद अस्ताचल में जाकर विश्राम करने के संकेत स्पष्ट होने लगे थे। चारों ओर पक्षियों में यही चर्चा थी। वे अपनी भाषा में यही चर्चा करते हुए अपने बसेरों की ओर लौट रहे थे। इन पखेरुओं जैसा ही कुछ हाल बुद्ध संघ के भिक्षुओं का था। वे भी अपने शास्ता के परिनिर्वाण की चर्चा करने में लगे थे। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था कि ऐसे में क्या करें? बस चिन्ता, वेदना और विषाद की लहरें उसके मन को अनवरत भिगो रही थीं।

यह स्थिति तब से थी, जब एक दिन वैशाली में विहार करते हुए भगवान ने भिक्षुओं से कहा- 'भिक्षुओं, सावधान! मैं आज से चार माह बाद परिनिवृत्त हो जाऊँगा। मेरी घड़ी करीब आ रही है। मेरी विदा का क्षण निकट आ रहा है। इसलिए जो करने योग्य हो, करो। अब देर करने के लिए समय नहीं है।' तथागत के ये वचन गर्म लू के झोंकों की भांति संघ के समस्त भिक्षुओं के अन्तःकरण को झकझोरने लगे। जिसने जहाँ भी यह खबर सुनी, वही विह्वल हो गया।

सभी भिक्षुओं में बड़ा भय उत्पन्न हो गया। सारा भिक्षु संघ महाविषाद में डूब गया। कुछ ऐसा लगा, जैसे अचानक अमावस हो गयी। भिक्षु रोने लगे, छाती पीटने लगे। विषाद में डूबे इधर-उधर बिलखने लगे। भिक्षुओं के झुण्ड-झुण्ड यहाँ-वहाँ इकट्ठे होकर रोते हुए सोचते, अब क्या होगा! अब क्या करेंगे! कई तरह की चिंताएँ उनको सता रही थी। कइयों को चिन्ता थी कि शास्ता के बाद संघ की व्यवस्था कैसे चलेगी? कई ऐसे थे जो सोच रहे थे कि परिनिर्वाण के बाद भगवान का उत्तराधिकार किसे मिलेगा?

कुछ ऐसे भी थे, जिनकी चिन्ताएँ थोड़े अलग किस्म की थीं। वे भगवान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की देह के श्रद्धा-पूजा के मोह में थे। महाबुद्ध की महिमामय देह थोड़े दिनों बाद नहीं रहेगी, यह सोचकर वे विकल हो उठे। अपनी इस विकलता में वे भगवान की देह से जुड़ी चीजें जैसे- पुराने चीवर, कमण्डल आदि अपने लिए समेटने लगे। इस समेटा-बटोरी में उनमें आपस में थोड़ा सा मनमुटाव की नौबत भी आ गयी। इस चिन्ताकुल भिक्षुओं में कइयों ने अपने भविष्य की चिन्ता खाए जा रही थी। भिक्षु संघ में कई तरह की चिन्ताएँ अंकुरित हो रही थी। इनके रूप और प्रकार भले ही सब के लिए अलग-अलग हों पर प्रायः सभी को काई न कोई चिन्ता पाश जकड़े था।

लेकिन, भिक्षु तिष्य स्थविर की स्थिति इन सभी से काफी कुछ अलग थी। भगवान के भावी परिनिर्वाण की खबर सुनने के बाद वे न तो रोए, न ही उन्होंने किसी से कुछ कहा। शास्ता की पुरानी-नयी चीजों को भी बटोरने की उन्होंने कोई चेष्टा नहीं की। वे बस मौन हो गए। उन्हें इस तरह अचानक चुप हुआ देख दूसरे भिक्षुओं ने उनसे पूछने की कोशिश की, आपुस, आपको क्या हो गया है ? क्या भगवान के जाने की बात से आपको इतना सदमा पहुँचा है ? क्या आपकी वाणी खो गयी है ? आप रोते क्यों नहीं ? आप बोलते क्यों नहीं ? तिष्य स्थविर को इस तरह चुप हुआ देख भिक्षुओं को डर भी लगा कि कहीं यह पागल तो नहीं हो गए ?

भिक्षुओं का ऐसा सोचना बहुत गलत भी नहीं था। आघात ही ऐसा था कि कोई संवेदनशील हृदय सहन न कर पाए। ऐसे में पागल होना भी सम्भव था। जिनके चरणों में सारा जीवन समर्पित किया हो, उनके जाने की घड़ी आ गयी। जिनके सहारे अब तक जीवन की सारी आशाएँ बांधी थी, उनके विदा होने का क्षण आ गया। यह कठिनतम स्थिति थी। ऐसी स्थिति में भिक्षुओं की शंकाएँ स्वाभाविक थी। लेकिन, तिष्य जो चुप हुए, सो चुप ही हो गए। वे भिक्षुओं की किसी भी शंका का कोई जवाब नहीं दे रहे थे। उनके जीवन में एकदम सन्नाटा हो गया था। वह एकदम मौन-शान्त और एकान्त थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान के परिनिर्वाण की चिन्ता से चिन्तित भिक्षु थोड़ा और भी हैरान-परेशान हुए। अपने सद्व्यवहार के कारण तिष्य स्थविर सभी का प्रिय था। वह सहजरूप से सेवा परायण, मिलनसार, हंसमुख एवं मृदुभाषी था। उसकी अचानक चुप्पी सभी को खल रही थी। लेकिन कोई भी इस चुप्पी का समुचित कारण खोजने में असमर्थ था। पहले ही से चिन्तित भिक्षु इस एक नयी चिन्ता के दंश से विकल हो उठे। स्वयं इसके समाधान में असफल रहने पर उन्होंने भगवान के श्री चरणों में इस समस्या को निवेदित करने की बात सोची।

अन्ततः यह बात भगवान के पास पहुँच ही गयी कि भिक्षु तिष्य स्थविर को अचानक कुछ हो गया है। इन दिनों उन्होंने अपने आपको बिलकुल बन्द कर लिया है। जैसे कछुआ समेट लेता है अपने को और अपने भीतर हो जाता है, कुछ ऐसे ही उन्होंने अपने आप को अपने भीतर समेट लिया है। तिष्य स्थविर की सारी स्थिति का बयान करते हुए भिक्षुओं ने उन्हें अपनी शंकाएँ भी जता डालीं- यह कहीं, किसी तरह के पागलपन का लक्षण तो नहीं है? कहीं आपके निकट भविष्य में परिनिवृत्त होने की बात का आघात इतना तो गहन नहीं पड़ा कि उनकी स्मृति खो गयी है, वाणी विलीन हो गयी है।

भिक्षुओं की इन सारी बातों को सुनकर भगवान एक पल को आत्मनिमग्न हुए। पर अगले ही पल वह मुस्करा दिए। उन्होंने तिष्य स्थविर को अपने पास बुलाया। भिक्षु तिष्य स्थविर ने भगवान के समीप आकर उनके चरणों में माथा नवाया और मौन भाव से एक ओर बैठ गए। भगवान ने विंहस कर उनसे पूछा- वत्स! ये भिक्षु तुम्हारी स्थिति में बारे में जानना चाहते हैं। इनके सन्तोष के लिए तुम इन्हें अपनी भावदशा कहो। जैसी आज्ञा प्रभु! तिष्य बोले और उन्होंने कहना शुरू किया- आप चार माह बाद परिनिवृत्त होंगे, मैंने जब ऐसा सुना तो मैंने सोचा कि मैं तो अभी अवीतराग हूँ। आपके रहते हुए ही अर्हत्व पा लेना चाहिए। यही सोचकर मैं ध्यान में ही अपनी समस्त शक्ति उड़ेलने लगा हूँ।

यह कहते हुए तिष्य संयमित वाणी से बोले- आपने भिक्षुओं को यही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदेश दिया था, जो करने योग्य है, करो। देर मत करो। भगवन्! मैं आपके आदेश को यथासाध्य पालन करने की कोशिश कर रहा हूँ। अब आपसे आशीर्वाद मांगता हूँ कि मेरा संकल्प पूरा हो। आपके जाने से पहले तिष्य स्थविर विदा हो जाना चाहिए। आँसू भरी आँखों से तिष्य बोले- भगवन्! मैं अपने लिए मौत की मांग नहीं कर रहा हूँ। यह तिष्य स्थविर नाम का जो अहंकार है, यह विदा हो जाना चाहिए। मैं अपना प्राण पण लगा रहा हूँ, आपका आशीर्वाद चाहिए।

तिष्य के इस कथन में शास्ता के प्रति प्रगाढ़ भक्ति थी। उन्हें भगवान की कृपा शक्ति पर विश्वास था। वह अपना हृदय भगवान के श्री चरणों में उड़ेलते हुए कह रहे थे- अब न बोलूँगा, न हिलूँगा, न डोलूँगा। क्योंकि सारी शक्ति इसी पर लगा देनी है। आपके वचन मुझे सदा स्मरण रहते हैं। आपने कहा था- भिक्षुओं सावधान हो जाओ और जो करने योग्य है करो। तो मुझे यही करने योग्य लगा कि ये चार महीने जीवन की क्रान्ति के लिए लगा दूँ, पूरा लगा दूँ। इस पार या उस पार। मैं आपके आदेश पालन में तनिक सी भी कमीं नहीं छोड़ना चाहता।

तिष्य के उद्गार सुनकर भगवान ने यह गाथा कही-

पविवेकं रसं पीत्वा रसं उपसमस्स च।
निद्दरो होति निष्पापो धम्मपीति रसं पिवं॥

एकान्त का रस पीकर, शान्ति का रस पीकर मनुष्य निडर होता है। और धर्म का प्रेमरस पीकर निष्पाप होता है।

धम्मगाथा के भाव को प्रकाशित करते हुए भगवान बोले-एकान्त का अर्थ है, अपने भीतर डुबकी लो। कहीं दूर भागने का अर्थ एकान्त नहीं है। एकान्त का मतलब इतना ही है कि अब तक तुमने सम्बन्धों में बहुत ज्यादा ऊर्जा खपायी। उसे सम्बन्धों से मुक्त करो, आत्मलीन बनो। ऐसे एकान्त में ही शान्ति का रस घुला है। शून्यता की इस शान्ति रस को पीकर मनुष्य निडर होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। फिर जीवन में कोई पीड़ा नहीं, कोई दुःख नहीं। जिसने इस भावदशा का स्वाद चखा, वहीं धर्म का प्रेमरस पीकर निष्पाप होता है। उसे ही धर्म का बोध होता है। वही निर्वाण की निष्पाप भावदशा को प्राप्त होता है।

अपने द्वारा कही गयी धम्म गाथा के अर्थ को प्रकट कर भगवान कहने लगे- भिक्षओं, तिष्य इस धम्म गाथा को अपने जीवन में सार्थक कर रहा है। जो मुझ पर स्नेह करता है, उसे तिष्य के समान होना चाहिए। यही तो वह सत्य है, जो मैंने कहा था कि करो। रोने-धोने से क्या होगा ? रो-धोकर तो जिंदगियाँ बिता दी तुमने। चर्चा करने से क्या होगा ? झुण्ड के झुण्ड बनाकर विचार करने से और विषाद करने से क्या होगा। तुम मुझे तो न रोक पाओगे। मेरा जाना निश्चित है। रो-रोकर तुम यह क्षण भी गंवा दोगे। आँसू किसी भी काम नहीं आएँगे।

तिष्य स्थविर ने ठीक ही किया है। इसने मेरे प्रति अपने प्रेम को ध्यान बना लिया है। यह मेरी वास्तविक पूजा कर रहा है। अपनी वाणी के वेग कुछ पलों के लिए मन्द कर भगवान ने तिष्य की ओर कृपा पूर्ण दृष्टि से निहारा और पूर्ववत कहना शुरू किया- गन्धमाला आदि से पूजा करने वाले मेरी पूजा नहीं करते। वह वास्तविक पूजा नहीं है। जो ध्यान के फूल मेरे चरणों में रोज चढ़ाता है, वही मेरी पूजा करता है। ध्यान ही मेरे प्रति प्रेम की कसौटी है। रोओ मत ध्याओ। मेरी पुरानी जीर्ण वस्तुओं के मोह में मत बंधो, ध्याओ।

इसी के साथ भगवान ने फिर से एक धम्मगाथा कही-

धीरञ्च पञ्चञ्च बहुस्सुतं च धोरय्हसीलं वतंवतमरियं।
त तादिसं सप्पुरिसं सुमेधं भजेथ न क्खत्तपथं च चंदिमा॥

इस तिष्य को देखो, यह धीर है, प्राज्ञ है, बहुश्रुत है, शीलवान है, व्रतसम्पन्न है, आर्य है, बुद्धिमान है, इसका अनुगमन करो। रोओ-धोओ मत। इसके पीछे जाओ। इससे सीखो। जो इसे हुआ है, वही तुम अपने में होने दो।

महाबुद्ध के इन वचनों को सुनकर भिक्षुओं की क्षुब्ध अर्न्चेतना शान्त होने लगी। उनकी चिन्ता में से चिन्तन के स्वर फूटने लगे। सभी ने देखा तिष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थविर ने शान्त भाव वे उठकर भगवान को प्रणाम किया। उसे आशीष देते हुए तथागत की वाणी मुखरित हुई–

कोलाहल से काल की निद्रा नहीं टूटती
न धक्के मारने से समय का द्वार खुलता है।
ध्यान के व्यूह में जाओ
नीरवता और शान्ति को सिद्ध करो
ध्यान की गहनता और एकान्त
शक्ति के असली स्त्रोत है
भीड़ के कोलाहल से बचो
लक्ष्य को ध्यान के शर से विद्ध करो!

इस बुद्ध की वाणी में सभी के लिए प्रबोध था। सभी इस पर निदिध्यासन करते हुए अपने कुटीरों की ओर चल पड़े।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वच्छता-निर्मलता का मर्म

'स्वच्छता मनुष्य जीवन का सार है।' इसलिए हे भिक्षुओं! स्वच्छ रहो, साफ-सुथरे रहो। वर्षों पहले भगवान् तथागत ने जेतवन में भिक्षु संघ को यह उपदेश दिया था। अनेकों भिक्षुओं ने उनके इन वचनों को एक साथ सुना। लेकिन एक साथ सुनने पर भी उन सबके समझने के तरीके अलग-अलग थे। किसे ने समझा कि भगवान ने कहीं गन्दगी देखी होगी, किसी भिक्षु के चीवर को मैला-कुचैला देखा होगा, इसलिए उन्होंने स्वच्छता की बात समझाई है। किसी ने सोचा कि भगवान् अपने प्रवचन में नियमित रूप से कुछ अच्छी बातें बताते हैं, यह सूत्र भी उनके इसी उपक्रम का एक हिस्सा है। भिक्षुओं में कई ऐसे भी थे, जिन्होंने तथागत की बातों को सुनकर सोचने की आवश्यकता ही नहीं समझी। वे पहले की भांति अपने नियमित कार्यों में लगे रहे।

परन्तु दो भिक्षु ऐसे थे, जिनका समूचा जीवन अपने शास्ता की बातों को सुनकर आमूल-चूल बदल गया। हालांकि इनमें से एक का बदलाव सभी को साफ-साफ नजर आया। दूसरे के बदलाव से सभी अनजान रहे। उनकी ओर किसी ने थोड़ा सा भी ध्यान देने की कोशिश नहीं की। बल्कि वह पहले से भी ज्यादा अपने साथी भिक्षुओं के लिए अनजान होते गए। धीरे-धीरे भिक्षु संघ के सदस्य उनका नाम भी भूलने लगे। इसके ठीक विपरीत पहले भिक्षु का नाम सभी की जिह्वा पर आ गया। सब ओर उनके नाम की चर्चा होने लगी। भिक्षु समंजनी सबकी चर्चा का विषय बन गए।

स्वच्छता उनकी सनक बन गयी। सफाई का उन्हें पागलपन चढ़ गया। साफ-सुथरे रहने की उन्हें धुन पकड़ गयी। चौबीसों घण्टे वह बस झाड़ू लिए घूमते रहते। इधर जाला दिखाई पड़ गया, उधर कचड़ा दिखाई पड़ गया, बस सफाई ही सफाई। जैसे-तैसे जिस किसी तरह यदि झाड़ू उनके हाथों से छूटी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी तो कपड़े धोने या नहाने के लिए बैठ जाते। दूसरे अन्य भिक्षु उनकी इस आदत पर हँसते–उनका मजाक बनाते, पर समंजनी पर उनमें से किसी बात का कोई असर नहीं था। वह हर हमेशा बस अपनी धुन में जुटे रहते।

संघ के अन्य भिक्षुओं ने उनका नाम भदन्त झाड़ू स्थविर रख दिया। उनको लेकर सभी ने अनेकों कटूक्तियाँ, व्यंग एवं उपहासपूर्ण शब्दावली रच डालीं। पर समंजनी इस सभी से बेअसर रहे। उन पर अपनी व्यंगोक्तियों का किसी भी तरह से कोई भी असर पड़ते न देखकर भिक्षुओं ने एक नया तरीका खोज निकाला। अब से उनसे अपने कक्षों एवं वस्त्रों की सफाई कराने लगे। सारे दिन वे सब उन्हें व्यंगपूर्ण ढंग से पुकारते हुए कहते, अरे भदन्त झाड़ू स्थविर! तनिक मेरे कक्ष की सफाई कर देना, अथवा फिर मेरे चीवर धुल देना। समंजनी बड़े ही निर्विकार भाव से अपने साथियों के सारे काम कर देते। किसी के भी कटु व्यवहार पर उन्हें कोई भी क्षोभ अथवा रोष न था।

अपनी इस दिनचर्या के साथ जीते हुए उन्हें दस वर्ष बीत गए। हाथों में झाड़ू और मन में सफाई की धुन बस यही उनके जीवन का पर्याय बन गयी। सबकी नजरों से उपेक्षित और ओझल हो चले भिक्षु रेवत भी पिछले दस वर्षों से अपनी धुन में लगे थे। सफाई उनका भी ध्येय था, पर बाहरी नहीं आन्तरिक। जब से भगवान् बुद्ध ने स्वच्छता को मनुष्य जीवन का सार बताया था, वह भी जुट गए थे। उनके जीवन का हर पल मन–अन्तःकरण को निर्मल–निर्विकार बनाने के लिए समर्पित हो गया था। इन दस सालों में उनकी इन्द्रियाँ ही नहीं चित्तवृत्तियाँ भी निर्मल हो गयी थीं। वह भगवान् के वचनों की सार्थकता से अवगत हो चले थे। स्वच्छता की शुभ्र ज्योति उनके मुख पर प्रकाशित हो चली थी। एक अवर्णनीय आभा से उनका आनन दीप्त हो चला था।

एक दिन भिक्षु रेवत जब ध्यान से उठकर भगवान् को प्रणाम करने जा रहे थे, तब उन्होंने समंजनी को हाथों में झाड़ू लिए सफाई करते हुए देखा। साथ ही वे कटुक्तियाँ एवं व्यंगोक्तियाँ भी सुनी जो भिक्षुगण उनके लिए कह रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थे। रेवत के मन में समंजनी के प्रति अपार करूणा का उद्रेक हो आया। वह सोचने लगे कि समंजनी की प्रज्ञा भले ही अभी प्रकाशित न हुई हो, पर उसकी निष्ठा अविचल है। तभी तो वह बिना किसी के व्यंग एवं कटुक्ति की परवाह किए शास्ता के वचनों का अक्षरशः पालन किए जा रहा है। यदि इसे भगवान् के वचनों का मर्म पता चल सके, तब तो इसका सम्पूर्ण जीवन ही बदल जाएगा।

यही सोचकर रेवत, हाथों में झाड़ू लिए समंजनी के पास जाकर खड़े हो गए और बड़े ही मृदु शब्दों में कहने लगे- आपुस, भिक्षु को सदा बाहर की सफाई ही नहीं करते रहना चाहिए। बाहर की सफाई ठीक है, तो सुबह कर ली, सांझ कर ली, बाकी चौबीस घण्टे यही काम। इस झाड़ू की सफाई से तुम निर्वाण नहीं प्राप्त कर सकोगे। कुछ ध्यान भी करो, कुछ भीतर की सफाई भी करो। कुछ भीतर की झाड़ू भी उठाओ। कभी ध्यान भी किया करो। कभी थोड़ी देर शान्त भी बैठा करो, कभी विश्राम के लिए अपने अन्तस् में जाया करो। अरे कभी अपने भीतर भी तो झांकों। भीतर की सफाई ही असली सफाई है। यह कब करोगे ? या फिर सारा जीवन ऐसे ही बिता देना है।

रेवत की बातें हृदय से निकली थीं। हृदय से निकली हुई बातें हृदय में चोट करती हैं। आज दस सालों बाद समंजनी के हृदय में चोट लगी। उसे बोध हुआ, होश आया। इतने वर्षों बाद उसे भी हास्यास्पद लगा कि मैं क्या करता रहा। अचानक जैसे नींद टूटी। तन्द्रा की जैसे मोटी पर्त आँखों से गिर गयी। बाहर नहीं जैसे भीतर की आँख अचानक खुल गयी। जैसे सुबह कोई रात का सोया हुआ जागे और सारे सपने खो जाएँ।

दूसरे दिन उन्हें झाड़ू न लगाते देखकर अन्य भिक्षु परेशानी में पड़ गए। किसी को समझ में ही न आ रहा था कि समंजनी और झाड़ू नहीं लगा रहे। थोड़ी बहुत देर तक तो सभी ने कारणों की खोज की। पर ज्यादा देर तक उनसे शान्त न रहा गया। वे सब उनके पास पहुँच गए और कहने लगे-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समंजनी स्थविर, आज आपके हाथों में झाड़ू कहाँ गयी? अचानक आपके स्वभाव में यह परिवर्तन कैसा? आप होश में तो हैं, आपकी तबियत तो ठीक है न? कहीं आप कुछ बीमार तो नहीं हो गए। देखो तो आपके इस तरह बैठे रहने से जगह-जगह कितना कूड़ा इकट्ठा हो गया है, कितने सारे मकड़ी के जाले लग गए हैं।

भिक्षुओं के इन व्यंग वचनों पर समंजनी खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले- भन्ते, सोते समय मैं ऐसा करता था, लेकिन अब मैं जाग गया हूँ। मेरा प्रमाद छंट गया है। अप्रमाद का अब मुझमें उदय हुआ है। मुझे यह बात समझ में आ गयी है कि बाहर की सफाई सुबह-सांझ करना ही काफी है। शेष समय भीतर की सफाई। ऐसा कहकर समंजनी फिर से ध्यान में लीन हो गए।

आश्चर्यचकित भिक्षुओं ने यह बात जाकर भगवान् बुद्ध को बतायी। बुद्ध ने मुस्कराते हुए कहा- हाँ भिक्षुओं, पहले मेरा वह पुत्र प्रमाद के समय ऐसा करता था। लेकिन अब वह जाग गया है। अब वह प्रमाद से छूटकर अपने व्यर्थ के विक्षिप्त व्यवहार से मुक्त हो गया है। भिक्षुओं को इस तरह समझाते हुए भगवान् ने यह धम्मगाथा कही-

पो च पुब्बे पमज्जित्वा पच्छा सो नप्पमज्जति।
सो' मं लोकं पमासेति अष्भामुत्तो व चंदिमा॥

'जो पहले प्रमाद करके पीछे प्रमाद नहीं करता, वह मेघ से मुक्त चन्द्रमा की भांति इस लोक को प्रकाशित करता है।'

भगवान् की इस धम्मगाथा का मर्म भिक्षुओं को शीघ्र ही समंजनी के जीवन में स्पष्ट होने लगा। अपने आन्तरिक जीवन की सफाई में जुटे समंजनी की निर्मल चेतना सचमुच ही मेघों से मुक्त चन्द्रमा की भाँति समूचे भिक्षु संघ को प्रकाशित करने लगी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और, अंगुलिमाल अरिहन्त हो गया

प्रायः सभी ने चौंक कर सारिपुत्र की ओर देखा। भगवान् तथागत की अनुपस्थिति में उन्होंने ही यह समाचार भिक्षु संघ को सुनाया था, कि भिक्षु अंगुलीमाल नहीं रहे। सुनकर पहले तो एक बारगी किसी को विश्वास ही नहीं हुआ। कोई यकायक यह सोच ही नहीं पाया कि खतरनाक खूँख्वार दस्यु अंगुलीमाल इस तरह मर भी सकता है। पर सत्यवक्ता एवं सत्यदृष्टा सारिपुत्र की बातों में अविश्वास का कोई कारण भी न था। धीरे-धीरे कुछ क्षणों में भिक्षुओं को विश्वास हुआ। और उनमें से कइयों ने आश्वस्ति की सांस ली। क्योंकि ये अंगुलीमाल के भिक्षु संघ में रहने से स्वयं को असुरक्षित महसूस करते थे। उन्हें लगता था कि हत्यारा अंगुलीमाल पता नहीं कब अपनी आदत दुहरा बैठे। पर भगवान् तथागत के भय से वे कुछ कह नहीं पाते थे। आज इन्होंने जब उसके मरने की खबर सुनी तो इन सबने बड़े चैन की सांस ली।

भिक्षु संघ के कुछ नए सदस्यों ने सारिपुत्र से आग्रह किया कि वह उन्हें अंगुलीमाल के भिक्षु बनने की गाथा सुनाएँ। उनकी यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि इतना बड़ा हत्यारा अचानक भिक्षु कैसे बन गया। सारिपुत्र उन सभी के मनोभावों को समझते हुए बोले- हाँ अंगुलीमाल हत्यारा था। उसने शपथ ली थी कि एक हजार लोगों को मारकर उनकी अंगुलियों की माला बनाकर पहनूँगा, इसीलिए जन सामान्य ने उसे अंगुलीमाल के नाम से पुकारना शुरू कर दिया। जिस समय भगवान् तथागत उससे मिले, उस समय तक वह नौ सौ निन्यानबे व्यक्तियों को मार चुका था। और हजारवें की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके इस अद्भुत प्रण की चर्चा सब ओर थी। तो जिस बीहड़ वन में अंगुलीमाल रहता था, लोगों ने उस ओर जाना ही छोड़ दिया था। यहाँ तक कि उसकी माँ भी उस ओर जाने में घबराती थी। क्योंकि उसे मालूम था कि उसका बेटा अपनी मां को भी मारकर अपना प्रण पूरा करेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान् उन दिनों कोसल देश के उस भयानक वन के पास ही ठहरे थे। कोसल नरेश प्रसेनजित के काफी आग्रह-अनुरोध के बावजूद उन्होंने राजप्रसाद या राज उद्यान में ठहरना स्वीकार नहीं किया। महाराज प्रसेनजित के साथ उन्होंने जन सामान्य के अनुरोध को भी ठुकरा दिया। यही नहीं एक दिन प्रातः भगवान् उस भयावह वन की ओर जाने वाली डगर पर चल दिए। जिसने उन्हें उस ओर जाते देखा, वही चीख पड़ा, 'आप उधर न जाएँ भन्ते! वह आदमी बहुत ज्यादा खतरनाक है। वह कतई विचार नहीं करेगा कि आप कौन हैं, उसको तो बस जैसे-तैसे एक आदमी को मारकर एक हजार व्यक्तियों को मारने का अपना प्रण पूरा करना है। जरा सोचिए, जिस ओर जाने में महाराज प्रसेनजित एवं उनकी फौजें घबराती हैं, उस ओर भला आप क्यों जा रहे हैं।'

भगवान् मुस्कराकर बोले, मुझे सारी बातें पता हैं। इसीलिए तो मैं उधर जा रहा हूँ, ताकि उस बेचारे की सुदीर्घ प्रतीक्षा समाप्त हो सके। यह कहते हुए तथागत उस भयावह वन में प्रविष्ट हो गए। उनके पाँवों के आगे बढ़ने से वन में पड़े सूखे पत्ते चरमरा उठे। किसी के आने की आहट पाकर अंगुलीमाल ने अपने फरसे पर धार रखनी शुरू कर दी। हालांकि अचरच उसे भी था। क्योंकि सालों से उधर कोई आया ही नहीं था। और आज अचानक.....। आखिर यह कौन नासमझ है, जो चारों दिशाओं में फैले उसके प्रण की खबर को जानकर भी इधर मरने के लिए आ रहा है। उसने खड़े होकर थोड़ा गौर से देखा, गैरिक वस्त्र, हाथ में कमण्डलु, तो बेचारा कोई संन्यासी है। आज गया काम से लगता है इसे नागरिकों ने कुछ बताया नहीं।

परन्तु न जाने क्यों जैसे-जैसे भगवान् उसके समीप बढ़ते गए, वैसे-वैसे उसके अन्तःकरण के भाव बदलने लगे। उसमें दया का अंकुरण होने लगा। अपने इस अचानक भाव परिवर्तन पर उसे भारी हैरानी हुई। मन ही मन उसने सोचा, अरे अंगुलीमाल आज अचानक तुझे यह क्या हो रहा है? तू तो अपनी सगी माँ को भी काटने के लिए तत्पर था। फिर इससे तो कोई तेरी जान-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहचान भी नहीं है। लेकिन कुछ घटित हो रहा था। बुद्धत्व की तरंगे, भगवान् तथागत की शान्ति, सुगन्ध से वह घिरने लगा था।

शास्ता जब थोड़ी दूर रह गए तो वह चिल्लाया, अरे पागल संन्यासी। तू किधर बढ़ा चला जा रहा है, देखता नहीं मेरे गले में यह अंगुलियों की माला पड़ी है। मेरा यह चमकदार फरसा तुझे दिखाई नहीं देता? अरे नासमझ मैं अंगुलीमाल हूँ। मेरे प्रण की बात तूने नहीं सूनी। मैं नौ सौ निन्यानबे को मार चुका हूँ। एक को मारना बाकी है। क्यों तू अपनी जान का दुश्मन बना है। भाग जा मूर्ख। मैं तुझे न जाने क्यों एक मौका दे रहा हूँ। अभी भी तेरे पास समय है, तू आगे की ओर चलना छोड़ दे, पीछे लौट जा।

भगवान् हँसे। उनकी खिलखिलाहट से वन प्रान्तर में एक अपूर्ण मधुरिमा बिखर गयी। वह बोले, अरे पागल, तुझे इतना भी नहीं पता कि सालों, साल पहले मैंने चलना बन्द कर दिया है। जब से मेरा मन ठहरा, तब से मेरी जिन्दगी की सारी भाग-दौड़ बन्द हो गयी है। मैं तो स्थिर हूँ, अब तू स्थिर हो। भगवान् के इन बोधपूर्ण वचनों को अंगुलीमाल समझ न सका। अपनी हैरानी में उसने सोचा यह आदमी जरूर पागल है। जो चलते हुए भी कह रहा है कि स्थिर है। जबकि मैं यहाँ स्थिर बैठा हुआ फरसे पर धार रख रहा हूँ, तो मुझसे कह रहा है कि तुम ठहर जाओ। अपनी सोच की कड़ियों को जोड़ते हुए अंगुलीमाल ने मन ही मन कहा- कि यह आदमी कितना ही पागल क्यों न हो, पर इसमें एक दैवी आभा जरूर है।

अभी वह कुछ और सोच पाता कि भगवान् बुद्ध उसके एकदम पास पहुँच गए। अब तक किसी ने भी उसके इस तरह एकदम पास पहुँचने की हिम्मत न की थी। इस विचित्र आदमी की हिम्मत से वह थोड़ा हड़बड़ा गया। अपने को थोड़ा सम्हालते हुए वह बोला, तुम बहुत जिद्दी हो। मुझे शंका हो रही है कि कहीं तुम गौतम बुद्ध तो नहीं हो। क्योंकि जिन लोगों की मैंने हत्याएँ की हैं, उनमें से कई मुझसे यह कह रहे थे कि तुम्हें तो केवल गौतम बुद्ध ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बदल सकते हैं। पर तुम यह भली प्रकार जान लो कि मैं भी कम जिद्दी नहीं हूँ। मेरा भी नाम अंगुलीमाल है। यह अच्छी तरह से जान लो कि आज तुम्हारी जिन्दगी का आखिरी दिन है।

भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध उसकी इन बातों पर मुस्कराए और बोले, तू आराम से अपने फरसे पर धार रख ले। तब तक मैं यहीं बैठा हूँ। यह कहते हुए वह एक शिला पर बैठ गए। अंगुलीमाल अपने फरसे पर धार रखने लगा। परन्तु न जाने क्यों, आज उसके हृदय में प्रेम का ज्वार उफन रहा था। उसके अस्तित्त्व से करूणा की तरंगे फूटने लगी थी। उसके अन्तःकरण में दया का अंकुरण होने लगा था। अपनी इस भाव दशा पर वह बड़ा हैरान था। परन्तु उसने अपनी यह हैरानी छिपाते हुए कहा, कि तुम कैसे आदमी हो, आखिर तुम मरने के लिए इतना तत्पर क्यों हो। तुमने आत्महत्या करने की आखिर क्यों सोची है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उसकी सभी बातों के प्रत्युत्तर में भगवान् के मुख पर बड़ी ही निर्विकार शान्ति थी। उनके अधरों पर एक सौम्य स्मित था। इतनी देर में अंगुलीमाल का धार रखने का काम भी पूरा हो गया। उसने कहा, अरे एक बार फिर सोच ले, अभी भी मैं तुझे जीवन दे सकता हूँ। भगवान् ने उसके इस कथन पर बड़े ही करूणा पूर्ण स्वर में कहा- यही तो मैं तुझे सिखाने आया हूँ पुत्र! मारने में न तो कोई कला है और न ही कोई पुरूषार्थ। यह तो कोई भी कर सकता है वत्स। असली कला तो जीवन देने और जीवन जीने में है। पता नहीं क्या था कि महाकारूणिक बुद्ध के इन वचनों में। अंगुलीमाल फरसा एक ओर फेंककर उनके चरणों में गिर गया। वह दस्यु से भिक्षु हो गया।

और आज जब वह गाँव में भिक्षा मांगने गया- तो गांव के लोगों ने दरवाजे बन्द कर लिए। लोग अपनी-अपनी छतों पर पत्थर इकट्ठे करके चढ़ गए। और जब वह बीच सड़क पर था तो लोगों ने उसे पत्थर मारे। वह शान्तमना भिक्षु बीच सड़क पर खड़ा रहा, उसकी देह पर लोगों के पत्थर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिरते रहे। उसकी देह के प्रत्येक अंग से लहू की धारें बहती रही। उसके होठों से यह मंत्र ध्वनि निकलती रही- बुद्ध शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि। इन महामंत्रों का गान करते हुए वह धरती पर गिर गया।

खबर मिलते ही शास्ता स्वयं उसके पास गए। आखिरी क्षण थे उसके जीवन के। भगवान् ने उसका सिर अपनी गोद में रखकर पूछा- पुत्र! क्या भाव हैं इस समय तेरे मन में। उसने आँसू भरी आँखों से कहा, भगवन्! आपका ही शिष्य हूँ। आपकी ही बात मानकर मैं ठहर गया हूँ। अब ठहरे हुए का क्या भाव प्रभु! मेरा मन तो जैसे अब रहा ही नहीं भगवान्। वह तो जैसे देखता रहा, एकदम साक्षी की तरह। यही तो आपने समझाया था, पुत्र! तू देखने वाला द्रष्टा है, तू साक्षी है। जैसा आपने बताया, समझाया, मैं वैसा ही हो गया। मेरे मन-अन्तःकरण में किसी के प्रति कोई राग-रोष नहीं। मुझमें कहीं भी कोई द्वेष-क्लेश नहीं। मेरे आराध्य! आप सर्वान्तरयामी हैं। आप ही बताए कि मैं आपका शिष्य एवं अनुरक्त भक्त बन सका या नहीं।

अंगुलीमाल के इन भक्तिपूर्ण वचनों को सुनकर भगवान् के नेत्र भर आए। वह भरे हृदय से बोले, 'पुत्र! तू ब्राह्मण होकर देह त्याग कर रहा है। तू ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध हो गया है। तू अर्हत हो गया पुत्र! तू अरिहन्त हो गया।' भगवान् के इन वचनों को सुनकर अंगुलीमाल ने उन्हीं की गोद में सिर रखे हुए अपनी देह का त्याग कर दिया।

सारिपुत्र भिक्षुओं को यह कथा सुना रहे थे, तभी भगवान् बुद्ध धीमे कदमों से चलते हुए आ पहुँचे। सभी भिक्षुओं ने उन्हें प्रणाम किया। प्रणाम के अनन्तर उनमें से कुछ भिक्षुओं ने पूछा- भन्ते! भिक्षु अंगुलीमाल मरने के पश्चात कहाँ उत्पन्न होंगे? भिक्षुओं की इस जिज्ञासा के उत्तर में भगवान् ने बड़े ही धीरे स्वर से कहा- भिक्षुओं! मेरा वह पुत्र परिनिवृत्त होकर परिनिर्वाण को उपलब्ध हो गया है। उसकी चेतना जन्म-मरण से पार हो गयी है। अब उसका पुनरागमन नहीं होगा।

आश्चर्यचकित भिक्षुओं ने कहा- इतने मनुष्यों की हत्या करके?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हाँ भिक्षुओं, भगवान् ने कहा, उसने सोए हुए अनेकों पाप किए, परन्तु जगने के पश्चात् अपने पुण्यों से उन्हें नष्ट कर दिया। फिर उसने शून्य भाव में निमग्न होकर निर्वाण को प्राप्त कर लिया। यह कहते हुए भगवान् ने यह गाथा कही–

यस्य पापं कतं कम्मं कुसलेन पिथीयती।
सो' मं लोकं पभासेति अब्भा मुत्तो व चंदिमा॥

'जिसका किया हुआ पाप उसके बाद में किए हुए पुण्य से ढक जाता है। वह मेघ से मुक्त चन्द्रमा की भाँति इस लोक को प्रकाशित करता है।'

तथागत के वचन को सुनकर भिक्षुगण कहने लगे, भन्ते! अभी तो उसे भिक्षु हुए भी ज्यादा दिन नहीं हुए थे, फिर उसने इतने पुण्य कब कर डाले। बुद्ध एक हल्के से स्मित के साथ बोले, छोटा सा पुण्य कृत्य भी यदि साक्षी भाव की समग्रता से किया जाय, तो सारे पापों को भस्म कर देता है। अंगुलीमाल को न तो भिक्षु हुए ज्यादा दिन हुए और न ही वह ज्यादा दिन जिया। परन्तु जिस समय उसे सभी ग्रामवासी पत्थर मार रहे थे, उस समय वह सभी राग-द्वेष से मुक्त पूर्ण साक्षी भाव में स्थित था। इसी महापुण्य से वह निर्वाण को उपलब्ध हो गया। 'भिक्षुओं! कर्त्ता होना ही महापाप है, और साक्षी होना ही महापुण्य है।' बुद्ध के इन अपूर्व वचनों को सुनकर भिक्षुगण इन पर निदिध्यासन करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यान की आँख, विवेक की आँख

पंचशाल गांव के लोग आश्चर्यमिश्रित उत्साह से अभिभूत थे। पहले तो जब उन्होंने भगवान् तथागत के आने की बात सुनी तो, उन्हें भरोसा ही नहीं हुआ। भला भगवान् इस छोटे से पंचशाल गांव में! श्रावस्ती, मगध, कोशल, कोशाम्बी आदि राज्यों के नरेश जिनके लिए पलक पांवड़े बिछाए रहते थे। जिनके एक दर्शन के लिए सम्पूर्ण भारत भूमि के महाश्रेष्ठी अपना धनकोष लुटाने के लिए तैयार रहते थे। वे ही भगवान् इस साधना विहीन गांव में आ रहे हैं। इस समाचार ने जैसे अचानक गांव वालों को भाग्यवान बना दिया। गांव के मुखिया सहित बूढ़े-बच्चे, युवक-युवतियां सभी भगवान् के स्वागत की तैयारियों में जुट गए।

देखते-देखते गांव का कायाकल्प हो गया। आम्रपल्लव, आम्र मञ्जरी, कदली स्तम्भ एवं रंग-बिरंगी पुष्प मालाओं द्वारा की गई सज्जा ने सब भाँति पंचशाल गांव को अनूठा बना दिया। गांव की समूची प्राकृतिक समृद्धि भगवान् तथागत के स्वागत के लिए उमड़ पड़ी। कन्याओं के मंगल गान से ग्रामवीथियां गूँजने लगी। सबके सब अपनी हृदय भावनाओं का अर्घ्य भगवान् के श्रीचरणों में चढ़ाने के लिए उत्सुक थे। इन भोले ग्रामीणों के भाव संवेदनों को प्रभु अनुभव कर रहे थे, वे ठीक समय पर आनन्द, तिष्य स्थिविर, मौद्गलायन, सेवत्, रेवत आदि भिक्षुओं के साथ गांव में पधारे। ग्रामीण जन स्थान-स्थान पर प्रभु का स्वागत करते हुए उस मंच पर ले गए, जो उन्होंने विशेष तौर पर तथागत के लिए बनाया था।

पल्लवों एवं पुष्पों से सज्जित मंच पर विराजमान हो तथागत ने ग्रामीण जनों पर अपनी कृपा की अमृत वर्षा करते हुए मधुर उद्बोधन दिया। इस उद्बोधन में दिशा बोध था। उद्बोधन के पश्चात् आनन्द ने ग्रामवासियों से कहा, आप में से जो शास्ता से व्यक्तिगत ढंग से मिलना चाहते हैं, वे एक-एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करके आ जाएँ। इस कथन को सुनकर उत्सुक ग्रामीण जन पंक्तिबद्ध हो मंच की ओर बढ़ चले। भगवान् बुद्ध ने उनमें से प्रत्येक की कुशल पूछी। खेती-बाड़ी और परिजनों के समाचार जाने। जीवन के प्रकाश पूर्ण पथ पर चलने की प्रेरणा दी। बुद्ध के आशीषों को पाकर सब के चेहरे पुष्प की भाँति खिल उठे।

मिलने के इस उपक्रम में सबसे अन्त में एक कन्या आगे बढ़ी। वह जुलाहे की बेटी थी। अट्ठारह वर्ष की इस आयु में ही उसकी विचारशीलता सभी को चकित कर देती थी। उसकी बुद्धिमत्ता से समवयस्क ही नहीं गांव के वृद्धजन भी हैरान हो जाते थे। उसने बुद्ध के पास पहुँच कर बड़े ही अहोभाव और उल्लास के साथ उनके चरणों पर सिर रखा। उसे देखकर तथागत मुस्कराए। उनकी यह मुस्कान बड़ी ही रहस्यमयी थी। इसमें ज्ञान एवं प्रेम का अनोखा सम्मिश्रण था। अपनी अलौकिक मुस्कान के साथ उन्होंने उससे पूछा- बेटी, कहाँ से आती हो? भंते नहीं जानती हूँ, उसने उत्तर दिया। बुद्ध ने एक और सवाल किया, बेटी- कहाँ जाओगी? भंते, नहीं जानती हूँ। फिर उसने अपना पुराना जवाब दुहराया। क्या नहीं जानती हो, बुद्ध ने पूछा। वह बोली भंते, जानती हूँ। जानती हो- बुद्ध ने पूछा। वह बोली, कहाँ भगवान्, जरा भी नहीं जानती हूँ।

ये अटपटी बातें सुनकर, गांव के वृद्ध उस पर जोर से बिगड़ पड़े। कुछ लोग कहने लगे यह चारूलता वैसे तो बहुत ही विचारपूर्ण और बुद्धिमानी से भरी बातें करती है। पर आज यह अचानक बहकी-बहकी बातें क्यों करने लगी है। भला यह भी कोई ढंग है भगवान् से बातें करने का? यह भी कोई शिष्टाचार है? वृद्धजनों ने उसे डाँटते हुए कहा- चारू, यह तू किस तरह से बात कर रही है? तू होश में तो है? मालूम है तूझे, तू किससे बात कर रही है?

डाँट-डपट करने वाले इन वृद्धजनों को भगवान् ने टोकते हुए कहा, उसे डाँटने से पहले आप सब उसकी बातें सुने, जो वह कह रही है, उसे गुने। फिर उस कन्या की ओर देखते हुए वह बोले, बेटी चारू, तू इनको समझा कि तूने क्या कहा?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस पर उस कन्या ने कहा– जुलाहे के घर से आ रही हूँ, भगवान् यह तो आप जानते ही हैं। इस सच्चाई से हमारे गांव के लोग भी वाकिफ हैं। लेकिन मेरी जीवात्मा कहाँ से आ रही है? मेरा यह जीवन किन कर्मों के परिणाम स्वरूप जन्मा है? यह मैं भी नहीं जानती हूँ। मैं यहाँ से वापस जुलाहे के घर जाऊँगी, यह मैं भी जानती हूँ और आप भी जानते हैं। गाँव के लोगों को यह बात अच्छी तरह से मालूम है। लेकिन इस जीवन के अन्त में जब मृत्यु होगी, तब मैं कहाँ जाऊँगी, मुझे कुछ पता नहीं है। इसीलिए मैंने आपसे अभी कहा नहीं जानती हूँ।

शुरूआत में जब आपने मुझसे पूछा, कि कहाँ से आ रही है, जुलाहे के घर से? तो मैंने कहा, जानती हूँ। जब आपने पूछा कहाँ जा रही है? मैंने सोचा कि पूछते हैं, कहाँ वापस जाएगी, जुलाहे के घर? तो मैंने कहा, जानती हूँ। पर जब मैंने आपको मुस्कराते हुए देखा, आपकी आँखों में निहारा तो मैंने सोचा, नहीं–नहीं, भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध ऐसे साधारण प्रश्न क्या खाक पूछेंगे। वह जरूर मुझसे पूछना चाहते हैं– तू कहाँ से यानि कि किस लोक से आ रही है? तेरा जीवन स्रोत क्या है? तो मैंने कहा– भगवान् मैं नहीं जानती हूँ। फिर जब मैंने सोचा कि जब आप पूछते हैं कि कहाँ जाएगी, तो इसका तात्पर्य यह है कि मरने के बाद कहाँ जाएगी, तो मैंने जवाब दिया, नहीं जानती।

हल्की हँसी के साथ बुद्ध ने कहा, तूने ठीक सोचा बेटी। तू सचमुच ही विचारशील एवं बुद्धिमती है। इसी के साथ उन्होंने सभी ग्रामवासियों को सुनाते हुए यह गाथा कही–

अधं भूतो अयं लोको तनुकेत्थ विपस्सति।
सकुंतो जालभुत्तो व अप्पो सग्गाय गच्छति॥

यह सारा लोक अंधा बना है। यहाँ देखने वाला कोई विरला है। जाल से मुक्त हुए पक्षी की भांति विरला ही स्वर्ग को जाता है।

इस गाथा को और अधिक स्पष्ट करते हुए तथागत ने कहा– बेटी, तेरे पास आँख है, ध्यान की आँख, विवेक की आँख। इसी कारण तू देखने में,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझने में समर्थ है। इन लोगों के पास आँख नहीं है। इसी कारण ये तेरी बातें समझ नहीं सके। आँखवाला जब कोई बात करता है, तो नेत्रविहीन लोगों को समझ में नहीं आती है। आँख वाला कहता है- कैसा प्यारा इन्द्रधनुष, पर जिनके पास आँखें नहीं है, वे उसे मूर्ख समझते हैं। इन सबके बीच एक तू ही है, जो देखने में सक्षम है। अपने कर्मों के जाल से मुक्त हो तू अवश्य अपने गन्तव्य को पहुँचेगी। भगवान् की इन बातों को सुनकर अन्य ग्रामीण जन भी ध्यान के लिए उत्सुक व उत्साहित हुए। ताकि वे भी तथागत के कृपाप्रसाद से नेत्रवान बन सकें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आसक्ति अनंत बार मारती है

भिक्षु तिष्य के मुख पर प्रसन्नता छलक उठी। कभी वह अपने हाथों में पकड़ी हुई मुलायम–कोमल चादर को देखता, तो कभी अपनी बहन सुवर्णा की ओर। सुवर्णा ने कई महीने की कड़ी मेहनत के बाद यह चादर तैयार की थी। इसमें कई रंगों का अनूठा मेल था। कलात्मकता का अद्भुत संगम थी यह चादर। अपने एक हाथ में चादर पकड़े और दूसरे हाथ से उसे बार–बार सहला रहे तिष्य को वर्षा–वास के महीने याद आ गए। भिक्षु संघ के नियमों के अनुसार भिक्षुओं को वर्षा के तीन–चार महीने एक ही स्थान पर रहकर साधना करनी होती थी। वर्षा–वास के बाद भिक्षु जब अपनी प्रव्रज्या हेतु पुनः निकलते तो लोग उन्हें भेंट देते। भेंट भी क्या ? थोड़ी सी भेंट लेने की ही उन्हें आज्ञा थी।

शास्ता के आदेश के अनुसार वे केवल तीन वस्त्र ही रख सकते थे, इससे ज्यादा नहीं। यदि कोई चादर भेंट करता, तो पुरानी चादर छोड़नी पड़ती। इसी तरह यदि कोई भिक्षा पात्र भेंट करता तो पुराना भिक्षा पात्र छोड़ना पड़ता। पिछली वर्षा वास के दिनों के बाद भिक्षु तिष्य जब गाँव से चलने लगे, तो उन्हें एक ग्राम निवासी ने एक चादर भेंट की। यह चादर मोटे सूत की थी। मोटे सूत की मोटी सी चादर ऊपर से छूने में काफी खुरदरी। बड़े बेमन से तिष्य ने उसे अपने हाथों में लिया था। भिक्षु संघ के नियमों के अनुसार वह कुछ कह नहीं सकते थे। तथागत ने नियम ही कुछ ऐसे बनाए थे। इन नियमों के अनुसार भिक्षु को आज्ञा नहीं थी कि उसे जो दिया जाय, उसमें वह शिकायत करे, किसी तरह की कोई कमी निकाले।

लेकिन साधना पथ की प्रधान बाधा चतुराई है। यह चतुराई कोई न कोई तरीका निकाल ही लेती है। तिष्य ने भी अपनी चतुराई से चालाकी भरा मार्ग खोज निकाला। उसी गांव में उसकी बहन सुवर्णा रहती थी। तिष्य को जब यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चादर भेंट की गयी थी, तो पास में वह भी खड़ी थी। सम्भवत: वह अपने भाई को विदा करने आयी थी। भिक्षु तिष्य ने बिना कुछ कहे बड़े ही उदास मन से सुवर्णा के हाथ में वह मोटी चादर थमा दी। वाणी से कुछ न कहने के बावजूद तिष्य के चेहरे की घनी उदासी ने सब कुछ कह दिया था। तिष्य के मनोभावों को एक पल में ही समझकर सुवर्णा ने संकेत से ही उन्हें आश्वासन दिया कि वह थोड़े ही दिनों में उन्हें एक अच्छी सी सुन्दर चादर दे देगी।

इस आश्वासन से तिष्य की उदासी छटने लगी। सुवर्णा उस चादर को लेकर अपने घर आ गयी। उसने पहले तो उस मोटे सूत वाले चादर को तेज चाकू से पतला-पतला चीर दिया। फिर उसे ओखल में कूटा और धुना। बाद में उससे पतले सूत वाली यह सुन्दर-सुकोमल चादर तैयार की। इस बीच भिक्षु तिष्य बड़ी आतुरता से इस चादर की प्रतीक्षा करते रहे। मन ही मन उन्होंने अपनी कामनाओं और कल्पनाओं को न जाने कितनी बार कितनी तरह बुना। ऐसी होगी सुवर्णा द्वारा बनाई गई चादर। अरे नहीं, वह चादर कुछ वैसी होगी। फिर उसे ओढ़कर इस तरह से चलूँगा, उस तरह से चलूँगा।

आज वह घड़ी भी आ गयी, जब सुवर्णा ने अपनी महीनों की मेहनत से तैयार की गयी चादर उनके हाथों में थमा दी। उनका मन-मयूर नाच उठा। चादर मिलने के बाद उनकी कल्पनाओं ने कई रंग बदले, फिर वह धीरे-धीरे सघन होकर मनोकाश पर छा गयी। कल्पनाओं के सघन घन में अहंकार की दामिनी भी रह-रहकर दमकने लगी। अब भिक्षु तिष्य यह सोच रहे थे कि ऐसा सुन्दर चीवर तो स्वयं भगवान् तथागत के पास भी नहीं है। अब जब कल मैं चादर ओढ़कर निकलूँगा तो सब को पता चलेगा कि भिक्षु संघ में ऐसा सुन्दर चादर मेरे सिवा किसी दूसरे के पास नहीं है।

रात होने को आयी थी। इसलिए उस समय तो वह चादर ओढ़ना बेकार था। तिष्य सोच रहे थे कि यदि इस समय इसे ओढ़ भी ले तो अंधेरे में इसे देखेगा भी कौन? और सारा मजा तो दिखाने में है। यही सब सोचते हुए उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़े जतन से, बड़ा ही लाड़-प्यार करके वह चादर अरगनी पर टांग दी। और सोने के लिए बिस्तर पर लेट गए। पर ढंग की नींद भी कहाँ थी। नींद में भी उस वस्त्र के सम्बन्ध में तरह-तरह के स्वप्न चलते रहे। कब सुबह हो, कब चादर ओढ़कर सबको दिखाऊँ। यही वासना उनके आस-पास मंडराती रही। उस रात उनकी यह वासना भले ही अपूर्ण रही हो, पर उसी रात उनकी आयु पूर्ण हो गयी। रात में ही उनका देहान्त हो गया। उस चादर के प्रति उनकी तृष्णा इतनी बलवती थी कि तिष्य मर कर चीलर हो गए और उसी चादर में छुप कर बैठ गए।

दूसरे दिन संघ के भिक्षुओं ने उनके मृत शरीर को जलाकर नियमानुसार उस चादर को आपस में बांटने के लिए उठाया। भगवान् तथागत ने भिक्षु संघ के लिए यह नियम बनाया था कि जब कोई भिक्षु मर जाय तो उसकी वस्तुएँ परस्पर बांट ली जाय। जिनके पास न हो, उन्हें दे दी जाय। भिक्षुओं द्वारा उस चादर को छूते ही वह चीलर (कपड़े में रहने वाला कीड़ा) तो पागल हो उठा। वह चीलर और कोई नहीं भिक्षु तिष्य का ही नया जन्म था। अरे हमारी वस्तु तुम सब क्यों लूट ले रहे हो, यह कह-कहकर वह इधर-उधर दौड़ने-चिल्लाने लगा।

उस चीलर की इस चीख-पुकार को भगवान् बुद्ध के सिवा और किसी ने भी न सुना। भगवान् ने उसकी यह चीख-पुकार सुनी और वह हँसे। हँसते हुए उन्होंने आनन्द से कहा- कि भिक्षुओं से कह दो कि तिष्य की चादर को वहीं की वहीं रहने दें। सातवें दिन वह चीलर मर गया। चीलर की भला आयु ही कितनी। जब तिष्य ही मर गए तो बेचारा चीलर कितने दिन जिएगा। सातवें दिन चीलर के मरने पर भगवान् ने भिक्षुओं से तिष्य की चादर को आपस में बांट लेने को कहा।

भगवान् के इस तरह के आदेश से भिक्षु थोड़ा चकित थे। उन्होंने जिज्ञासु भाव से भगवान् से एक सप्ताह पहले रुक जाने और फिर आज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अचानक उस चादर को बांटने की आज्ञा का कारण पूछा। उत्तर में भगवान् ने हँसते हुए भिक्षु तिष्य के चीलर होने और उसके दुबारा मरने की बात कही। अब तो भिक्षुओं का आश्चर्य और भी बढ़ गया। सबके सब भिक्षु सोच में पड़ गए। भला यह कैसा नियति का विधान। भिक्षु तिष्य को मरने के बाद चीलर होना पड़ा।

भिक्षुओं का समाधान करते हुए भगवान् बोले, कामी अनन्त बार मरता है। जितनी कामना, उतनी बार मृत्यु। क्योंकि जितनी बार कामना, उतने ही बार जन्म। जीवात्मा की हर कामना एक जन्म बन जाती है। साथ ही हर कामना एक मृत्यु भी बन जाती है। यह कहते हुए भगवान् ने भिक्षुओं को यह धम्मगाथा सुनायी-

अयसा व मलं समुट्ठितं तदुट्ठाय तमेव खादति।
एवं अतिघोनचारिनं सानिकम्मानि नयन्ति दुग्गति॥

जैसे लोहे में लगने वाली जंग, उससे उत्पन्न होकर उसी को खाती है, ठीक वैसे ही साधनात्मक अनुशासन का उल्लंघन करने वाले मनुष्य के कर्म उसे दुर्गति को पहुँचाते हैं।

इस धम्म गाथा को सुनकर भिक्षुगण सचेत हो गए। आसक्ति हो या फिर ईर्ष्या, द्वेष से भरी-पूरी अहंता। सभी कुछ साधना पथ के जोखिम हैं। इनसे दूर रहने पर ही साधक का कल्याण है। ऐसा आत्म चिन्तन करते हुए भिक्षुओं ने तथागत को प्रणाम किया और ध्यान के लिए चले गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रोध छोड़ें, अभिमान त्यागें

स्थविर अनिरूद्ध इन दिनों भगवान् तथागत के साथ कपिलवस्तु आए हुए थे। कपिलवस्तु स्थविर अनिरूद्ध का गृहनगर था। यहाँ की वायु में उनके बचपन की सुगन्ध रची-बसी थी। उनकी किशोरावस्था की उमंगे समायी थी। यहाँ के मृतिकाकणों में उनके जीवन के असंख्य स्मृतिकण बिखरे हुए थे। इस नगरी में पांव रखते ही उनके मानस पटल पर अनायास ही यादों के अनेकों रंग उभर आए। यादों की असंख्य जलउर्मियाँ उनके मानस सरोवर में तरंगित हुई। शास्ता ने उनकी इस मनोदशा को सहज ही जान लिया। करूणा के अवतार भगवान् की करूणा अपने इस शिष्य पर सहज ही बरस पड़ी।

भगवान् ने करूणा से आपूरित नेत्रों से उनकी ओर ताका। फिर पास में खड़े आनन्द, रेवत एवं तिष्य आदि भिक्षुओं की ओर उन्मुख होकर बोले- भिक्षुओं! कपिलवस्तु बहुत ही सौन्दर्यशाली नगर है। इसकी शोभा अनुपम है। तुम सब वत्स अनिरूद्ध के साथ जाकर कपिलवस्तु नगर का भ्रमण कर आओ। भगवान् की इस भक्त वत्सलता ने अनिरूद्ध के अन्तःकरण को भक्ति से संवेदित कर दिया। उसने श्रद्धा विभोर होकर उन्हें प्रणाम किया और भिक्षुओं के साथ नगर भ्रमण के लिए चल पड़े। बढ़ते कदमों के साथ नगर के चतुष्पथ, वीथियाँ एक बार फिर से उनकी स्मृतियों को कुरेदने लगी।

स्मृतियों के संस्पर्श के इस अहसास के साथ वह उस गृहद्वार पर जा पहुँचे जहाँ उनका बचपन गुजरा था। उनके परिवार के स्वजन, पड़ोस के स्नेहीजन उन्हें अपने बीच में इस तरह अचानक पाकर खुशी से फूले न समाए। हर्ष विभोर मन से उन सबने स्थविर अनिरूद्ध का स्वागत किया। बचपन और किशोरावस्था के अनेकों मित्र भी उनसे मिलने आए। इन सबके बीच में अनिरूद्ध की आँखें किसी और को ढूँढ रही थी। उन्हें इस तरह किसी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तलाशते देखकर उनकी मां ने पूछा- किसे ढूँढ रहे हो पुत्र? अनिरूद्ध ने बड़े बुझे मन से कहा- रोहिणी नहीं आयी मां। रोहिणी उनकी सगी बहिन थी। बचपन से युवावस्था में प्रथम पग रखने तक दोनों ने हर पल साथ बिताया था। न जाने कितनी स्नेह-स्मृतियाँ सजी और सँवरी थी मन में। उनके आने की खबर सुनकर रोहिणी का न आना किसी आश्चर्य से कम न था। मां भी उसके बारे में कुछ नहीं बोली। बस चुप-चाप उठकर बुलाने के लिए चली गयी।

थोड़े समय बाद रोहिणी सामने थी। परन्तु अपना मुँह ढककर आयी थी। स्थविर अनिरूद्ध बड़े चिन्तित हुए। उन्होंने उससे पूछा कि पहले तो तू आयी नहीं। अब आयी भी है तो मुँह ढँक कर आयी है। इसका कारण क्या है? रोहिणी ने कहा, भ्राता! मेरा चेहरा अनायास विकृत हो गया है। सारे चेहरे पर फफोले हो गए हैं। मैं छवि रोग से पीड़ित हूँ। इसलिए पहले मैं लज्जावश नहीं आयी। आपने बुलाया तो आयी हूँ। लेकिन मुँह ढककर आयी हूँ। क्योंकि मेरा मुख अब दिखाने योग्य नहीं रहा।

बहिन की यह स्थिति देखकर अनिरूद्ध को अपने जीवन के विगत वर्ष स्मरण हो आए। जब उसकी बहिन का अप्रतिम सौन्दर्य सर्वत्र चर्चा का विषय था। अपनी स्मृतियों में उन्होंने रोहिणी की एक पूर्व झलक देखी, अंग राग से मंडित मुख, शरीर सुगन्ध में सराबोर। उसके अधर बिम्बाफल थे, भृकुटियाँ विजय के संकल्प वाले धनुष सी तनी थीं। आकर्ण आम्र के फांक सी आँखों में उल्लास के भंवर पड़ा करते थे। चीनांशुक जैसे शुभ्र, भृसण कपोलों में कूप बनते और हँसने पर चन्द्रिका की बौछार सी होती रहती। वही रोहिणी आज इस तरह मुँह ढापे, वह अपनी स्मृतियों से उबरते हुए सोच में डूब गए।

फिर अगले ही पल उन्होंने स्वस्थचित्त होकर हँसते हुए कहा, छोड़ इसकी फिकर। भगवान् का आगमन हुआ है। उनके साथ अनेकों भिक्षु गांव में आए हैं। उनके ठहरने के लिए एक विशाल भवन बनवाना है, तू उस भवन को बनवाने में लग जा। अपने भाई की यह बात रोहिणी के मन में समा गयी। परन्तु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके पास इतने रुपये नहीं थे। लेकिन उसने अपने सारे गहने, जेवर बेच दिए और भिक्षुओं के लिए भवन बनवाने में लग गयी। वह इस काम में ऐसा रमी कि अपने रोग को भूल ही गयी। और सबसे सुखद आश्चर्य तो तब हुआ जब भवन बनवाते-बनवाते निन्यानबे प्रतिशत रोग अनायास ठीक हो गया। फिर भी संकोचवश भगवान् के दर्शन को न जा पायी।

उसके द्वारा बनवाए भवन में भगवान् अपने भिक्षुओं के संग पधार चुके और वह स्वयं न आ पायी। यह अचरज सभी को था। परन्तु करूणावतार बुद्ध ने बड़े ही प्रेम से उसे बुलवाया। शास्ता के इस तरह बुलाने पर जब वह गयी तो उन्होंने पूछा, कि वह क्यों नहीं आयी? उसने कहा प्रभु, मेरे शरीर में छवि रोग उत्पन्न हो गया था, उसी से लज्जित होकर नहीं आयी। हालांकि आपके लिए भवन बनवाने के सत्पुण्य से निन्यान्वे प्रतिशत ठीक हो गया है, लेकिन एक प्रतिशत अभी भी बाकी है। अपना कुरूप चेहरा आपको कैसे दिखाऊँ? इसीलिए बचती रही। लेकिन जब आपने आदेश देकर बुलवाया है, तो आयी हूँ, क्षमा करें।

भगवान् ने गम्भीर स्वर में कहा, जानती हो पुत्री, यह रोग किस कारण हुआ है? नहीं भन्ते, वह बोली। भगवान् बोले- तेरे क्रोध के कारण। यह अत्यन्त क्रोध का फल है। और इसीलिए देख कि करूणा से अपने आप दूर हो चला है। तुझे अपने रूप का बड़ा अभिमान था। उस अहं के कारण ही तुझे क्रोध होता था। भिक्षुओं के लिए भवन बनवाने में तू भूल गयी अपने को। तेरा अहंभाव विस्मृत हो गया। तू कुछ इस तरह संलग्न हो गयी इस करूणापूर्व कृत्य में कि अहंकार को बचने का कोई स्थान ही न रहा। इसलिए देख तेरा रोग अपने आप ही दूर हो चला है। लेकिन पूरा दूर नहीं हो पाया। क्योंकि तेरा अहंकार छूटा तो है, परन्तु बोध पूरी तरह नहीं छूटा है। इसलिए एक प्रतिशत रोग बचा हुआ है।

रोहिणी भगवान् की बातों को सुखद आश्चर्य के साथ सुन रही थी। भगवान् बिना रूके अभी भी कह रहे थे- पुत्री! तूने करूणा की तो लेकिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जान–बूझ कर नहीं की है। मूर्छा में की है। भाई ने कहा है इसलिए की है। तेरे भीतर से सहज स्फूर्त नहीं है। इसलिए एक प्रतिशत बच रहा है। जाग! जो अभी तू करूणा कर रही है, होश से कर। और जो अहंकार तूने काम में भूलकर भुलाया, उसे जानकर विसर्जित कर दे। इस बात को सुनकर रोहिणी अपने में डूब गयी। भगवान् की करूणा की वृष्टि से उसने अपने अस्तित्त्व में अनुभव किया। अपनी भाव समाधि की दशा से जब वह उबरी तो देखा उसका सारा रोग चला गया। तब भगवान् ने पास में खड़े भिक्षुओं से ये गाथाएँ कहीं–

क्रोधं जहे विप्पजहेय्य मानं सञ्ञोजनं सब्बमतिक्कमेय्य।
तं नामरूपस्मि असज्जमानं अकिञ्चनं नानुपातन्ति दुक्खा॥
यो वे उप्पतितं कोधं रथं मन्तं व धारये।
तमहं सारथिं ब्रूमि रस्मिग्गाहो इतरो जनो॥
अक्कोधेन जिने कोधं असाधु साधुना जिने।
जिने कदरिषं दानेन सच्चेन अलिकवादिनं॥
सच्चं भणे न कुज्झेयं दज्जाप्यस्मिम्पि याचितो।
एतेह तीहि ठानेहि गच्छे देवान सन्तिके॥

क्रोध को छोड़े, अभिमान को त्याग दे, सारे संयोजनों के पार हो जाय। इस तरह नाम, रूप में आसक्त न होने वाले तथा अकिंचन पुरुष को दुःख नहीं सताते। जो चढ़े हुए क्रोध को भटक गए रथ की भाँति रोक लेता है, उसी को मैं सारथी कहता हूँ। दूसरे तो केवर लगाम थामने वाले हैं। अक्रोध को क्रोध से जीते। असाधु को साधु से जीते। कृपण को दान से जीते और झूठ बोलने वाले को सत्य से जीते। 'सच बोले, क्रोध न करे। मांगने पर थोड़ा अवश्य दे। इन तीन बातों से मनुष्य देवताओं के पास जाता है।' भगवान् की इन गाथाओं के श्रवण ने उपस्थित सभी भिक्षुओं को गहरे मनन और निदिध्यासन के लिए बरबस प्रेरित किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नमामि देवं भवरोग वैद्यम्

स्वादिष्ट भोजन, बस यही उनकी कमजोरी थी। सारी जीवन चेतना जैसे जिह्वा में आ केन्द्रित हुई थी। खाना, फिर खाना और उसके बाद भी खाते रहना। इसका परिणाम भी कुछ ऐसा ही था-सोना, फिर सोना और उसके बाद भी सोते रहना। भोजन और शयन के इस अतिरेक के कारण कई बीमारियों ने उन्हें घेर लिया था। सम्राट होने के कारण उन्हें जिन्दगी की सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। पर इन सुविधाओं का उपयोग पहले बीमारी के साधन जुटाने में और फिर उनके समाधान ढूँढने में ही होता था। हमेशा चिकित्सक उन्हें घेर रहते। स्थूल देह भारी-भरकम हो गयी थी। उसमें न आभा रही थी। बस एक मुर्दा लाश की तरह हो गया था जीवन।

ऐसे जीवन के क्षण-क्षण गुजारते हुए वह जिस किसी तरह जिए जा रहे थे। तभी खबर मिली कि भगवान तथागत अपने भिक्षु संघ के साथ राजधानी में पधारे हैं। जन-जन उनके दर्शनों के लिए उमड़ पड़ा है। सभी जा रहे हैं। ऐसे में तो जाना ही पड़ेगा। उन्होंने सोचा कि न जाने पर तो बड़ी फजीहत होगी। जनता जाए और वहाँ का राजा न जाए तो सब यही सोचेंगे कि बड़ा अधार्मिक राजा है। सलाह कारों ने भी उन्हें यही समझाया, जाना तो पड़ेगा ही सम्राट, नहीं तो प्रतिष्ठा में बट्टा लगेगा। अगर लोगों को पता लग जाए कि राजा अधार्मिक है तो सम्मान कम हो जाने का खतरा तो है ही।

पर मेरे भोजन का क्या होगा? सम्राट के माथे की लकीरें इस प्रश्न चिन्ह के साथ गहरी हो गयीं। बुद्ध को पता नहीं घण्टा भर सुनना पड़े, डेढ़ घण्टा सुनना अथवा फिर दो ढाई घण्टा सुनना पड़े। न जाने कितनी देर बुद्ध बोले और न जाने कितनी देर वहाँ रुकना पड़े। हाँ सो तो सही है, कुछ चापलूस सलाहकारों ने उनकी हाँ में हाँ मिलाई और कुछ चतुर समझे जाने वाले ने लगे हाथ सलाह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी दे डाली, महाराज! आप तो खूब डट कर भोजन कर लीजिए। यह सलाह अपने मन मुताबिक होने के कारण उन्हें जम गयी। सो अन्य दिनों की तुलना में उन्होंने कुछ अधिक ही भोजन किया। इस अधिक भोजन के पश्चात कहीं आने-जाने की सामर्थ्य तो बची न थी-फिर भी प्रतिष्ठा की लाज और लोभ से वह भगवान तथागत की धर्म सभा में पहुँच गए।

सम्राट होने के कारण उन्हें भगवान के सामने ही बैठाया गया। थोड़ी देर में ही भगवान् की अमृत वाणी का प्रवाह बह चला। ज्ञान, विवेक, वैराग्य की अनेकों तरंगें जन-मन को संस्पर्शित-संवेदित करने लगी। लेकिन सम्राट स्वयं इस अमृत वर्षण से अछूते थे। उन्हें तो अधिक भोजन के कारण बार-बार नींद के झोंके आ रहे थे। उन्हें फुरसत ही कहाँ थी। वह न तो बुद्ध को सुनने आये थे, न उनकी सुनने की स्थिति थी। इतना खाना खाकर आये थे कि बैठते ही नींद से झूमने लगे। दूसरे तो आनन्द में झूम रहे थे और वह नींद में झूम रहे थे।

करुणापुञ्ज भगवान बुद्ध उनकी यह दशा देखकर करुणा से विगलित हो उठे। मानव जीवन जो विभूतियों, उपलब्धियों एवं शक्तियों का अक्षय कोष है, उसकी इस सम्राट कहे जाने वाले व्यक्ति ने इस कदर दुर्दशा कर रखी है। अपनी सम्पदा को इसने अपनी लिए विपदा बना लिया है। सारे साधन इसके लिए न तो साधना न बन सके न समाधान सिद्ध हो सके। उन्हें बड़ी दया आयी। झपकियों में झूमते सम्राट को उन्होंने पुकारा, महाराज ? क्या ऐसे ही जीवन गँवा देना है। जागना नहीं है? बहुत गयी, थोड़ी बची है, अब तो होश सम्भालो सम्राट प्रसेनजित। भोजन जीवन नहीं है। इस परम अवसर को ऐसे ही मत गँवा दो।

भगवान के इन वचनों से सम्राट प्रसेनजित की निद्रा में थोड़ा व्यतिरेक हुआ। वह बोले- प्रभु सब दोष भोजन का है-मानता हूँ, इसके कारण ही मेरा स्वास्थ्य भी सदा खराब रहता है। तन्द्रा भी बनी रहती है। प्रमाद और आलस्य भी घेरे रहता है। और इसके बाहर होने का कोई मार्ग भी नहीं दिखाई पड़ता। सारा दोष भोजन का ही है भगवान।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रसेनजित के इन वचनों को सुनकर बुद्ध की करुणा भी सघन हो गयी। वह बोले- अरे सम्राट! प्रज्ञावान बनो, भला भोजन का दोष कैसे हो सकता है? अपने दोष को भोजन पर टाल रहे हो। भोजन जबरदस्ती तो आपके पेट में नहीं चला जाता। परन्तु भगवान के यह वचन भी सम्राट को बोध न दे सके। वह सफाई में कह उठे- मेरी समझ में तो भगवान सब दोष भोजन का है। इसके कारण ही सब उलझन हो रही है। इससे बाहर आने का कोई उपाय भी नहीं दिखता है।

अपने वचनों से बोधिज्ञान का वरदान देने वाले भगवान सम्यक्-सम्बुद्ध बोले- दोष भोजन का कैसे हो सकता है वत्स! तनिक विचार तो करो, दोष बोध का है। तुम्हें पता है कि स्वास्थ्य खराब हो रहा है, तुम्हें पता है आलस्य आ रहा है, तुम्हें पता है। जीवन व्यर्थ जा रहा है लेकिन यह बोध तुम भोजन करते वक्त सम्भाल नहीं पाते। यह बोध भोजन कर लेने के बाद तुम्हारे पास होता है। लेकिन जब भोजन करते हो तब चूक जाता है।

ऐसे में मैं क्या करूँ भगवान? प्रसेनजित की उलझन थोड़ी गहरी हुई। बुद्ध मुस्काते हुए बोले- उपाय तो है परन्तु शायद तुम से हो न सके। ऐसे कहते हुए उन्होंने पास खड़े हुए सम्राट के अंग रक्षक सुदर्शन की ओर देखते हुए कहा-वत्स सुदर्शन! कैसे अंगरक्षक हो तुम। जिस अंग की रक्षा के लिए तुम नियुक्त हो, वह तो सब खराब हुआ जा रहा है। क्या रक्षा कर रहे हो तुम अपने सम्राट के शरीर की । अबसे ध्यान रखो जब तुम्हारे सम्राट भोजन के लिए बैठे तो ठीक सामने खड़े हो जाना और उन्हें याद दिलाते रहना कि ध्यान रखो-याद करो, बुद्ध ने क्या कहा था। चूकना मत अपने इस कर्त्तव्य में। तुम्हारे इस कर्त्तव्य पालने में सम्राट तुम पर नाराज हो तो तुम्हें दण्डित करने की धमकी भी देंगे, पर तुम बिना घबराए अपना दायित्व निभाना।

बुद्ध के ये वचन सुदर्शन के अन्तस में गहरे उतर गये। उसे यह बात जमी कि वह अंगरक्षक तो है ही और उसकी आंखों के सामने सम्राट का शरीर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खराब होता जा रहा है। वह देह जिसकी रक्षा के लिए वह नियुक्त है। वह डट गया अपने कर्त्तव्य में। प्रसेनजित की नाराजगी उस पर बढ़ती गयी। जब भी ज्यादा खाने की कोशिश करते, वह बोल पड़ता-याद करो बुद्ध के वचन। डाँटने पर भी वह याद दिलाए जाता। धीरे-धीरे इसका परिणाम होने शुरु हुआ।

थोड़ा-थोड़ा बोध जगने लगा। नाराज होने के बाद प्रसेनजित क्षमा भी माँग लेते। धीरे-धीरे उनका भोजन और जिह्वा पर नियंत्रण हाने लगा। भगवान तीन महीने उस नगर में रुके थे। प्रसेनजित जब दुबारा आए तो वह एकदम बदले हुए थे। उनके चेहरे की आभा लौट आयी थी। तेजस्विता फिर वापस आ गयी थी। उनका मन अपने अंगरक्षक सुदर्शन के प्रति भी अनुग्रह से भरा हुआ था। उन्हें इस तरह स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त देखकर भगवान ने यह धम्मगाथा कही-

आरोग्य परमालाभा संतुट्ठी परमं धनं।
विश्वास परमा बन्धु निब्बानं परमं सुखं॥

आरोग्य सबसे बड़ा लाभ है। संतोष सबसे बड़ा धन है। विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है और निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।

इस धम्मगाथा को सुनकर सभी उपस्थित जन भाव-विभोर हो गए। भगवान अपने वचनों से सभी को परम आरोग्य का लाभ देने आये हैं, यह उन्हें अनुभव हो रहा था। क्योंकि आरोग्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य भर नहीं है। यह तो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक तलों पर सभी स्तरों से मुक्ति है। भगवान बुद्ध को अपने चिकित्सक के रूप में पाकर प्रसेनजित कृतार्थ हो रहे थे। यह कृतार्थता के भाव बरबस उनकी वाणी से फूट पड़े-'**नमामि देवं भवरोग वैद्यं।**'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महानिर्वाण की अनुभूति

'पुण्योगन्धः पृथिव्याम्'- हवाओं में बिखरती पद्मगन्ध इस आर्षवचन को सार्थक कर रही थी। भगवान् तथागत अपनी गन्धकुटी में बैठे थे। भगवान् की तपःपूत देह ही इस पद्मगन्ध का स्रोत थी। वह जहाँ बैठते, जहाँ भी समाधि लीन होते, वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण उनकी दिव्य सुगन्ध से महक उठता था। उनके आवास स्थान के कण-कण में यह दिव्य सुरभि भर जाती थी। यही कारण था कि आश्चर्य विभोर हुए भगवान् के शिष्यों ने उनके आवास स्थान को गन्धकुटी नाम दिया था। तथागत जहाँ भी रहते, वह स्थान गन्धकुटी के नाम से जाना जाता।

एक बार जिज्ञासु जनों का समाधान करते हुए भगवान् ने कहा था- भन्ते! यह देह पृथ्वीतत्त्व प्रधान है। इसका स्वाभाविक गुण पुण्य गन्ध है। परन्तु इसमें आश्रय पाने वाले विचारों के विकारों ने, भावनाओं के प्रदूषण ने, प्राण की दूषित दशा ने इस पुण्य गन्ध को नष्ट कर दिया है। इन दोष-दुर्गुणों से कभी-कभी स्थिति इतनी दूषित हो जाती है कि सुगन्ध बिखेरने का स्वभाव रखने वाली देह से दुर्गन्ध फूटने लगती है। लेकिन तप की प्रचण्डता से, विचार, भावनाओं एवं प्राण की पवित्रता फिर से लौट आती है। और देह पद्मगन्ध का स्रोत बन जाती है।

भगवान् के इन वचनों का मर्म स्वयं भगवान् की उपस्थिति थी। वह जहाँ भी अपने सम्बुद्ध शिष्यों के साथ बैठते, वहीं दिव्य कमल बन अवतरित हो जाता। हवाओं में स्वर्गीय भाव सघन हो जाते। यह सघनता इतनी सक्रिय होती थी कि इसकी छोटी सी छुअन भी प्राणों में पुलकन भर देती। मानव चेतना सहज ही दिव्य भावों को छूने लगती। सामान्य प्राणों में भी दिव्य भाव मचल उठते। भगवान् तथागत की समाधि लीन चेतना के सान्निध्य में सामान्य साधक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी समाधि की ओर उन्मुख होने लगते। जिनकी साधना प्रखर थी, उनके लिए तो भगवान् का स्पर्श निर्वाण के महाद्वार खोलने वाला था।

भगवान् दिव्य भावों के सघन महाभाव थे। आज वह अपनी गन्धकुटी के अन्त:कक्ष में भावलीन दशा में बैठे थे। तभी तीस भिक्षुओं ने आकर उन्हें प्रणाम किया। उनके प्रणाम के उत्तर में तथागत का नेत्र थोड़ा उन्मीलित हुए। अधरों पर हल्की सी स्मित रेखा उभरी। भौहों में रहस्यमय संकेत सघन हुआ। अन्तस् में परावाणी के स्वर उभरे। जिन्हें आगन्तुक भिक्षुओं ने मौन की निरवता में सुना। इन भिक्षुओं को अपने साथ लाने वाले भदन्त आनन्द इस अलौकिक कार्य व्यापार को समझ नहीं पाए।

भगवान् के अनेकों अलौकिक कार्यों के वह साक्षी थे। उनके सान्निध्य में अनेकों आश्चर्यों को उन्होंने सघन होते हुए देखा था। शास्ता के अनगिन दिव्य भावों ने उनके सामने आकार लिया था। स्वर्लोक, मह:लोक की दिव्य विभूतियों को उन्होंने भगवान् के सम्मुख साष्टांग होते हुए देखा था। पर आज की कथा तो सर्वथा निराली थी। आज तो जैसे शास्ता इस लोक में उपस्थित होते हुए भी अनुपस्थित थे। आनन्द चकित तो हुए, पर कुछ सोच न पाए। बस प्रत्यक्ष में उन्होंने इतना भर देखा कि उनके साथ आने वाले तीसों भिक्षु भगवान् के सम्मुख अर्धचन्द्राकार घेरे में क्रमवार बैठ गए।

महाभिक्षु आनन्द ने बाहर आकर कक्ष का द्वार बन्द किया। और पहरा देने लगे। पल-क्षण बीते, घड़ी-प्रहर बीते। अब तो दिवस भी बीत चला। पर न तो कक्ष के द्वार खुले और न ही कोई बाहर निकला। आनन्द का धैर्य चुकने लगा। वे बार-बार चिन्तित हो सोच रहे थे, बड़ी देर हो गयी, बड़ी देर हो गयी, अब आखिर और कितनी देर। आखिर ऐसा क्या होने लगा कक्ष में। वार्तालाप की भी तो कोई ध्वनि नहीं है। शास्ता के सेवक का धर्म निभाते हुए उन्होंने यह भी सोचा- आखिर ये भिक्षु और कितना सताएंगे भगवान् को। इन्होंने जितना समय मांगा था, उससे तो दुगुना समय हो गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब तो सारी सीमाएँ पार हो गयीं महाभिक्षु आनन्द के धीरज की। वह उठे। उन्होंने दरवाजे से झांक कर देखा। देखकर वह बड़े ही हैरान हुए। क्योंकि वहाँ तो भगवान् अकेले बैठे हुए थे। जो तीस भिक्षु उनके साथ यहाँ तक आए थे, उनका कोई भी अता-पता नहीं था। महाहैरान आनन्द को महाआश्चर्य ने घेर लिया। एक बार नहीं कई बार उन्होंने अपनी आँखें मली। पर उन्हें भरोसा न आया। वह सोचने लगे कि आखिर हुआ क्या है ? इस कक्ष में दरवाजा तो एक ही है। और उस दरवाजे पर वह स्वयं बैठे हुए हैं। उनके सामने तो कोई भी कहीं नहीं निकला।

थक-हार कर उन्होंने भगवान् से ही इस भेद को पूछने का निश्चय किया। थोड़ी हिचकिचाहट, थोड़े भय और भारी श्रद्धा से सकुचते-सहमते हुए उन्होंने प्रभु से प्रकट रूप में पूछा- भन्ते! कुछ भिक्षु आपसे मिलने आए थे। यह क्या चमत्कार! वे कहाँ हैं ? बाहर तो उनमें से कोई निकला नहीं, क्योंकि बाहर द्वार पर मैं बैठा हूँ। निकलने का अन्य कोई द्वार इस कक्ष में है नहीं। इसलिए वे बाहर किसी भी तरह जा नहीं सके। तब आखिर वे गए कहाँ ?

आनन्द की इस प्रश्न शृंखला पर बुद्ध विहंसे। फिर बड़ी ही कृपापूर्ण दृष्टि आनन्द पर डालते हुए बोले- वे गए आनन्द, वे चले गए, वे आकाश मार्ग से चले गए पुत्र। चकित आनन्द से संभ्रमित होते हुए कहा, प्रभु आप मुझे इस तरह आश्चर्यों के चक्र में न डालें। भगवान् आप मुझे उलझाएँ मत। पहेलियाँ न बुझाएँ, सीधी-सीधी भाषा में कहें, वे गए कहाँ ? क्योंकि मैं द्वार पर बैठा हूँ और पूरा सजग हूँ।

वत्स चकित मत हो, तुम्हें चौंकने की जरूरत नहीं है। आनन्द- वे सबके सब भीतर के आकाश से समाधि में उतर गए। इस अन्तर आकाश में उतरने के लिए किसी और द्वार से जाने की जरूरत नहीं है। भगवान् अपने भिक्षुओं को यह कथा कह रहे थे, तभी कक्ष के द्वार से आकाश में हंस उड़ते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखकर भगवान् ने कहा- देखा आनन्द, पुत्र द्वार के बाहर देखो जैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकाश में हंस उड़ रहे हैं, ऐसे ही वे भी उड़ गए। आनन्द ने पूछा, तो क्या वे उड़कर हंस हो गए? गए कहाँ? अपनी आध्यात्मिक मुस्कान की सघनता के साथ शास्ता ने कहा- वे परमहंस हो गए, आनन्द।

फिर आश्चर्य से जड़ीभूत हुए आनन्द से यह गाथा कही-

हंसादिच्चपथे यंति आकासे यंति इद्धिया।
नीयंति धीरा लोकम्हा जेत्वा मारं सवाहिनी॥

'हंस सूर्यपथ से जाते हैं। ऋद्धि से योगी भी आकाश में गमन करते हैं। इसी तरह धीर पुरुष सेनासहित मार को पराजित कर लोक से निर्वाण में चले जाते हैं।'

इस धम्मगाथा को सुनने के बाद भी आनन्द की समझ में इसका रहस्य न आया। तब भगवान् ने अपने कथन को और भी स्पष्ट करते हुए कहा- जैसे हंस आकाश में उड़ते हैं, ऐसा एक और आकाश है- अन्तर का आकाश, जहाँ परमहंस उड़ते हैं। जैसे हंस आकाश में उड़ते हैं, दूर की यात्रा करते हैं, ऐसे परमहंस अन्तर के आकाश में उड़ते हैं। वे शैतान की सारी सेना को मारकर, लोक से निर्वाण को चले जाते हैं।

लेकिन भगवान् उन भिक्षुओं के शरीर का क्या हुआ? प्रश्न के उत्तर में भगवान् बोले, वे भिक्षु महायोगी थे आनन्द। जब उनकी अन्तर्चेतनायें महानिर्वाण में लीन होने लगीं, तब उन्होंने योगबल से पंचभूतों की अपनी देहों को योगबल से विघटित कर दिया। योगीजनों के ऐसे क्रियाकलापों पर चकित नहीं होना चाहिए। बस उनकी तप:पूत देहों के अवशेष के रूप में यह सब ओर पद्मगन्ध बिखरी है। इसी में उनके महानिर्वाण की अनुभूति करो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन का अपने मूल स्रोत से जा मिलना

भगवान् बुद्ध श्रेष्ठी अनाथपिण्डक के प्राणों में बसते थे। भगवान् की भक्ति को ही वे अपना भाग्य मानते थे। उनकी चिन्तन-चेतना में पल-पल अपने आराध्य के लिए कुछ नया कर गुजरने की कोंपलें फूटती थीं। 'देकर भी करता मन-दे दूँ कुछ और अभी'- यही उनका जीवन दर्शन था। प्रभु की देशना के अनुसार उन्होंने सत्कर्म और सत्प्रवृत्ति के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। अनाथों का सच्चा सहारा बनकर उन्होंने अपने नाम को सार्थक कर दिया था। उनके सत्कार्यों की यशप्रभा से दिगन्त अलोकित हो रहे थे। प्रतिष्ठा और सम्मान की तो जैसे बाढ़ थी उनके जीवन में। फिर भी जीवन में कहीं कुछ ऐसा था जो रह-रह कर कसक उठता था। भावनाओं में भरी टीस उन्हें रह-रहकर बेचैन कर देती थी।

सब सुखों के बीच दुःख का एक ही कंटक था- उनका पुत्र 'काल'। काल की प्रवृत्तियाँ सामान्य धनिक पुत्रों की भाँति थी। भोग उसे भाते थे। सुख उसे लुभाता था। धन का तो जैसे वह दीवाना था। थोड़े से पैसों के लिए वह कोई भी जोखिम उठाने के लिए तैयार हो जाता था। काल की यह मनोदशा अनाथपिण्डक को तनिक भी नहीं भाती थी। वह उसे अपने यश चन्द्र के मध्य कलंक मानते थे। 'काल' को वशीभूत करने के लिए वह अनेकों उपाय करते थे। पर हर बार उन्हें असफलता ही हाथ लगती थी। एक बार उन्होंने जेतवन में ठहरे हुए भगवान् तथागत को अपनी वेदना सुनायी। अपने अनुगत भक्त की पीड़ा के स्पर्श से भगवान् सोच में पड़ गए।

दो पलों के नीरव मौन के अनन्तर उन्होंने कहा- अनाथपिण्डक, पुत्र की प्रवृत्तियों से तुम दुःखी न हो। उसकी कमजोरियों को ही उसके रूपान्तरण का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माध्यम बनाओ। तुम्हारे पुत्र 'काल' का बोधिकाल अब निकट ही है। गूढ़ रहस्य में लिपटी प्रभु की इन बातों को अनाथपिण्डक ढंग से समझ न सके। उनके नेत्रों में प्रश्न चिह्न वैसे ही अमिट बने रहे। भगवान् ने उनकी मनोदशा को भाँपकर कहा- चिन्तित होने की जरूरत नहीं है। यदि 'धन' तुम्हारे पुत्र की कमजोरी है, तो इसे ही उसके भाव परिवर्तन का माध्यम बनाओ। शास्ता का यह संकेत श्रेष्ठी अनाथपिण्डक की समझ में आ गया।

वापस आने पर उन्होंने 'काल' को अपने समीप बुलाया। प्रीतिपूर्वक उसकी कुशल-क्षेम पूछने के बाद उन्होंने कहा- पुत्र! मैं तुम्हें सौ स्वर्ण मुद्राएँ देना चाहता हूँ। पिता के इन वचनों ने काल को चौंका दिया। वह सोचने लगा कि आखिर आज इन्हें क्या हुआ है? कहाँ तो ये हमेशा मितव्ययिता का पाठ पढ़ाते थे। कहाँ आज सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने की बात कर रहे हैं। पुत्र को चकित करते हुए अनाथपिण्डक ने आगे कहा- परन्तु तुझे भगवान् बुद्ध के वचनों को सुनने जाना पड़ेगा। पिता के इस वाक्य ने काल को किंचित मायूस किया। परन्तु सौ स्वर्ण मुद्राओं का लोभ उस पर भारी पड़ा और वह तैयार हो गया।

अब तो भगवान् का संग उसका नित्यक्रम बन गया। प्रतिदिन वह तथागत को सुनने जाने लगा। लेकिन अभी भी उसके अन्तःकरण पर स्वर्ण मुद्राओं की चमक छायी थी। रोज घर लौटने पर वह अपने पिता से कहता- कहाँ है मेरी सौ स्वर्ण मुद्राएँ? पहले अपनी स्वर्णमुद्राएँ गिनवाता, बाद में भोजन करता। उसको बुद्ध के वचनों से कोई मतलब नहीं था। वह तो जब उन्हें सुनने बैठता था, तब भी अपनी स्वर्णमुद्राओं का हिसाब करता रहता था। इस तरह लगभग एक मास बीत गया। एक दिन अनाथपिण्डक ने उसे कहीं अधिक चौंकाते हुए कहा- पुत्र अब मैं तुम्हें हजार स्वर्णमुद्राएँ देना चाहता हूँ। तो क्या मुझे किसी और का भी उपदेश सुनने जाना होगा, काल ने पिता से पूछा। नहीं पुत्र! अनाथपिण्डक ने उसे आश्वस्त किया। बस तुम्हें प्रभु की वाणी को सुनकर याद करना होगा और मेरे सामने दोहराना होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काल को यह काम बड़ा उलझन भरा लगा। पर स्वर्णमुद्राओं की संख्या भी तो दस गुना होने वाली थी। इतना बड़ा लालच भला वह कैसे छोड़ देता? उसने 'हाँ' कर दी। अगले दिन जब बुद्ध को सुनने गया तो उसे उनके वचनों को बड़े ही ध्यान से सुनना पड़ा। क्योंकि अब तो सारी बातें याद रखनी थी। याद रखने के लिए एक-एक बात पर ध्यान देना जरूरी था। कई दिनों तक यह क्रम चलता रहा। बुद्ध के वचनों पर ज्यों-ज्यों वह ध्यान जमाता त्यों-त्यों उसकी अन्तश्चेतना में स्वर्णमुद्राओं की चमक फीकी पड़ती जाती।

आखिर में एक दिन वह भी आया, जब उसकी चेतना भगवान् की कृपा से आलोकित हो गयी। वह सदा-सदा के लिए सम्पूर्ण रूप से बुद्धत्व में समा गया। उस सांझ वह घर नहीं लौटा। पुत्र को कहीं कुछ हो तो नहीं गया। इस सोच में घबराया हुआ अनाथपिण्डक भगवान् के पास आया। वहाँ पहुँचकर देखा कि 'काल' एक ओर आँख बन्द किये बैठा है। पुत्र को झकझोरते हुए उसने कहा- अरे घर चल, हजार स्वर्णमुद्राएँ तेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। पिता के इन वचनों के उत्तर में पुत्र ने कहा- अब उन्हें आप ही सम्हाल कर रखो। जो पहले मुद्राएँ दी थी- उन्हें भी वापस ले लो। अब इन सबकी कोई जरूरत नहीं रह गयी।

अनाथपिण्डक ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, पर उस पर कोई असर नहीं हुआ। लालच के सारे तीर बेकार चले गए। श्रेष्ठी को यही समझ में नहीं आ रहा था कि उसके पुत्र को क्या हो गया है। वह भागे हुए शास्ता के पास गए और उनसे कहा- भगवान् यह क्या रहस्य है? मैं वर्षों से आपको सुन रहा हूँ और मेरे पुत्र ने तो अभी कुछ ही दिनों से आपको सुना है। और वह भी धन के लालच में सुना है। स्वर्णमुद्राओं के लोभ में सुना है। बुद्ध ने कहा- तो क्या हुआ- उसने सुना तो है, किसी भी कारण सुना हो, मेरे वचनों की गहराई में पैठने की उसने कोशिश की है, तुमने तो अब तक मुझे सुना ही नहीं है। अब तक जो भी किया है तुमने- वह केवल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने यश विस्तार के लिए किया है। अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए किया है।

जबकि तुम्हारे बेटे ने मेरे वचनों की गहराई में उतरने की कोशिश की है और जिसने मुझे सुना है- वह तो मेरा हो गया। तुम्हारा बेटा भी मेरा हो गया है। उसे अब तुम चक्रवर्ती की भी सम्पत्ति दो, तो वह लौटने वाला नहीं है। तुम उसे देवलोक का सम्राट बना दो, इन्द्र बना दो, तो भी वह लौटने वाला नहीं है। तुम तीनों लोकों की सारी सम्पदा इसके चरणों में रख दो, तो भी यह लौटने वाला नहीं है। इस पर अनाथपिण्डक ने कहा- भगवान् इसे हो क्या गया है? तो बुद्ध ने कहा यह स्त्रोतापन्न हो गया है। यह ध्यान की सरिता में उतर गया है। इस घड़ी भगवान् ने यह धम्मगाथा कही-

पथव्या एक रज्जेन सग्गस्स गमनेन वा।
सब्बलोकाधिपच्चेन सोतापत्ति फलं वरं॥

'पृथ्वी का अकेला राजा होने से, यह स्वर्ग का गमन करने से अथवा सभी लोकों का अधिपति बनने से भी स्त्रोतापत्ति का फल श्रेष्ठ है।' भगवान् की इन बातों को सुनकर अनाथपिण्डक को यह स्पष्ट हो गया कि जीव का अपने मूल स्त्रोत में जा मिलने से श्रेष्ठ अन्य कुछ भी नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रद्धा की परिणति

वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ थी। सोच नहीं पा रही थी कि इस समय अपने को कैसे बचाए? उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में विवशता झिलमिला उठी। गौरवर्णीय सुन्दर चेहरा विवर्ण हो गया। शायद कातर अन्तर्मन की टीस बरबस ही चेहरे पर छलक गयी। अस्तित्त्व के रोम-रोम में पीड़ा भरी पुकार छाने लगी। हृदय में उफनता प्रभु प्रेम और भी प्रगाढ़ हो गया। भगवान् तथागत के इस भक्तिपूर्ण स्मरण ने उसे थोड़ा धीरज दिया। कहीं गहरे में साहस की संवेदना मद्धम गति से प्रवाहित होने लगी। उसने भरी-भरी आँखों से अपने पति-श्वसुर और सास की ओर देखा। ये तीनों ही एकमत थे। और जबरदस्ती अपने अधिकारों की दुहाई देकर, उसके कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाकर उसे विवश कर रहे थे।

यह विवशता उसे सहन नहीं हो पा रही थी। भला ऐसे कामों को वह किस तरह करे, जो किसी भी भाँति उचित नहीं है। पर यह तो उसकी जिन्दगी की रोजाना की आफत थी। हर दिन उसके पति, सास अथवा फिर श्वसुर किसी ढोंगी साधु, या भयानक वेशभूषा वाले किसी तांत्रिक को ते आते और उसे विवश करते कि वह उनकी सेवा करे। इन साधुओं के ढोंग, तांत्रिकों की वासना भरी दृष्टि से उसे चिढ़ थी। वह नहीं समझ पाती थी कि आखिर वह क्यों इनकी सेवा करे? क्यों वह अपने देह-मन को इनकी वासना भरे ढोंग के चंगुल में फसने दे? उसने अपनी ससुराल के सदस्यों को भाँति-भाँति से समझाने की कोशिश की, पर उन पर जैसे कोई असर ही नहीं था।

वे तो सब के सब बस चमत्कारों के मोहपाश में बंधे थे। चमत्कारों में ही उन्हें जीवन की सार्थकता लगती थी। चमत्कार ही उनकी श्रद्धा, भक्ति एवं भावनाओं के केन्द्र बिन्दु थे। वह जब कभी उन्हें भगवान् तथागत और उनके जीवन दर्शन के बारे में बताती- सबके सब मिलकर उसकी हँसी उड़ाते। पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह कैसे भूल पाती प्रभु को। करूणा के अवतार तथागत तो उसके प्राणों में बसे थे। उसका अपना बचपन भगवान् की गोद में गुजरा था। उसने माँ के दूध के साथ प्रभु का प्रेम भी पिया था। बचपन में जब कभी वह प्रभु से पूछती- भगवान्! मुझे कभी आपसे अलग तो नहीं होना होगा ? तथागत मुस्कराते हुए उत्तर देते- पुत्री ! बिछुड़ते तो केवल शरीर हैं। भावनाएँ तो सदा ही घुली-मिली रहती हैं। श्रद्धा समय और स्थान की दूरी को पाट देती है। श्रद्धा गहरी हो तो अलगाव सम्भव ही नहीं।

बचपन की ये बातें आज भी उसे पल-पल प्रभु में भिगोती रहती थी। वह भगवान् के परम भक्त श्रेष्ठी अनाथपिण्डक की पुत्री थी। पिता के साथ उसे भगवान् का अन्तरंग सान्निध्य मिला था। भगवान् ने ही उसे चूलसुभद्दा नाम दिया था। भगवान् के रूप में कोहिनूर की चमक देखी थी, अब भला सस्ते कांच के टुकड़ों की तरह ये ढोंगी साधु, तमाशेबाज मदारी उसे किस तरह लुभाते। जिसे भगवान् बुद्ध की गोद मिली हो उसे भला तांत्रिकों के चमत्कारों का चक्रव्यूह कैसे फँसाता। जिसने परम पवित्रता की सुगन्ध का स्वाद लिया हो, उसे भला दुर्गन्धित वासनाएँ कैसे आकर्षित कर पाती। पर उसकी यह भावदशा ससुराल के लोगों को समझ में न आती थी।

उग्रनगर वासी उग्गत सेठ के पुत्र से उसका विवाह हुआ था। उग्गत सेठ मिथ्यादृष्टि था। वह पाखण्डियों का आदर करता था। धर्म में नहीं चमत्कारों में उसकी श्रद्धा थी। मदारियों, जादूगरों और धूर्तों का उसके घर में भारी सम्मान था। इन तरह-तरह के ढोंगियों के आने पर वह चूलसुभद्दा को उनकी सेवा करने के लिए कहता। वह सम्यक् दृष्टि वाली युवती किसी न किसी तरह इन ढोंगियों की एकान्त सेवा को टाल जाती। लेकिन उसका यह व्यवहार उसके ससुर को बहुत कष्टकर लगता। पति के भी अहंकार को चोट लगती। सास भी उससे परेशान रहती। सारा का सारा परिवार ही पाखंडियों के जाल में था।

आज जब चूलसुभद्दा ने उनके अतिआग्रह के बावजूद काले कपड़े पहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खतरनाक डाकू की तरह दिखने वाले तांत्रिक की सेवा से मना किया तो वे सबके सब आगबबूला हो उठे। उसके पति ने उसे जोर का धक्का देते हुए कहा- तू सदा हमारे साधुओं का अनादर करती है। सो बुला अपने बुद्ध को और अपने साधुओं को, हम भी तो देखें उन्हें, क्या चमत्कार है उनमें। और देखें क्या ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ हैं।

चूलसुभद्दा ने पति की ऐसी बात सुनकर, जेतवन की ओर प्रणाम करके आँसू भरी आँखों, भक्ति से भरे हृदय के साथ कहा- भंते, कल के लिए पाँच सौ भिक्षुओं के साथ मेरा भोजन स्वीकार करें। मुझे भुला नहीं दिया मेरे आराध्य। मेरी पुकार सुन रहे हैं न भगवन्। मैं हूँ आपकी बेटी चूलसुभद्दा। और फिर उसने तीन मुट्ठी जुही के फूल आकाश की ओर फेंके। पति और उसका सारा परिवार उसके इस पागलपन पर खूब जोर से हँसा। क्योंकि जेतवन वहाँ से कई मील दूर था, जहाँ भगवान् ठहरे थे। लेकिन भगवान् की भक्ति से भरी चूलसुभद्दा तथागत और भिक्षु संघ के स्वागत की तैयारियों में जुट गयी।

जिन क्षणों में चूलसुभद्दा ने भगवान् को पुकारा था, उस समय भगवान् जेतवन में प्रवचन कर रहे थे। वह बोलते-बोलते बीच में रुक गए और कहने लगे- भिक्षुओं, जुही के फूलों की गन्ध आती है न। और उन्होंने उग्रनगर की ओर दृष्टि उठायी। तभी अनाथपिण्डक ने खड़े होकर कहा, भन्ते कल के लिए मेरा भोजन स्वीकार करें। भगवान् ने कहा- गृहपति, मैं कल के लिए पुत्री चूलसुभद्दा का निमंत्रण स्वीकार कर चुका हूँ। उसने जुही की फूलों की सुगन्ध के साथ अभी-अभी आमंत्रण भेजा है। चकित श्रेष्ठी अनाथपिण्डक कहने लगे- भंते। चूलसुभद्दा तो यहाँ से मीलों दूर है, उसने कैसे आपको आमंत्रित किया है? मैं तो उसे यहाँ कहीं भी देख नहीं पा रहा।

भगवान् हँसे और उन्होंने यह धम्मगाथा कही-

दूरे संतो पकासेति हिमवंतो व पब्बता।
असंतेत्थ न दिस्संति रत्तिखित्ता यथासरा॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संत दूर होने पर भी हिमालय पर्वत की भाँति प्रकाशमान होते हैं। और असन्त पास होने पर भी रात में फेंके हुए बाण की भाँति नहीं दिखलाई देते।

अपने इस कथन को और भी स्पष्ट करते हुए भगवान् ने कहा- गृहपति, दूर रहते हुए भी सत्पुरुष सामने खड़े होने के समान प्रकाशित होते हैं। मैं अभी सुभद्रा के सामने ही खड़ा हूँ। श्रद्धा बड़ा सेतु है। वह समय और स्थान की सभी दूरियों को जोड़ने में समर्थ है। वस्तुतः श्रद्धा के आयाम में समय और स्थान का अस्तित्त्व ही नहीं है। अश्रद्धालु पास होकर भी दूर और श्रद्धालु दूर होकर भी पास होते हैं।

अनाथपिण्डक और भिक्षुओं को श्रद्धा की महिमा का बोध कराकर भगवान् भिक्षुओं के साथ उग्रनगर की ओर चल पड़े। निश्चित समय में चूलसुभद्दा के सास-ससुर और पति ने भगवान् तथागत और उनके भिक्षुओं को अपने द्वार पर उपस्थित देखे। भगवान् के दर्शन मात्र से उनकी मलीनता धुल गई। उन्हें साधुता का प्रत्यक्ष बोध हो गया। भगवान् ने चरणों पर माथा नवाती चूलसुभद्दा से कहा- पुत्री! तू मुझसे कभी दूर नहीं है। मैं सदा-सदा मेरे पास हूँ। जिसके पास तेरी जैसी श्रद्धा है, उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गलत प्रव्रज्या में रमण दुःखदायी है

बसन्त की सुरम्यता प्रकृति में चहुँ ओर छायी थी। रंग-बिरंगे पुष्पों व नव पल्लवों ने मिलकर धरती को देवों के लिए भी आकर्षक बना दिया था। आम्रमञ्जरी पर विहार करते भ्रमर नित नए गीतों की सृष्टि रचाते थे। कोयल का कल कूंजन तो जैसे देवलोकवासियों को धरा आगमन के लिए मुखर निमंत्रण देता था। इस प्राकृतिक आकर्षण में एक अलौकिक तत्त्व भी समाया हुआ था। भगवान् तथागत के पावन संस्पर्श से वैशाली का यह आम्रवन ही नहीं समूचा प्रकृति परिमण्डल आध्यात्मिक आभा से जगमगा उठा था।

भगवान् इन दिनों अपने भिक्षु संघ के साथ वैशाली आये हुए थे। वह वैशाली नगर से थोड़ी दूर पर एक आम्रवन में ठहरे हुए थे। वज्जी संघ की राजधानी उन दिनों अपनी समृद्धि, वैभव एवं शोभा के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष में विख्यात थी। भगवान् के चरण रज की छुअन ने इसकी समृद्धि को पावनता के अनुदान दे डाले थे। जिनके भी अन्तःकरण में थोड़ी सी भी आध्यात्मिकता का अंकुर था, उन्हें भगवान् का आगमन प्राण संजीवनी की भाँति लगा। तथागत की भगवत्ता की निर्मल लहरें, जन-जन को पावन बनाने में पूर्ण समर्थ थीं।

प्रभु का सान्निध्य सभी के लिए सब भाँति अलौकिक था। मानव ही नहीं पशु-पक्षी, यहाँ तक जड़ प्रकृति भी अपने में एक अलौकिक परिवर्तन की अनुभूति कर रही थी। जिन्होंने अनुभव किया, उन्होंने कहा कि भगवान् का सुपास पाकर, सूखे वृक्ष पुनः हरे हो गए थे। जो जीवन वीणाएँ सूनी पड़ी थी, उनमें संगीत जाग पड़ा था। जो झरने बन्द हो गए थे, या मन्द पड़ गए थे, वे पुनः वेगपूर्वक बहने लगे। मरुस्थल अपने आप ही मरुद्यान में बदल गए। हालांकि यह सब देखा उन्होंने ही, जिनके पास अन्तर्दृष्टि थी, जो प्रकृति के अन्तराल में सरस धार की भाँति बह रहे परिवर्तनों को देख सकते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान् का दिव्य स्वरूप मात्र चर्म चक्षुओं से समझ में आने वाला न था। बाहर के कानों के सहारे यह परम दिव्य संगीत नहीं सुना जा सकता था। प्रभु के सान्निध्य में प्रकृति जो परमोत्सव मना रही थी, वह तो परमात्म दशा का परम योग था। मात्र समाधि में ही इन स्वरों को सुना जा सकता था। समाधि की भावदशा में ही इस महोत्सव को देखा जा सकता था।

जो इसे देख सकते थे, वे आह्लादित थे। जो सुन सकते थे वे मस्त हो रहे थे। जो आह्लादित थे, जो आनन्द उठा रहे थे, उनके लिए भगवान् के सान्निध्य का स्वर्ग रोज-रोज अपने नए द्वार खोल रहा था। पर सभी के भाग्य में यह महासुख नहीं था। कुछ ऐसे भी थे जिन्हें न कुछ दिखाई पड़ता था, न सुनायी पड़ता था। वे तृषित आए थे और प्रभु चेतना के क्षीर सागर के सामीप्य में भी तृषित ही थे। वे आकर भी नहीं आए थे। उन्हें मिलकर भी नहीं मिला था।

भगवान् आते हैं- हर युग में आते हैं। उनका आगमन अपने भक्तों की भाव चेतना के उन्नयन के लिए होता है। वह अपने प्रेम के सरस सुधा की उन्मुक्त वर्षा करते हैं, पर इसमें भीगते वही हैं, जिन्होंने अपने अस्तित्त्व को प्रभु में विसर्जित कर दिया है। जो अभी भी अपने अहं की चादर ओढ़े हैं, जिन्हें अभी अपनी वासना की कीचड़ धोने में संकोच हो रहा है, वे कोरे के कोरे रह जाते हैं। भिक्षु वज्जीपुत्त इन्हीं अभागों में से एक था। भगवान् के महाबोधि सागर के किनारे पहुँच कर भी वह उनकी भावचेतना से अछूता था। उसकी आँखें देख रही थी, कान सुन रहे थे, पर वह नहीं जो अमृतमय था।

उसके कानों में आम्रवन से दूर वैशाली नगर में चल रहे राग-रंग के स्वर गूँज रहे थे। उसकी आँखें वैशाली की नर्तकियों के चर्म सौन्दर्य को देखने के लिए व्याकुल थी। वैशाली में इन दिनों मदनोत्सव की धूम थी। रास रंग की छटा वहाँ बिखरी थी। वासना के अनेक रंग-अनगिनत रूप वैशाली के आंगन में अठखेलियाँ कर रहे थे। युवक-युवतियों का उन्मुक्त विहार विलास क्रीड़ाओं को नित नए आयाम दे रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भिक्षु वज्जीपुत्त की आँखें इसे देखने के लिए तरस रही थी। उसके कानों को इस विलास संगीत को सुनने की व्याकुलता थी। उसका अन्तःकरण विह्वल था इस रास-रंग में उन्मुक्त होकर भागीदार बनने के लिए। उस रात्रि में तो उसकी यह व्याकुलता-विह्वलता चरम पर जा पहुँची। यह मदनोत्सव की विलास रात्रि थी। फाल्गुन मास का चन्द्रमा जन-मन में अनेकों विचार तरंगें सम्प्रेषित कर रहा था।

भगवान् तथागत के सान्निध्य में होते हुए भी वज्जीपुत्त विकल था। नगर से आती संगीत और नृत्य की स्वर लहरियाँ उसे बेचैन किए थी। वह अभागा भिक्षु भगवान् के पावन संगीत को अभी तक सुन नहीं सका था। उसकी आँखें भगवान् के अन्तस्तल से उठते हुए प्रकाश पुञ्ज को अब तक नहीं देख सकी थी। लेकिन वैशाली नगर में जल रहे दीयों की टिमटिमाहट उसे साफ नजर आ रही थी। राजधानी में हो रहे राग-रंग और उससे आती स्वर लहरियों को वह साफ-सुन रहा था। गाजे-बाजों की इन आवाजों ने उसे उदास कर दिया। वह दुःखी होकर सोचने लगा कि मैं बेकार ही भिक्षु बनकर जीवन गँवा रहा हूँ। सुख तो संसार के विलास में है। देखो तो सही लोग कैसे मजे में हैं। समूची वैशाली आज उत्सव मना रही है? मैं यहाँ पड़े-पड़े केवल दुःखी हो रहा हूँ। संन्यास लेकर मैंने केवल दुःखों को निमंत्रण दे दिया।

भिक्षु की विकृत भावदशा में भला मार कहाँ चूकने वाला था। वह वासना भरी कल्पनाओं के सहारे वज्जीपुत्त के मन में घुस गया। मार ने उसे भरपूर उकसाया, बहुतेरे सब्जबाग दिखाए। अनेकों मोहक सपनों का महल खड़ा किया। मार के बहकावे में आकर वह सोचने लगा, बहुत हो चुका, मैं कल सुबह ही भाग जाऊँगा। संसार ही सत्य है, मैं बेकार ही यहाँ पड़ा हुआ तड़फ रहा हूँ। यहाँ रखा भी क्या है।

लेकिन सुबह वह चुपके से उठ कर भाग पाता, इससे पहले ही भगवान् ने उसे बुलवा लिया। भगवान् के संदेश को पाकर वह चौंक गया। यह पहला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मौका था, जब तथागत ने उसे बुलाया था। वह थोड़ा डरा, मन में शंका उठी। मन में यह भी आया कि मैंने तो अपने मन की बात किसी को बतायी नहीं है। शायद उन्होंने ऐसे ही बुलाया होगा।

पर भगवान् ने जब उससे मन की सारी कथा कह सुनायी, तो उसे भरोसा ही न आया। एक-एक बात जो मार ने उसे सुझायी थी, एक-एक स्वप्न जो उसने रात भर देखे थे और उसका भागने का निर्णय भगवान् ने सब कुछ कह सुनाया। भगवान् की करूणा ने उसके मन के मैल को पल भर में धो दिया। मन की निर्मलता को पाते ही उसे अपनी सोच पर भारी पछतावा हुआ। भगवान् के पास वैसे तो वह वर्षों से था, पर आज उसे सच्चा सत्संग मिला। उस दिन उसे भगवान् बुद्ध की वीणा के स्वर सुनायी दिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

भगवान् ने उससे ये धम्मगाथाएँ कही-

दुप्पबज्जं दुरभिरमं दुरवासा धरः दुखा।
दुक्खो समान संवासो दुक्खानुपतितंद्धयू।
तस्मा न च अद्धग् सिया न च दुक्खानुपतितो सिया॥
सद्धो सीलेन समन्वो यसोभोग समपितो।
यं यं पदे सं भजति तत्य तत्येव पूजितो॥

गलत प्रव्रज्या में रमण करना दुष्कर है। न रहने योग्य घर में रहना दु:खद है। असमान या प्रतिकूल लोगों के साथ रहना दुखद है। इसलिए संसार के मार्ग का पथिक न बने और न दु:खी हो।

श्रद्धा और शील से सम्पन्न तथा यश और भोग से मुक्त पुरुष जहाँ कहीं जाता है, सर्वत्र पूजित होता है।

भगवान् की इन धम्म गाथाओं को आत्मसात कर भिक्षु वज्जीपुत्त के लिए उस दिन संसार झूठ हुआ, परिव्राजक जीवन सत्य हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहंकार गंदगी है, मल है

अनुभव से सने मीठे बोल सुनने वालों की भावनाओं में घुल रहे थे। श्रावस्ती नगर और आस-पास के गाँवों के लोग अपने आपको धन्य भागी समझ रहे थे। बड़भागी लग रहा था उन्हें अपना मानव जीवन। भगवान् बुद्ध के इन दोनों शिष्यों - सारिपुत्र और मौदगलायन के वचनों की पीयूष वर्षा उनकी अन्तर्चेतना की परतों को एक रहस्यमय रस से भिगो रही थी। तथागत इन दिनों श्रावस्ती में ठहरे थे। भिक्षु संघ के सदस्य सूर्य किरणों की भाँति चहुँ ओर उनकी प्रभा बिखेर रहे थे। भगवान् के आने से श्रावस्ती में जैसे एक आलोक-लोक बस गया था।

भिक्षु संघ के इन सदस्यों में सारिपुत्र और मौदगलायन की भाव दशा अपूर्व थे। ये दोनों भगवान् में सम्पूर्णतया अर्पित थे। भगवान् की भाव चेतना भी उनमें पूर्णतया समाहित थी। सभी नगर जन आस-पास के ग्रामवासी उनकी प्रशंसा कर रहे थे। अपूर्व था रस उनकी वाणी में, अपूर्व था भगवान् के उन दोनों शिष्यों का बोध; अपूर्व थी उनकी समाधि। उनके वचन सभी को जागृति का संदेश देते थे। सोये हुओं को जगाते थे, मृतकों को जीवनदान देते थे। उनके पास बैठना अमृत सरोवर में डुबकी लगाना था। ऐसे में सभी के मनों में प्रशंसा का उफान उमड़ना स्वाभाविक था।

निरन्तर उमड़ रही प्रशंसा की ये फुहारें जहाँ जिज्ञासुओं को सुख पहुँचा रही थी, वहीं लालुदाई को कंटकों की भाँति चुभ रही थी। उसे यह सब असह्य लग रहा था। ईर्ष्या की असह्य जलन से विकल हो वह सोचने लगा, आखिर ऐसा क्या है सारिपुत्र और मौदगलायन में जो उसके पास नहीं है। वह तो इन दोनों से तेज आवाज में बोल सकता है। उसके पास किसी से कम ज्ञान नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईर्ष्या की लपटों ने उसके मन को इतना विकल एवं विह्वल बना दिया कि उसे सत्य भावनाएँ दिखाई न पड़ी।

ईर्ष्या की झुलसन से उसके अहंकार का नाग फुफकार उठा। क्रोध की विषधाराएँ बह उठीं। उसने कभी किसी को अपने से बुद्धिमान माना ही न था। यद्यपि वह भगवान् के चरणों में झुका करता था, पर केवल दिखावे के लिए। अपने भीतर तो वह भगवान् को भी स्वयं से श्रेष्ठ नहीं मानता था। उसका अहंकार अति प्रज्वलित अहंकार था। मौका मिलने पर वह प्रकारान्तर से परोक्ष रूप से भगवान् की भी आलोचना-निन्दा करने से नहीं चूकता था। कभी आज भगवान ने ठीक नहीं कहा, कभी कहता-भगवान् को ऐसा नहीं कहना था, कभी कहता- भगवान् होकर ऐसा नहीं कहना चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने सद्गुरु की निन्दा-आलोचना में रस लेने वाला लालुदाई भला ज्येष्ठ गुरु भ्राताओं की प्रशंसा किस तरह सहन कर पाता। एक दिन वह उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ कई नगर जन सारिपुत्र और मौदगल्लायन की प्रशंसा कर रहे थे। लालुदाई ने इन नगर जनों को तेज आवाज में डाँटा - क्या बेकार की बकवास लगा रखी है तुम लोगों ने? आखिर रखा ही क्या है उन सारिपुत्र और मौदगलायन में? धर्म के वास्तविक तत्त्व से अनजान तुम लोग कंकड़-पत्थरों को हीरे समझ बैठे हो। अरे! परख करनी है तो पारखियों से पूछो। जवाहरात पहचानने हैं तो जौहरियों से पूछो। मुझसे पूछो और प्रशंसा ही करनी है तो मेरे धर्मोपदेश की करो।

लालुदाई की दबंग आवाज, उसका जोर से ऐसा कहना, नगर के लोग तो सकते में आ गए। वे सब सोचने लगे, हो न हो यह लालुदाई कुछ ज्यादा ही श्रेष्ठ समाधिसिद्ध हो। उन सबने उससे धर्मोपदेश की प्रार्थना की। लेकिन वह बार-बार टाल जाता। कभी कहता ठीक समय पर, ठीक ऋतु में बोलूँगा। ज्ञानी कभी और हर किसी को उपदेश नहीं करता। पहली बात तो यह कि सुनने वाले में पात्रता चाहिए। अमृत यूँ ही हर पात्र में नहीं डाला जाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ये सभी पते की बातें थीं। लोगों में प्रभाव बढ़ता गया। अपना प्रभाव जमाने के लिए वह यह भी कहता - ज्ञानी मौन रहता है। तुमने पढ़ा नहीं है शास्त्रों में कि जो बोलता है, वह जानता कहाँ है? जो चुप रहता है, वही जानता है। परमज्ञानी क्या बोलते हैं। नगरवासियों में उसकी धाक बढ़ती गयी। सत्य ही उनमें उत्सुकता भी पैदा हो गयी। इस बीच लालुदाई अपना व्याख्यान् तैयार करने में लगे थे।

जब व्याख्यान् शब्द-शब्द रट गया तो एक दिन धर्मासन पर आसीन हुए। सभी नगर जन, आसपास के ग्रामीण लोग उन्हें सुनने के लिए आये। लालुदाई ने तीन बार बोलने की चेष्टा की, पर अटक-अटक गए। बस सम्बोधन ही निकलता - उपासकों! और वाणी अटक जाती। कई बार खाँसा-खखारा पर कुछ भी न सूझा। पसीना-पसीना हो गए। चौथी बार कोशिश की तो सम्बोधन भी न निकला। सब सूझ-बूझ खो गयी। रटा हुआ याद किया पर याद न आया। हाथ-पाँव काँपने लगे, घिग्घी बँध गयी। अब तो लोगों के सामने पोल खुल गयी।

लालुदाई मंच छोड़कर भागे। सभी नगर जनों ने उनका पीछा किया। सब के सामने यह सच्चाई उजागर हो गयी थी कि यह सारिपुत्र और मौदगलायन की प्रशंसा नहीं सुन सकता। भगवान् तक की आलोचना करता रहता है और खुद को कुछ आता-जाता नहीं है। नगरवासियों के आक्रोश से घबराकर भागते हुए लालुदाई मल-मूत्र के एक गड्ढे में जा गिरे और गन्दगी से लिपट गए। उनकी यह दशा देखकर नगरवासी हँसते हुए अपने घरों को वापस चले गए।

भगवान् के पास जब यह खबर पहुँची तो उन्होंने उपस्थित भिक्षुओं से ये धम्मगाथाएँ कहीं-

असज्झायमला मंता अनुट्ठानभला घरा।
मलं वण्णस्स कोसज्जं पमादो रक्खतो मलं॥
ततो मला मलंतरं अविज्जा परमं मलं।
एतं मलं पहत्वान निम्मला होथ भिक्खवे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अर्थात् - स्वाध्याय न करना मंत्रों का मैल है। झाड़-बुहारन करना घर का मैल है। आलस्य सौन्दर्य का मैल है, प्रमाद पहरेदारों का मैल है। इन सब मैलों से भी बढ़कर अविद्या परम मैल है। भिक्षुओं इस मैल को छोड़कर निर्मल बनो।

इन धम्मगाथाओं का अन्तःरहस्य बताते हुए भगवान् ने कहा- भिक्षुओं! यह लालुदाई जन्मों-जन्मों से ऐसी ही गन्दगी में गिरता रहा है। भिक्षुओं! अहंकार गन्दगी है, मल है। भिक्षुओं! अल्पज्ञान घातक है। कोरा शब्दज्ञान घातक है, अनुभव शून्य शास्त्र ज्ञान घातक है। इस लालुदाई ने केवल थोड़े से शब्द रट लिए थे, पर अनुभव के बिना कोरे शब्द तो बस बाँधते हैं। इस लालुदाई ने धर्म की कुछ बातें सुनी जरूर थी, पर उसने ठीक से स्वाध्याय नहीं किया। यदि उसने धर्म श्रवण पर ध्यान किया होता तो ऐसी दुर्गति न होती।

तथागत ने गम्भीर होकर कहा - 'तुम सब उससे सीख लो। आलोचना सरल है-आत्मज्ञान कठिन है। विध्वंस सरल है-सृजन कठिन है। आत्मसृजन तो और भी कठिन है। अहंकार प्रतिस्पर्धा जगाता है। प्रतिस्पर्धा से ईर्ष्या पैदा होती है। ईर्ष्या से द्वेष और शत्रुता निर्मित होती है। ऐसे में अन्तर्बोध जगे भी तो कैसे? इसलिए पर चर्चा, पर निन्दा से बार-बार बचो। दूसरे का विचार ही न करो। समय थोड़ा है, स्वयं को जगा लो, बना लो। अन्यथा बार-बार मल-मूत्र के गड्ढों में गिरोगे। हे भिक्षुओं! तुम्हीं विचार करो- बार-बार गर्भ में गिरना मल-मूत्र के गड्ढे में गिरना नहीं तो और क्या है'?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदगुरु का स्मरण

राजगृह नगर प्रायः भगवान् तथागत के श्री चरणों के स्पर्श से पावन होता रहता था। नगरवासियों में भगवान् के प्रति सहज प्रीति थी। वे सब उठते, बैठते एक-दूसरे से मिलने पर 'नमो बुद्धस्स' कहकर तथागत का स्मरण कर लेते थे। इस नगर में दो बालकों की मित्रता बड़ी चर्चित थी। सुवीर और सुयश यही नाम थे उनके। किशोरवय के ये दोनों बालक भाँति-भाँति के खेल-खेला करते। अचरज की बात यह थी सुयश हमेशा जीतता था और सुवीर हमेशा हार जाता। इसमें सबसे अचरज तो इस बात का था कि जो सदा जीतता था, वह हारने वाले से सभी दृष्टियों से कमजोर था।

सुवीर ने अपने जीतने के लिए सभी उपाय किये। खेलने का ज्यादा अभ्यास किया, परन्तु सफलता न मिली। लेकिन परिणाम पहले की ही भाँति बना रहा। सुवीर को इस बात की भारी चिन्ता था कि आखिरकार सुयश के लगातार जीतने का कारण क्या है ? हाँ एक बात सुयश में बड़े ही साफ तौर पर नजर आती थी, कि वह आश्चर्यजनक ढंग से शान्त रहता था। उसमें जीत के लिए कभी कोई आतुरता नहीं झलकती थी। उसमें जीतने के लिए कभी कोई आग्रह नहीं था। वह बस खेलता था, सम्पूर्ण मनोयोग से किन्तु अनाग्रह से।

कोई फलाकांक्षा नहीं थी उसमें। इसे देखकर ऐसा लगता था, जैसे वह अपने आप में केन्द्रित है, स्वयं में ठहरा हुआ है। उसमें एक अनोखी गहराई थी। वह ओछा नहीं था, न ही उसमें कोई छिछलापन था। उसके अन्तस में जैसे कोई लौ निष्कम्प जलती थी। उसके चारों ओर एक प्रसादपूर्ण प्रभामण्डल था। शायद इसीलिए बार-बार हारने पर भी सुवीर उसका शत्रु न बन पाया था। उसकी मित्रता कायम थी। सुयश चाहे जितनी बार जीतता, परन्तु उसमें कभी कोई अहंता न आती थी। जीतना जैसे उसके लिए कुछ खास था ही नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खेलना ही उसके लिए सब कुछ था, फिर जीतें या हारें, इससे उसको कोई प्रयोजन नहीं था। फिर भी वह जीतता था।

सुवीर, सुयश के प्रत्येक व्यवहार को बारीकी से देखता था। इस क्रम में उसने देखा कि सुयश प्रत्येक खेल शुरू करने से पहले आँख बन्द करके एक क्षण को निस्तब्ध हो जाता था। कुछ इस तरह जैसे कि सारा संसार रूक गया हो। हाँ वह अपने होठों में जरूर कुछ बुदबुदाता था। जैसे कि वह कोई प्रार्थना कर रहा हो या कि फिर कोई मंत्रोच्चार करता हो अथवा अपने ईष्ट का स्मरण कर रहा हो।

अन्ततः एक दिन सुवीर ने सुयश से यह रहस्य पूछा- प्रिय मित्र, तुम खेल शुरू करने से पहले यह क्या करते हो? हर खेल शुरू होने से पहले तुम किस दुनिया में खो जाते हो। सुयश ने कहा- प्रिय मित्र! मैं तो बस भगवान् का स्मरण करता हूँ। 'नमो बुद्धस्स' का पाठ करता हूँ। शायद इसीलिए मैं जीत जाता हूँ। परन्तु मुझे हर बार-हर समय यही लगता है कि यह जीत मेरी नहीं, भगवान् की है। मैं नहीं जीत रहा, भगवान् जीत रहे हैं।

सुयश की बातें सुनकर उस दिन से सुवीर ने भी नमो बुद्धस्स का पाठ शुरू कर दिया। हालांकि उसे पहले से कोई अभ्यास नहीं था, फिर भी उसे इसमें धीरे-धीरे रस आने लगा। शुरूआत तो तोता रटन्त से ही हुई थी, पर मंत्रोच्चार के परिणाम मन पर दिखाई देने लगे। गहराई में न सही पर सतह पर इसके स्पष्ट फल दिखाई देने लगे। वह थोड़ा शान्त होने लगा। उसकी उच्छृंखलता कम होने लगी। थोड़ा छिछलापन कम होने लगा। उसकी हार की पीड़ा कम होने लगी। जीतने की महत्त्वाकांक्षा भी थम सी गयी। खेल बस खेलने के लिए है, ऐसा भाव उसमें जागने लगा।

भगवान् के स्मरण में वह अनजाने ही अपनी अन्तश्चेतना में डूबने लगा। शुरू तो किया था इसलिए कि खेल में जीत जाऊँ। लेकिन धीरे-धीरे जीत-हार की बात ही बिसर गयी। अब तो बस स्मरण में आनन्द बरसने लगा। पहले तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खेल के शुरू–शुरू में याद करता था, पर बाद में जब कभी एकान्त मिल जाता तो बैठकर नमो–बुद्धस्स–नमो बुद्धस्स का जाप करने लगता। यहाँ तक कि कुछ दिन बीतने पर खेल गौण हो गया और जाप प्रमुख हो गया। एक मिश्री सी उसके मुँह में घुलने लगी। सुवीर बुद्ध स्मरण में विभोर होने लगा। नमो बुद्धस्स का जप करते हुए उसे एक खुला आकाश दिखाई पड़ने लगा। धीरे–धीरे उसकी आकांक्षाएँ खो गयीं। सब समय एक शान्त धारा उसके भीतर बहने लगी।

एक दिन वह अपने पिता के साथ लकड़ी काटने के लिए जंगल गया। लौटने पर पिता–पुत्र दोनों ही रास्ते में श्मशान के पास बैलों को खोलकर थोड़ी देर विश्राम के लिए रूके। भरी दोपहरी थी और वे थक गए थे, इसलिए सो गए। जगने पर देखा उनके बैल नगर में चले गए हैं। पिता ने सुवीर से कहा, बेटा! तुम यहीं रूककर गाड़ी और लकड़ी की रखवाली करो, मैं बैलों को लेकर आता हूँ। काफी खोज–बीन करने पर बैल तो मिल गए, पर तब तक सूर्य ढल चुका था। सूर्य ढलने के साथ ही नगर द्वार बन्द हो गया। अमावस की अंधेरी रात, इकलौता पुत्र अकेला श्मशान में। पिता को भारी चिन्ता हुई, पर क्या करे, विवशता ने उसे जकड़ दिया।

उधर सुवीर अमावस की अंधेरी रात में मरघट में अकेला था। इतना अकेलापन उसे पहली बार मिला था। पर उसे यहाँ डर लगने के बजाय बड़े आनन्द की अनुभूति हुई। वह भक्ति और प्रीति के साथ 'नमो बुद्धस्स' का जप करने लगा। जप करते–करते हृदय के तार जुड़ गए, भक्ति की संगीत जम गया, अन्तश्चेतना की वीणा बजने लगी। पहली दफा उसे ध्यान की झलक मिली। धीरे–धीरे वह ध्यान में डूब गया। यह बड़ी गहरी अनुभूति थी। सब तरफ से सुख बरस रहा था, पर शान्ति उसे भिगो रही थी। शरीर सोया था, अन्तर में जागरण का पर्व था। उजियारा ही उजियारा था। जैसे हजार–हजार सूरज एक साथ जग गए। जीवन सब तरफ से प्रकाशित हो गया। जो घटना किसी के लिए अभिशाप बन सकती थी, उसके लिए वरदान बन गयी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमावस की उस रात्रि में महानिशाकाल होते ही श्मशान जाग्रत् हो उठा। ब्रह्मराक्षस, पिशाच, योगिनियां, डाकिनी, शाकिनी, हाकिनी के यूथ वहाँ नृत्य करने लगे। श्मशान का सम्पूर्ण वातावरण भयावह हो गया। परन्तु सुवीर की आत्मचेतना किसी अलौकिक राज्य में निमग्न थी। एक आध्यात्मिक प्रभामण्डल उसे घेरे था। नृत्य कर रही इन सूक्ष्म सत्ताओं ने जब उसकी यह भावदशा देखी, तो उन्होंने अपने को धन्य माना। वे भागे हुए गए और सम्राट के महल से सोने के बर्तनों में भोजन लेकर आए। उन सबने मिलकर उसे भोजन कराया एवं सेवा की। प्रातः होते ही वे सभी सूक्ष्म सत्ताएँ अदृश्य हो गयीं।

इधर सम्राट के सिपाहियों ने महल के खोये हुए बर्तनों की खोज की। और खोजते हुए उन्होंने सुवीर को पकड़ लिया। बन्दी सुवीर को सम्राट के सामने लाया गया। उन दिनों बिम्बसार का शासन था। वह स्वयं भगवान् तथागत के भक्त थे। उन्होंने सुवीर से सारी बात जाननी चाही। सुवीर ने भी उत्तर में सम्राट बिम्बसार को प्रारम्भ से सारी कथा कह सुनायी। चकित और हतप्रभ सम्राट उस बालक को लेकर भगवान् के पास पहुँचे। भगवान् इन दिनों राजगृह में ही ठहरे हुए थे। सारी बातें सुनकर भगवान् ने कहा– सम्राट! यह बालक ठीक कह रहा है। बुद्धानुस्मृति स्वयं के ही परम रूप की स्मृति है। जब तुम कहते हो 'नमो बुद्धस्स' तो तुम अपने ही परम दशा का स्मरण रहे रहे हो।

यह सतह के द्वारा गहराई की पुकार है। यह परिधि के द्वारा केन्द्र का स्मरण है। यह कहते हुए उन्होंने यह धम्म गाथा कही–

सुप्पबुद्धं पबुज्झति सदा गोतम सावका।
येसं दिवा च रत्तो च निच्चं बुद्धगता सति॥

'जिनकी स्मृति दिन-रात सदा बुद्ध में लीन रहती है, वे गौतम के शिष्य सदा सुप्रबोध के साथ सोते और जागते हैं।' भगवान् की इस बात ने सम्राट बिम्बसार को यह बोध दिया कि सद्‌गुरु के स्मरण से शिष्य सहज ही परम भावदशा को उपलब्ध हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य अपना स्वामी स्वयं

हल को थामे हुए बैलों के पीछे-पीछे चलते हुए उसके पाँव थक गये। माथे पर पसीने की बूँदे छलक आयी। एक पल के लिए उसने आँख उठाकर आसमान की ओर देखा। सूरज सिर पर चढ़ आया था। उसका प्रखर ताप समूचे वातावरण को तपाने लगा था। इस तपन और थकान से उसका अपना तन-मन भी चूर हो रहा था। सो उसने बैलों को हल के साथ वहीं खेत में छोड़ा और खुद खेत के कोने पर खड़े इमली के वृक्ष के नीचे आकर बैठ गया। इमली के वृक्ष की घनी छाँव ने उसे सुखद आश्रय दिया। हल्की बयार की अनुभूति से उसके माथे पर छलक आयी पसीने की बूँदे सूखने लगी। देह पर छायी तपन और थकान से भी राहत मिली।

राहत के इन पलों में उसने देखा भगवान् तथागत एक पगडण्डी से गुजर रहे हैं। उनके साथ कुछ और भिक्षु भी हैं। तथागत को निहार कर उसके अन्तःकरण में एक अद्‌भुत शान्ति उतर गयी। भगवान् का शान्त एवं प्रसादपूर्ण व्यक्तित्व उसके समूचे अस्तित्व में व्याप्त हो गया। न जाने क्यों उन्हें देखकर उसे अनूठी तृप्ति मिलती थी। खेतों की जुताई या निराई-गुड़ाई अथवा सिंचाई करते समय प्रायः रोज ही उसे भगवान् के दर्शन होते थे। उन्हें देखते ही वह अपना काम रोककर खड़ा हो जाता और दो क्षण उन्हें आँख भरकर देख लेता। फिर अपने काम में जुट जाता। भगवान् के मुख पर छायी हुई शान्ति एवं प्रसन्नता भिक्षु संघ के सदस्यों में उमड़ता उल्लास उसके अन्तःकरण को विभोर कर देता।

शुरुआत के दिनों में उसने भगवान् तथागत के बारे में पता लगाया, काफी खोज बीन की। क्योंकि उन्हें देखकर उसे कुछ अचरज सा लगता था। वह सोचता, यह आदमी इतना प्यारा, इतना सुन्दर लगता है। किन्तु है यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भिक्षु, हालांकि लगता है सम्राटों का सम्राट। उसने जब उनके बारे पता लगाया तो पता चला कि यह तो राजमहलों को छोड़कर भिक्षु बना है। भगवान् की जीवन गाथा को जानकर उसके मन में तरंगें उठने लगी। उसने सोचा कि अरे! मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। यह एक हल है, यह ..। थोड़ी सी खेती। इसके अलावा भला क्या है मेरे पास छोड़ने को। मैं भी क्यों न इस महान् व्यक्ति की छाया बन जाऊँ। मैं भी क्यों न इसके पीछे चलने लगूँ? इनके व्यक्तित्व से जो अमृत छलक रहा है, एकाध बूँद शायद मेरे भी हाथ लग जाये। .. माना कि मैं निर्धन और अभागा हूँ फिर भी शायद मुझ पर इनकी कृपा हो जाये।

आज जब बुद्ध की परम ज्योति उस पर पड़ी, तो ये भाव प्रकाश समुद्र की भाँति उसके अन्तःकरण में उफन उठे। उससे रहा नहीं गया और उसने भगवान् तथागत की शरण में संन्यास ले लिया। फिर भी अभी कहीं उसके मन में शंका बाकी थी। उसने सोचा-अनजान रास्ते पर निकला हूँ। आज उत्साह-उमंग में हूँ, कल न निभा पाऊँ। शायद कहीं फिर से लौटना पड़े तो.. ? बस इसी शंकाकुल मनोदशा के कारण उसने बौद्ध विहार के पास खड़े एक वृक्ष के ऊपर अपने नंगल को सम्हाल कर टांग दिया। अतीत से सम्बन्ध तोड़ना इतना आसान नहीं। यादों की चुभन रह-रहकर उसका अहसास कराती रहती है।

संन्यास लेने के बाद कुछ दिन तो वह बड़ा प्रसन्न रहा। लेकिन फिर चारों ओर से उसे उदासी घेरने लगी। क्योंकि जब भगवान् कहते ध्यान करो तो उसे केवल अपना हल-नंगल नजर आता। जब वह कहते अब तुम अपने भीतर जाओ। तब वह सोचता कि आखिर यह कहाँ की झंझट, कहाँ जाना है भीतर? क्या है भीतर? हर तरफ तो अँधेरा-अँधेरा नजर आता है। उसे लगने लगा कि अजीब झंझट है यह। इससे तो तभी अच्छा था जब अपना हल चलाते थे। कम से कम अपनी दो रोटी तो कमा लेते थे। अब तो वह भी गयी। इस उदासी में उसे वैराग्य से वैराग्य पैदा हो गया।

इस विराग से वैराग्य की भावदशा में वह अपने हल-नंगल को लेकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुनः खेती-बाड़ी करने के विचार से वृक्ष के नीचे गया। किन्तु वहाँ पहुँचते ही उसे अपनी मूढ़ता दिखी। उसने वृक्ष के नीचे खड़े होकर ध्यानपूर्वक अपनी स्थिति को निहारा कि मैं यह क्या कर रहा हूँ। बोध होते ही उसे अपनी भूल समझ में आयी। वह पुनः विहार वापस लौट आया। फिर तो जैसे यह उसकी साधना बन गयी। जब-जब उसे उदासी होती, वृक्ष के पास जाता, अपने हल को देखता और फिर से वापस लौट आता। संघ के अन्य भिक्षुओं ने उसे बार-बार अपने हल-नंगल को देखते और बार-बार नंगल के पास जाते देखकर उसका नाम ही लंगलकुल रख दिया।

एक दिन वह भी आया जब वह हल-नंगल के दर्शन करके लौटा तो फिर कभी दुबारा वापस नहीं गया। उसे अर्हत्व उपलब्ध हो गया। पकती गई बात-पकती गई बात और एक दिन फल टपक गया। अतीत गया और वर्तमान का उदय हो गया। अर्हत्व का अर्थ ही यही है कि चेतना वर्तमान में आ गयी। एक पल में सब कुछ हो गया। इस क्षण में चेतना निर्विकार होकर प्रज्वलित होकर जल उठी। फिर किसी ने उसे दुबारा हल-नंगल की ओर जाते नहीं देखा। उसकी यह स्थिति देखकर भिक्षुओं को स्वाभाविक जिज्ञासा जगी; इस नंगलकुल को क्या हो गया है? अब यह नहीं जाता उस वृक्ष के पास। पहले तो बार-बार जाता था।

उन्होंने उससे पूछा -आवुस नंगलकुल! अब तू उस वृक्ष के पास नहीं जाता, आखिर बात क्या है? भिक्षुओं की बात सुनकर नंगलकुल हँसा और बोला-जब तक आसक्ति रही अतीत से, जाता था। जब तक संसर्ग रहा, तब तक गया। अब वह जंजीर टूट गयी है। मैं अब मुक्त हूँ। यह सुनकर कुछ भिक्षु ईर्ष्या में जल उठे। उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने भगवान् से शिकायत के लहजे में कहा-भंते! यह नंगलकुल झूठ बोलता है। यह अर्हत्व प्राप्ति की घोषणा कर रहा है। यह कहता है कि मैं मुक्त हूँ। भिक्षुओं की इस शिकायत पर भगवान् करुणार्द्र हो उठे। उनके नेत्रों से करुणा की शुभ ज्योति बरस उठी। उन्होंने बड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही स्नेहसिक्त स्वर में कहा- भिक्षुओं! मेरे उस पुत्र ने अपने आपको उपदेश देकर प्रवजित होने के कृत्य को पूर्ण कर लिया है। उसे जो पाना था, उसने पा लिया और उसे जो छोड़ना था सो छोड़ दिया। वह निश्चय ही मुक्त हो गया है।

ऐसा कहते हुए उन्होंने दो धम्म गाथाएँ कहीं।

अत्तना चोदयन्तानं परिवासे अत्तमतना।
सो अत्तगुत्तो सतिमा सुखम् भिक्खु विहाहिसि॥
अत्ताहि अत्तनो नाथो अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा सञ्जमयत्तानं अस्सं भद्रं व वणि जो॥

अर्थात्, जो आप ही अपने को प्रेरित करेगा। जो आप ही अपने को संलग्न करेगा। वह आत्मगुप्त अपने द्वारा रक्षित-स्मृतिवान् भिक्षु सुख से विहार करेगा। वह मुक्त हो जायेगा।

मनुष्य अपना स्वामी आप है। आप ही अपनी गति है। इसलिए अपने को संयमी बनावें। जैसे सुन्दर अश्व को वणिक संयत करता है।

भगवान् के इन प्रबोध वचनों को सुनकर भिक्षुओं को आत्म विवेक एवं आत्म विचार की महिमा का बोध हुआ। उन्हें यह समझ में आया कि विवेक और विचार के समुचित प्रयोग से कोई भी अर्हत्व की प्राप्ति कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभु का सान्निध्य

समूचे जेतवन में एक अलौकिक सुगन्ध व्याप रही थी। यह अनूठी कमल गन्ध भगवान् तथागत की दिव्य देह से पल-पल झरती रहती थी। निरन्तर की तप साधना ने भगवान् की देह को हर तरह से दिव्य बना दिया था। प्रभु जहाँ भी रहते, वही स्थान सुगन्ध से सुवासित हो जाता। प्रकाश की प्रभा उस स्थान को सदा घेरे रहती। इस अनूठे प्रकाश में भगवान् के तप एवं ज्ञान की आभा छलकती रहती थी। इसके सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सदा-सदा के लिए अपना हो जाता। वह बरबस ही चाहे-अनचाहे भगवान् के प्रेम पाश में बन्ध जाता। उसे इस सत्य का सहज ही अनुभव हो जाता कि प्रभु ही उसके अपने हैं, उनसे अधिक उनका और कोई सच्चा हितैषी नहीं।

भगवान् की यह सहज करुणा, उनका अपरिमित प्यार, उन प्रभु का अनोखा वात्सल्य ही उनके व्यक्तित्व से सुगन्ध एवं प्रकाश की धाराएँ बनकर बहता था। अपने व्यक्तित्व से प्रभु हजार हाथों से लाखों-लाख अनुदान बाँटते रहते थे। उनकी उपस्थिति आशीष एवं कृपा की वर्षा बनकर प्रकट होती थी। जो इसमें भीगते थे, उनका सारा व्यक्तित्व ही धन्य-धन्य हो जाता। पर कुछ दुर्भाग्यशाली भी थे। जिनके कुसंस्कार उन्हें इससे वंचित रखते थे। उनकी दुष्प्रवृत्तियाँ अवरोध बनकर आड़े आती थी। अपनी ही वंचना उनको प्रभु की कृपा से वंचित करती रहती थी। कभी-कभी तो यह स्थिति इतनी दारुण एवं दुष्कर हो जाती कि ऐसे लोग भगवान् की उपस्थिति से ही ईर्ष्या करने लगते।

सम्यक् सम्बद्ध भगवान् तथागत का नाम ऐसे संकीर्ण साम्प्रदायिक चित्त के लोगों को भयाक्रान्त कर देता था। प्रभु का अस्तित्व मानव जीवन में आमूल क्रान्ति का पर्यायवाची था। अपने जीवन की क्षुद्रताओं को अपने से चिपटाए लोग भयभीत होकर उनसे दूर रहने में ही अपना कल्याण समझते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यही नहीं अपने बच्चों को भी प्रभु से दूर रखने की कोशिश करते। सच यही था कि बच्चों के लिए युवक-युवतियों के लिए उनका भय स्वाभावतः और भी ज्यादा था। ऐसे लोगों ने अपने बच्चों को कह रखा था कि वे कभी बुद्ध की हवा में भी न जायें। उन सबने उन्हें कसमें दिला रखीं थीं कि वे कभी भी बुद्ध या बुद्ध के भिक्षुओं को प्रणाम न करें।

पर जेतवन की अलौकिक सुगन्ध वहाँ पास में रहने वाले बच्चों के सरल अन्तःकरण में अनजाने ही प्रवेश कर रही थी। उनके निष्कपट हृदय प्रभु के प्रकाश से अनायास ही भरते जा रहे थे। जब-तब उन्हें लगने लगता था कोई अदृश्य चेतना उन्हें जेतवन आने का आमंत्रण दे रही है। पर अपने अभिभावकों की आज्ञा से वे विवश थे। एक दिन एक किशोरवय के बालक ने अपने मित्रों को सुझाया कि हम सबके अभिभावकों ने जेतवन के अन्दर जाने से मना किया है, पर वहाँ आसपास बाहर खेलने में क्या बुराई है? बच्चों को यह बात औचित्यपूर्ण लगी और वे सब के सब जेतवन के बाहर खेलन लगे। काफी समय तक खेलते-खलते उन्हें प्यास और थकान ने घेर लिया। इस थकान और प्यास में वे सब अपने माता-पिता एवं धर्मगुरुओं को दिये गये वचन भूल गये और पानी की तलाश में वे जेतवन में प्रवेश कर गये। सुखद संयोग कि जेतवन में प्रवेश के साथ ही भगवान् से उनका मिलना हो गया। भगवान् ने उन्हें अपने हाथों से पानी पिलाया। बड़े ही स्नेह से उन्हें कुछ मीठे पदार्थ खाने के लिए दिये। भगवान् की समीपता ने उन्हें जता दिया कि वही प्रभु अलौकिक प्रकाश एवं सुगन्ध का स्रोत हैं। करुणातार तथागत की करुणा, प्रेम एवं वात्सल्य ने उन सबको मोह लिया।

प्रभु के वचनों से उनको गहरी तृप्ति मिली। तथागत द्वारा दिया गया पल भर का प्रेम उन्हें अपने अभिभावकों के वर्षों के पर भारी लगा। आनन्द विभोर और प्रेम विह्वल हो उठे वे सबके सब। ऐसा प्रेम तो उन्होंने कभी जाना ही न था। कभी सोचा भी न था, ऐसे चुम्बकीय आकर्षण के बारे में। कभी उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं देखा था ऐसा चुम्बकीय आकर्षण, ऐसा अपूर्व सौन्दर्य, ऐसा प्रसाद, ऐसी शान्ति, ऐसा अपूर्व उत्सव। वे सबके सब बच्चे अपना खेल आदि भूलकर दिनभर भगवान् के पास रहे। उनकी अन्तर्चेतना भगवान् की सुगन्ध में खोने लगी। वे भगवान् के अपूर्व रस से भीगने लगे। तथागत का अलौकिक रंग उन सरल बच्चों के हृदयों में लग गया।

अब तो उन्हें भगवान् के प्रेम का चस्का लग गया। वे जिस किसी तरह रोज ही प्रभु के पास पहुँचने लगे। धीरे-धीरे वे भगवान् के पास ध्यान के लिए भी बैठने लगे। देखते ही बनती थी उनकी सरल श्रद्धा। प्रभु पर न्यौछावर होने लगे उनके मन-प्राण। अब तो स्थिति यह बन आयी कि भले ही वे प्रभु के पास हों अथवा फिर घर पर परन्तु उनकी भाव चेतना सदा ही प्रभु के इर्द-गिर्द मँडराती रहती।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अन्ततः उनकी इस उन्मत अवस्था की खबर उनके अभिभावकों को लग गई। खबर लगते ही वे आग बबूला हो उठे। उनका क्रोध सारी सीमाएँ लाँघ गया। जिन बच्चों को वे अपने जिगर का टुकड़ा समझते थे, उन्हीं को बड़ी बेरहमी से मारा। उनके कुल पुरोहितों ने भी उन बच्चों को समझाया, डाँटा-डपटा, भय-लोभ, साम-दाम-दण्ड-भेद सबका उन छोटे-छोटे बच्चों पर प्रयोग किया गया। परन्तु भगवान् का अलौकिक प्रेम जो उनके हृदयों में उतर चुका था, वह किसी भी तरह नहीं मिटा। बुद्ध की जो छाप उनके निश्छल हृदयों में पड़ गयी थी सो पड़ गयी थी।

बच्चों के अभिभावक बहुत रोये और पछतायं। उनकी नाराजगी बढ़ती गई। वे जिस किसी से अपना दुखड़ा सुनाते फिरते कि इस भ्रष्ट गौतम ने हमारे भोले-भाले बच्चों को भी भ्रष्ट कर दिया है। नाराजगी का यह उनका पागलपन ऐसा बढ़ा कि उन्होंने अपने बच्चों को भी त्याग देने की ठान ली और एक दिन वे उन बच्चों को सौंप देने के लिए बुद्ध के पास गये। चिढ़, गुस्सा एवं आक्रोश से भरे हुए वे ज्यों ही जेतवन पहुँचे, त्यों ही उन्हें प्रभु के प्रकाश, प्रेम एवं सुगन्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने घेर लिया। भगवान् की समीपता मात्र से उनके अँधेरे जीवन में ज्योति जला दी। अचरज में भरे हुए उन सब अभिभावकों से भगवान् ने ये धम्मगाथाएँ कहीं–

अवज्जे वज्जभतिनो वज्जे च वज्जदस्सिनो।
मिच्छादिट्ठि समादाना सत्ता गच्छंति दुग्गतिं॥
वज्जञ्च वज्जतो ञत्वा अवज्जञ्च अवज्जतो।
सम्मादिट्ठि समादाना सत्ता गच्छांत सुग्गतिं॥

जो अदोष में दोष बुद्धि रखने वाले और दोष में अदोष दृष्टि रखने वाले हैं, वे लोग मिथ्या दृष्टि को ग्रहण करके दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

दोष को दोष, अदोष को अदोष जानकर लोग सम्यक् दृष्टि को धारण करके सुगति को प्राप्त होते हैं।

दो छोटे से ये सूत्र देकर प्रभु ने उन्हें सम्यक् दृष्टि दी। तब उन्होंने अनुभव किया कि भगवान् बुद्ध के पास पहुँच कर किस तरह अनायास ही अन्तर्भावनाएँ उन्हीं की हो जाती हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब फिर बज उठे रणभेरी

कोशल नरेश प्रसेनजित को अपने इस महाबलवान हाथी पर गर्व था। महायुद्धों में उसका पराक्रम देखते ही बनता था। शत्रुओं के झुण्ड के झुण्ड को वह देखते ही देखते सांकलों में बांध लेता। शत्रुओं को बांधने की कला में प्रवीण होने के कारण ही महाराज ने उसका नाम बद्धरेक रखा था। उसके बल और पराक्रम की कहानियाँ दूर-दूर तक फैली थीं। कोशल निवासी उसे अपने देश का रत्न मानते थे। अन्य साम्राज्यों के सेनानी भी यह स्वीकारते थे कि युद्ध में ऐसा कुशल हाथी पहले कभी देखा नहीं गया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अन्य महादेशों के सम्राट उस हाथी को किसी भी कीमत पर खरीदना चाहते थे। वे सब उसे पाने के लिए कुछ भी कीमत चुकाने के लिए तैयार थे। सभी की नजरें उस पर लगी रहती थीं। सचमुच ही वह अपूर्व था। युद्ध में कभी किसी ने उसे भागते नहीं देखा। कितना ही भयानक संघर्ष हो, कितने ही तीर उस पर बरस रहे हों और भाले फेंके जा रहे हों। वह चट्टान की तरह अडिग खड़ा रहता था। उसकी चिंघाड़ कुछ ऐसी थी कि दुश्मनों के दिल बैठ जाते थे। शत्रु सेना में भगदड़ मच जाती थी। उसने अपने मालिक कोशल नरेश की बड़ी सेवा की थी। अनेक युद्धों में उन्हें जिताया था।

लेकिन इन दिनों काल के प्रवाह ने उसे वृद्ध बना दिया था। हालांकि अभी भी कोशल निवासी उसे बड़े ही सम्मान से देखते थे। बुढ़ापे की दुर्बलता का असर उस महाबलवान हाथी पर स्पष्ट झलकता था। एक दिन जब वह तालाब में नहाने के लिए उतरा, तो पता नहीं कैसे वह तालाब की कीचड़ में फँस गया। कभी किसी समय जो बड़े से बड़े दलदल को एक ही आवेग में चीरता हुआ पार कर लेता था, आज तालाब की कीचड़ से नहीं उबर पा रहा था। उस बद्धरेक हाथी ने अनेकों प्रयास कर डाले, लेकिन उस कीचड़ से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह स्वयं को निकालने में समर्थ न हो सका। महाराज प्रसेनजित के सेवकों ने भी बहुत चेष्टा की, लेकिन कोई खास परिणाम न निकला। सब कुछ असफल हो गया।

अपने परमप्रिय एवं सुप्रसिद्ध हाथी की ऐसी दुर्दशा देख कर सभी लोग दुःखी हो गए। तालाब पर भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। वह हाथी सारे कोशल देश का चहेता था। देश भर में उसे प्यार करने वाले थे। बाल-वृद्ध-वनिताएँ सभी का वह प्यारा था। उसकी आँखों एवं व्यवहार से सदा ही बुद्धिमानी झलकती थी। आज उसकी यह दुर्दशा सभी को असहनीय लग रही थी। महाराज प्रसेनजित ने उसे कीचड़ से निकालने के लिए अनेक महावत भेजे। पर वे भी हार गए। किसी को कोई उपाय नहीं समझ आ रहा था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ऐसी विकट स्थिति में महाराज प्रसेनजित स्वयं उस तालाब पर जा पहुँचे। उन्हें भी अनेक युद्धों में विजय दिलाने वाले हाथी का यह दुःख सहन नहीं हो रहा था। अपने महाराज को आया हुआ देख राजधानी के प्रायः सारे लोग उस तालाब पर इकट्ठा हो गए। सभी दुःखी थे, परेशान थे, किन्तु किसी को कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा था।

ऐसे में स्वयं महाराज प्रसेनजित को ही अपने पुराने महावत की याद आयी। यही महावत बद्धरेक की देखभाल किया करता था। अब वह भी वृद्ध होकर राज्य की सेवा से निवृत्त हो गया था। इन दिनों वह प्रायः हर समय भगवान् तथागत के उपदेशों में डूबा रहता था। उस महावत के लिए भी राजा के मन में भारी सम्मान था। आज अपने परम प्रिय बद्धरेक हो फँसा हुआ देख राजा ने सोचा, शायद ऐसे में वह बूढ़ा महावत ही कुछ कर सके।

महाराज की इस सोच के प्रेरक भगवान् तथागत के वचन ही थे। एक दिन धर्म प्रवचन करते समय भगवान् ने कहा था- बद्धरेक एवं इस महावत का जन्म-जन्म का साथ है। उन्होंने उस बूढ़े महावत को सम्बोधित करते हुए कहा था- तू इस बार ही इस हाथी के साथ नहीं है, पहले भी रहा है। यहाँ सब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन जुड़ा हुआ है। फिर इस जीवन तो पूरे समय हाथी के साथ ही रहा था। हाथी उसी के साथ बड़ा हुआ था, उसी के साथ जवान हुआ था और अब उसी के साथ बूढ़ा भी हो गया था। उस महावत ने हाथी को हर हाल में देखा था। शान्ति और युद्ध दोनों में उसकी समझदारी से वह परिचित था। एक तरह से वह हाथी की रग-रग से वाकिफ था। राजा ने इन परिस्थितियों में सोचा शायद वह बूढ़ा महावत ही कुछ कर सके।

महाराज प्रसेनजित की खबर पाते ही वह बूढ़ा महावत हाजिर हो गया। उसने अपने उस प्यारे हाथी को कीचड़ में फँसे देखा। इस दृश्य को देखकर उसके माथे पर बल पड़े, मस्तिष्क में कुछ विद्युत् की भाँति कौंध गया। और फिर वह मुस्कराया। अपनी इस मुस्कराहट के साथ ही उसने महाराज को निवेदन किया कि यहाँ पर संग्राम भेरी बजायी जाय। आज यहाँ युद्ध के सभी वाद्य बजने चाहिए। उस महावत की सलाह पर तुरन्त अमल किया गया। वहाँ तुरन्त संग्राम भेरी बजने लगी। युद्ध के नगाड़ों की आवाज सुनकर जैसे अचानक ही वह बूढ़ा हाथी जवान हो गया और कीचड़ से उठकर किनारे पर आ गया। वह तो जैसे भूल ही गया अपना बुढ़ापा और कमजोरी। उसका सोया हुआ योद्धा जाग उठा और वह चुनौती काम कर गयी। फिर उसे क्षण भर भी देर न लगी।

अब तक किए जा रहे सभी उपायों पर यह संग्राम भेरी भारी पड़ी। बजते हुए युद्ध घोष ने उसका सोया हुआ शौर्य जगा दिया। उसका शिथिल पड़ गया खून फिर से दौड़ने लगा। अपने पराक्रम के स्मरण मात्र से वह ऐसी मस्ती और सरलता-सहजता से बाहर आ गया कि जैसे वहाँ कोई कीचड़ न हो और न वह वहाँ कभी फँसा हो। किनारे पर आकर वह हर्षोन्माद में ऐसे चिंघाड़ा जैसा कि वर्षों से लोगों ने उसकी चिंघाड़ सुनी ही नहीं थी।

भगवान् के बहुत से भिक्षु भी उस बूढ़े महावत के साथ यह दृश्य देखने के लिए तालाब पर पहुँच गये थे। उन्होंने सारी घटना भगवान् को आकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुनायी। तब भगवान् ने सभी उपस्थित भिक्षुओं से कहा- अरे तुम सब उस अपूर्व हाथी से कुछ सीखो। उसने तो कीचड़ से अपना उद्धार कर लिया, तुम कब तक इस कीचड़ में फँसे रहोगे? और तुम देखते नहीं मैं कब से संग्राम भेरी बजा रहा हूँ। भिक्षुओं! जागो और जगाओ अपने संकल्प को। वह हाथी भी कर सका। अति दुर्बल बूढ़ा हाथी भी कर सका। क्या तुम कुछ भी न करोगे? मनुष्य होकर-सबल होकर, बुद्धिमान होकर क्या तुम कुछ न कर सकोगे?

भगवान् तथागत की यह तेजस्वी वाणी श्रोताओं के मर्म को भेद रही थी- वह कह रहे थे- क्या तुम हाथी से भी गए बीते हो? चुनौती लो उस हाथी से; तुम भी आत्मवान बनो। एक क्षण में क्रान्ति घट सकती है। बस केवल स्मरण आ जाए, भीतर जो सोया है, जग जाए। फिर न कोई दुर्बलता है, न कोई दीनता। भिक्षुओं, बस अपनी शक्ति पर श्रद्धा चाहिए। त्वरा चाहिए, भिक्षुओं, तेजी चाहिए। एक क्षण में काम हो जाता है। वर्षों का सवाल नहीं है। लेकिन सारी शक्ति एक क्षण में इकट्ठी लग जाए, समग्रता से, पूर्णरूपेण। और इसके बाद उन्होंने यह धम्मगाथा कही-

अप्पमादरत्व होथ स चित्तमनुरक्खथ।
दुग्गा उद्धरथत्तानं पंके सत्तोव कुंजरो॥

अर्थात्- अप्रमाद में रत हाओ, जागो और अपने चैतन्य की रक्षा करो। इस दुर्गमता से अपना उसी तरह उद्धार करो, जैसे कि उस हाथी ने कीचड़ से अपना उद्धार कर लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वीतराग रेवत की सन्निधि का चमत्कार

विवाह के बन्धन में बंधते-बंधते वह अचानक मोक्ष की राह पर चल पड़े। इस अचानक पर सभी को भारी अचरज हुआ। जिसने भी यह चमत्कार देखा ठगा सा रह गया। रिश्ते-नाते, घर-परिवार, मोह-ममता के धागे सबके सब टूट कर गिर गए। और आयुष्मान रेवत सघन वन में प्रवेश कर गए। यह चमत्कार एक सुरति ने, एक स्मृति ने कर दिखाया। रेवत, स्थविर सारिपुत्र के छोटे भाई थे। सारिपुत्र को भगवान् तथागत का अनुग्रह मिला था। वह बुद्ध के अग्रणी शिष्यों में थे। वह उन दुर्लभतम लोगों में थे, जिन्हें भगवान् ने कृपा करके बुद्धत्व का परम प्रसाद दिया था।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रेवत जब विवाह के लिए जा रहे थे, तो बैंड-बाजों के बीच, सुहागिनों के मंगल गीतों के बीच, कन्याओं की कुहेलिकाओं के बीच, लावण्यमयी ललनाओं की लालिमा के बीच उन्हें अपने अग्रज की याद आ गयी। रास-रस के प्रसंग में उन्हें अपने भ्राता सारिपुत्र का स्मरण हो गया। सारिपुत्र की प्रीति, उनकी स्नेहभरी बातें, उनके द्वारा कहे गए प्रबोध वचन सभी कुछ याद हो आए। फिर तो जैसे राग के अंधेरे में विराग का सूरज चमक उठा। रेवत की बरात पहुँची ही जा रही थी विवाह मण्डप के पास जहाँ पुरोहित तैयार थे। स्वागत का व्यापक आयोजन था। रूप-लावण्य की छटा बिखरी थी। पर रेवत तो जैसे इन सबसे अलग अपने आप में खोए थे। वह अपने अन्तर्गगन में चमक उठे विराग के सूर्य में समाते जा रहे थे।

इस विराग के सूर्य की प्रभा में सारा आयोजन विलीन हो गया। सारा लौकिक सौन्दर्य भगवान् के प्रेम की अलौकिकता में खोने लगा। भ्राता सारिपुत्र द्वारा सुनाए गए भगवान् के प्रसंग सब पर भारी पड़े। रास-विलास, हास-परिहास का अंधियारा छंटने लगा, हटने लगा, मिटने लगा। और रेवत घोड़े से उतर कर वन की डगर पर चल पड़े। वैराग्य की महातपन में परिजनों की पुकारों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के ओसकण कब-कहाँ सूखे पता ही न चला। उनकी चिन्तन-चेतना की कड़ियाँ तो तब टूटी, जब उन्हें जंगल में बुद्ध के भिक्षुओं का दर्शन हुआ। इस दर्शन ने उनके मन में प्रज्वलित हो रहे वैराग्य को नयी चमक दी। वैराग्य की इस अनोखी प्रभा से घिरे आयुष्मान रेवत ने उनसे प्रव्रज्या ग्रहण कर ली।

आयुष्मान रेवत अब चीवरधारी परिव्राजक रेवत हो गए। भिक्षुओं ने उनसे आग्रह किया कि वह उनके साथ तथागत के दर्शनों के लिए चलें। तथागत के स्मरण मात्र से ही रेवत पुलकित हो गए। उनके नेत्रों से अश्रु छलक उठे। इस प्रभु भक्ति के साथ उनके मन में एक अन्य पवित्र भाव जगा। इस भाव से भीगे हुए रेवत ने भिक्षुओं से कहा- हे भिक्षुओं! यह सच है कि भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध के दर्शनों की मुझे तीव्र अभिलाषा है। पर मैं सोचता हूँ कि पहले योग्य तो हो लूं, तब उन भगवान् के दर्शन को जाऊँ। पहले कुछ पात्रता तो हो मेरी। पहले आँख तो खोल लूं, जो देख सके उन्हें। पहले हृदय तो निखार लूं, जो झेल सके उन्हें। पहले भूमि तो तैयार कर लूं, ताकि वे भगवान् जब अपने बीज फेंके, तो बीज यूं ही न चले जाएँ। पहले इस योग्य तो हो लूं तब उनके दर्शनों को जाऊँ।

रेवत के इन वचनों ने भिक्षुओं को हर्षित कर दिया। वे सब नमो बुद्धस्य का जाप करते हुए अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े। जबकि रेवत वहीं पास के खदिर वन में अपनी एकान्त, ध्यान और मौनचर्या में संलग्न हो गए। उनकी साधना निरन्तर समग्र होती गयी। उन्होंने अपनी सारी शक्ति ध्यान में उड़ेल दी। सात वर्षों की समग्र साधना करके वह अर्हत्व को उपलब्ध हो गए। भगवत्ता उनके भीतर ही उमग आयी। तथागत को सार रूप में उन्होंने अपने भीतर ही पा लिया। इस भावदशा ने उन्हें एक मुश्किल में डाल दिया। पहले वे इसलिए नहीं गए थे कि बिना योग्य बने भगवान् से मिलने कैसे जाऊँ। और अब तो भगवान् स्वयं ही अन्तर्चेतना में आ विराजे। तो अब जाने की जरूरत ही न रही।

इस मुश्किल में पड़े रेवत के भावाश्रु उन्हें भिगोने लगे। वह सोचने लगे कि पहले इस लिए नहीं गया कि पात्र हो जाऊँ। और अब जाऊँ क्या? क्योंकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसे देखने चला था, उसके दर्शन तो भीतर ही हो गए। जिस गुरु को बाहर खोजने चला था वह तो भीतर ही मिल गया। सो रेवत अपने आप में ही मग्न होकर जंगल में ही रहने लगे।

इधर अन्तर्यामी भगवान् अपने भक्त की भावदशा से परिचित होकर स्वयं सारिपुत्र आदि स्थविरों के साथ वहाँ पहुँचे। वह जंगल बहुत भयंकर था। रास्ते उबड़-खाबड़ और कंटकाकीर्ण थे। जंगली पशुओं की छाती को कंपा देने वाली दहाड़ें भरी दोपहरी में भी सुनायी देती थी। लेकिन रेवत की साधना का प्रभाव कुछ ऐसा था कि भिक्षुओं को इसकी कोई खबर ही न मिली उन्हें न तो रास्तों का उबड़-खाबड़ होना पता चला और न जंगली जानवरों की दहाड़ें सुनायी पड़ी, न ही कांटों से भरा जंगल दिखाई पड़ा, उन्हें तो सब तरफ फूल ही फूल खिले दिखाई पड़ते थे। उन्हें तो सब तरफ जंगल की परम शान्ति ध्वनित होती मालूम पड़ रही थी।

रेवत ने ध्यान में भगवान् को आता हुआ देख उनके लिए सुन्दर आसन बनाया। घास-पात, फूल-कलियाँ जो भी उन्हें मिल सका, उसी से उन्होंने प्रभु का आसन सजा दिया। भगवान् उस खदिर वन में एक माह रहे। फिर वे रेवत को लेकर वापस लौटे। लौटते समय दो भिक्षुओं के कमण्डलु और भी कुछ सामान वहीं छूट गया। सो वे मार्ग से लौटकर उसे लेने आए। लौटकर उन्होंने जो देखा तो जैसे उनको अपनी आँखों पर भरोसा ही न आया। शायद किसी और को भी न आता। क्योंकि वह जंगल अति भयानक लग रहा था। जंगली पशुओं की दहाड़ें कानों को कंपा रही थी। रेवत का निवास भी कांटों से भरा था। वे तो भरोसा ही न कर सके। कि इतना बड़ा परिवर्तन, भला किस तरह घटित हो गया।

श्रावस्ती लौटने पर महोपासिका विशाखा ने उनसे पूछा- इन दो भिक्षुओं से- आर्य रेवत का निवास कैसा था? मत पूछो उपासिके! वे भिक्षु बोले, मत पूछो। ऐसी खतरनाक जगह हमने कभी नहीं देखी। बस जैसे-तैसे बचकर आ गए। पता नहीं आर्य रेवत वहाँ किस तरह से रहते थे। इनकी यह बात सुनकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विशाखा ने और भिक्षुओं से भी यह बात की। उन्होंने कहा- आर्य रेवत का स्थान स्वर्ग से भी सुन्दर है। मानो ऋद्धि से बनाया गया हो। सुरम्य और सुन्दर स्थान तो हमने बहुतेरे देखे हैं। मगर परम तपस्वी रेवत जहाँ रह रहे थे, वैसा स्थान तो शायद देवताओं को भी सुलभ नहीं रहा होगा। इतनी शान्ति इतनी प्रगाढ़ शान्ति। ऐसा सन्नाटा। ऐसा अपूर्व संगीतमय वातावरण, इस धरती पर कोई दूसरा नहीं है।

इन विपरीत मन्तव्यों ने विशाखा को चौंका दिया। वह चकित होने के साथ भ्रमित भी हुई। उसने सच्चाई भगवान् से जाननी चाही। तथागत के समीप पहुँचकर उसने कहा- प्रभु! आर्य रेवत के निवास स्थान के सम्बन्ध में पूछने पर आपके साथ गए हुए भिक्षुओं में कोई उसे नर्क जैसा और कोई उसे स्वर्ग जैसा बताते हैं। सत्य क्या है? विशाखा की इस बात पर भगवान् हँसे और बोले- उपासिके जब तक वहाँ रेवत का वास था, वह स्वर्ग जैसा था। क्योंकि जहाँ रेवत जैसे ध्यानी ब्राह्मण विहरते हैं वह स्थान स्वर्ग जैसा हो जाता है। लेकिन उसके हटते ही वह नर्क जैसा हो गया। जैसे दिया हटा दिया जाय और अंधेरा हो जाए, ऐसे ही। मेरा पुत्र रेवत अर्हत हो गया है, ब्राह्मण हो गया है। उसने ब्रह्म को जान लिया है।

और तब उन्होंने ये गाथाएँ कहीं-

आसा यस्य न विज्जन्ति अस्मिं लोके परम्हि च।
निरासयं विसं युत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥
यस्सालया न वज्जिन्वि अञाय अकथंकथी।
अमतोगधं अनुप्पतं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥

इस लोक और परलोक के विषय में जिसकी आशाएँ नहीं रह गयी हैं। जो निराशय और असंग हो- उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं। जिसे आलय-तृष्णा नहीं है, जो जानकर वीत सन्देह हो गया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

और ऐसे ब्राह्मण जहाँ भी रहते हैं, वहाँ सारे चमत्कार स्वयं ही घटित होते हैं। भगवान् के इन वचनों से विशाखा परम प्रबोध को पा गयी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुद्धत्व के सान्निध्य से जन्मा ब्राह्मणत्व

उसकी सरलता में सात्त्विक सम्मोहन था। जब वह हँसती तो बस यूं लगता जैसे कि बेला-चमेली के फूल झड़ रहे हों। उसकी यह हंसी हमेशा ही औरों का विषाद हरण कर लेती। धारोष्ण दूध से धुले पुखराज सी रंगत वाली उसकी देह सदा श्रमबिन्दुओं से सजी रहती। हर पल-हर क्षण श्रम करते रहना उसका स्वभाव था। परिवार-परिजन ही नहीं पुरजनों की भी सेवा को उसने अपनी साधना बना लिया था। अपने इन्हीं गुणों के कारण उसे भगवान् बुद्ध का कृपा प्रसाद मिला था। उसका अन्तस स्रोतापत्ति में डूब चुका था। हमेशा ही उसके अन्तःकरण में 'नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स' के स्वर उठते रहते। भगवान् की यह मधुर अर्चना किसी न किसी बहाने उसके हाठों से भी प्रकट होती रहती।

उसका यह बुद्ध प्रेम जहाँ अनेकों की प्रेरणा का स्रोत था, वहीं उसकी घर वालों को फूटी आँख भी न सुहाता था। उसके पति उसे कुलटा, कुलच्छनी, कुलकलंकिनी और भी न जाने क्या-क्या कहा करते थे। पर वह हमेशा इन दुर्वचनों पर दुःखी होने के बजाय मुस्करा देती। क्योंकि उसके अन्तस में तो भगवान् का कृपा प्रसाद उमड़ता रहता था। उसकी इस सहनशीलता की चर्चा सारे राजगृह में थी। सभी यही कहते थे कि धनजाति पता नहीं किस तरह इतने अत्याचारों को सहन करती है। लेकिन इन सभी परिस्थितियों, व्यक्तियों एवं विचारों से अलग उसे अपने आराध्य की करूणा पर भरोसा था। कोई भले ही उसे ब्राह्मण कुल का कलंक कहे, पर उसे मालूम था कि वह सच्चे ब्राह्मणत्व की ओर अग्रसर है।

एक दिन तो जैसे सारी हदें ही पार हो गयीं। उस दिन उसके घर में भोज था। काम-काज की भागा-दौड़ी में उसका पांव फिसल गया। भोज में सारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण इकट्ठे थे। सारा परिवार जमा था। पति था, पति के सब भाई थे, रिश्तेदार थे। ऐसे में उसने गिरते ही तत्क्षण सम्हलने की कोशिश की। और उठते ही उसने आदत के मुताबिक 'नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स' कहते हुए तथागत का स्मरण किया। बुद्ध के इस स्मरण से तो जैसे समूचे परिजनों को आग लग गई। व्यंग करते हुए पति के छोटें भाई ने उससे पूछा क्या अर्थ है इस वाक्य का जो तुमने अभी-अभी कहा। उसने बड़ी सहजता से जवाब दिया- इसका अर्थ बस इतना ही है 'नमस्कार हो उन भगवान् को, उन सम्यक् सम्बोधि प्राप्त को, उन अर्हत को'।

इसे सुनकर उसके पति देवाशीष ने उसे बहुत डांटा। अरी नष्ट हो दुष्टा। जहाँ नहीं वहीं उस मुड़े श्रमण की प्रशंसा करती है। फिर वह अपने भाइयों की ओर देखकर कहा- जाओ तुम अभी उस श्रमण गौतम के साथ शास्त्रार्थ करो और उसे सदा-सदा के लिए समाप्त कर दो। अपने पति के इस कथन पर वह हंस दी और बोली- नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स। नमस्कार हो उन भगवान् को, नमस्कार हो उन अर्हत को, नमस्कार हो उन सम्यक् सम्बोधि प्राप्त को। जाओ ब्राह्मण शास्त्रार्थ करो। यद्यपि उन भगवान् के साथ शास्त्रार्थ करने में कौन समर्थ है। फिर भी तुम जाओ। इससे तुम्हारा कुछ लाभ ही होगा।

वह ब्राह्मण भारद्वाज क्रोध, अहंकार और विजय की महत्त्वाकांक्षा में जलता हुआ बुद्ध के पास पहुँचा। वह ऐसे था, जैसे साक्षात् ज्वर आया हो। उसका तन-मन-प्राण-अन्तःकरण सब कुछ जल रहा था। लपटें ही लपटें उठ रही थीं। लेकिन भगवान् तथागत की प्रशान्त छवि देखते ही जैसे शीतल वर्षा हो गयी। उनकी उपस्थिति में क्रोध बुझ गया। उनकी आँखों को देख, उसमें से झरती-बहती करूणा की छुअन को अनुभव कर उस व्यक्ति को जीतने की नहीं हारने की चाहत पैदा हो गयी। उसके मन-प्राण अकस्मात रूपान्तरित हो उठे। यह बुद्धत्व के सान्निध्य का सुफल था।

उस ब्राह्मण भारद्वाज ने कुछ प्रश्न पूछे जरूर- मगर विवाद के लिए नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुमुक्षा के लिए। उसे यह सत्य समझ में आ गया था कि विवाद से सिर्फ विषाद पैदा होता है। जबकि सच्ची जिज्ञासा मुमुक्षा को जन्म देती है। मुमुक्षा सधे तो बुद्धत्व प्रकट होता है। उसके साथ यही हुआ। भगवान् के उत्तरों को पाकर वह समाधान को उपलब्ध हो गया। उसे समाधि लग गयी। फिर घर नहीं लौटा। उसे घर लौटने की जरूरत भी न रही। अब तो वह बुद्ध का ही हो गया। बुद्ध में ही खो गया। उसी दिन प्रवजित हुआ और उसी दिन अर्हत्व को उपलब्ध हो गया।

ऐसी घटनाएँ बहुत कम घटती हैं कि उसी दिन सन्यस्त हुआ और उसी दिन समाधिस्थ हो गया। उसी दिन मुमुक्षा जगी और उसी दिन बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया। यह तो जैसे असम्भव का सम्भव होना हुआ। जन्मों-जन्मों में भी बुद्धत्व फल जाय तो भी जल्दी फल गया। यह तो महाचमत्कार हुआ।

पर उसके भाई देवाशीष को इस पर प्रसन्नता के बदले भारी क्रोध आया। ज्यों ही उसे खबर लगी कि उसका छोटा भाई सन्यस्त हो गया, त्यों ही वह भगवान् को भाँति-भाँति की गालियाँ देता हुआ, असभ्य वचन बोलता हुआ वेणुवन में पहुँच गया। वहाँ भगवान् एक पीपल के महावृक्ष के नीचे बने चबूतरे पर आसीन थे.। उनके मुख मण्डल पर अपार शान्ति विराज रही थी। उनके रोम-रोम से प्रेम का निर्झर बह रहा था। उनके विशाल नेत्र तो जैसे करूणा का अजस्त्र स्त्रोत थे। उन्हें देखकर उसके क्रोध के दहकते अंगारे बुझ गए। कुछ इसी तरह जैसे जलते अंगारे जल में गिर कर बुझ जाते हैं।

वहाँ उपस्थित भिक्षु भगवान् का यह चमत्कार देखकर चकित थे। वे आपस में कहने लगे- आवुसो! बुद्ध गुण में बड़ा चमत्कार है। ऐसे दुष्ट, अहंकारी, क्रोधी व्यक्ति भी शान्तचित्त हो, सन्यस्त हो गए हैं। और उन्होंने ब्राह्मण धर्म को छोड़ दिया है। भगवान् ने जब इन भिक्षुओं की बातें सुनी तो उन्होंने कहा- भिक्षुओं! भुल न करो। उन्होंने ब्राह्मण धर्म को नहीं छोड़ा है। वस्तुतः पहले वे ब्राह्मण नहीं थे और अब ब्राह्मण हुए हैं। तब बुद्ध ने ये धम्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाथायें कहीं-

छेत्वा नन्दिं वरतञ्च सन्दामं सहनुक्कमं।
उक्खित्तपलिधं बुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥
अक्कोसं बधबन्धञ्च अदुट्ठो तितिक्खति।
खन्तिबलं बलानीकं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥

जिसने नद्धा, रस्सी, सांकल को काटकर खूटे को भी उखाड़ फेंका है, उस बुद्ध पुरुष को मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

जो बिना दूषित चित्त हुए गाली, बध और बन्धन को सह लेता है, क्षमा बल ही जिसके बल का सेनापति है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

भगवान् के इन वचनों को उपस्थित भिक्षुओं के साथ देवाशीष एवं उसका भाई भी खड़ा सुन रहा था। उसकी आँखों में तथागत के इन वचनों को और भी अधिक स्पष्ट रीति से जानने की उत्सुकता थी। भक्त की इस जिज्ञासा की पूर्ति करते हुए भगवान् बोले- भिक्षुओं! नद्धा अर्थात् क्रोध, सांकल अर्थात् मोह, रस्सी अर्थात- लोभ और खूंटा अर्थात् काम, इन चारों को उखाड़ फेंकने वाला एवं पवित्र व क्षमाशील अन्तःकरण वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण है। इस अनूठे ब्राह्मणत्व को उपलब्ध हुए अपने पति एवं देवर के रूपान्तरण की कथा धनजाति ने भी सुनी। सब कुछ सुनकर उसने प्रभु की महिमा के प्रति नतमस्तक होते हुए कहा- 'नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोहजनित भ्रांति से प्रभु ने उबारा

भगवान् बुद्ध ने उस युवक की ओर बड़ी ही करुणापूर्ण मुस्कराहट के साथ देखा। वह युवक उनसे दीक्षा लेकर सन्यस्त होना चाहता था। हालाँकि वह संन्यास के मर्म और धर्म से अपरिचित था। आयु की दृष्टि से भी वह कच्चा था। उसके होठों के ऊपर युवावस्था जताने वाली रेखा भी ढंग से नहीं आ पायी थी। जीवन उसने अभी सही से जाना नहीं था। लेकिन घर से ऊब गया था। माँ-पिता के अति मोह से वह बोझिल हो गया था। इकलौती संतान था, वह अपने माँ-बाप की। शायद इसी कारण वे उसे किसी भी तरह छोड़ते नहीं थे। एक ही कमरे में सोते थे तीनों। एक ही साथ खाना खाते थे। कहीं जाते तो भी एक ही साथ जाते थे।

माँ-पिता के इस अतिशय मोह ने घबरा दिया। अपनी इस घबड़ाहट में उसे एक ही बात सूझी कि किसी भी तरह इनसे पिण्ड छूट जाये। अपनी इस समस्या का उसे एक ही निदान समझ में आया कि बुद्ध-संघ में सन्यास ले लें। एक बार तो उसने माँ के सामने यह चाहत भी जता दी। इस पर तो वे रोने-चिल्लाने लगे, चीख-पुकार मचाने लगे। माँ-पिता दोनों ने ही उसे समझाया कि बेटा! यह बात ही मत उठाना। उनका मोह भारी था।

लेकिन जितना ज्यादा उनका मोह बढ़ा, उतनी ही ज्यादा उसकी भागने की इच्छा बलवती होती गयी। यह गणित भी बड़ी सीधी-साफ, स्पष्ट है कि जितनी जोर से तुम किसी को पकड़ोगे, उतना ही वह तुमसे भागने लगेगा। आखिर एक रात वह चुपचाप घर से भाग गया और लुकते-छिपते आखिरकार वह वहाँ तक पहुँच गया, जहाँ पर भगवान् बुद्ध विराजते थे। वट वृक्ष की छाँव में कमलासन पर आसीन भगवान् से उसने सन्यास लेने की प्रार्थना कर डाली। उसकी इस प्रार्थना पर बुद्ध मुस्कराये। उनकी इस मुस्कान में उसके अतीत एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगत के अनेकों बिन्दु एक साथ उभरे। भविष्यत् की अनेकों झलकियाँ उन प्रभु की मुस्कान में एक साथ प्रकट होकर रहस्यमय ढंग से विलीन हो गयीं। पर प्रकट में भगवान् ने उसे सन्यास की दीक्षा दे दी।

घबराए हुए माता-पिता ने उसकी भारी खोज-बीन की। सब जगह खोजा फिर उन्हें याद आया कि वह भिक्षु होने की कभी-कभी बात करता था, तो कहीं संन्यासी तो नहीं हो गया? इसी आशंका को लिए वे बुद्ध संघ में जा पहुँचे। थोड़ी परेशानी के बाद उन्हें उनका बेटा मिल गया। परन्तु अब वह चीवर धारी भिक्षु था। माँ ने तो उसे देखते ही रोना-धोना शुरू किया, छाती पीटी, कपड़े-फाड़े, बाल बिखेरे, लोटी जमीन पर। बाप भी कहाँ पीछे रहता, उसने भी अपने मोह को व्यक्त करने के लिए अनेकों हथकण्डे अपनाए। लेकिन बेटा भी जिद्दी था। उसने भी जिद ठान ली कि अब मैं यहाँ से जाऊँगा नहीं।

आखिर कोई और उपाय न देखकर बाप भी भिक्षु हो गया। बेटे को तो छोड़ पाना मुश्किल था, सो उसने भी सन्यास ले लिया। उसके साथ आयी उसकी पत्नी यानि कि उस युवक की माँ ने भी संन्यास ले लिया। ये तीनों ही फिर से इकट्ठे रहने लगे। अब यह संन्यास बड़ा अजीब हुआ। बेटे को संन्यास में कोई रस नहीं था, बस घर से ऊबा था। बाप को तो संन्यास से कुछ लेना-देना नहीं था, वह बेटे का साथ नहीं छोड़ सकता सो संन्यासी हो गया। रही माँ तो भला उसका मोह उसे किस तरह से छोड़ता तो वह भी भिक्षुणी बन गयी।

इन तीनों का फिर से वही पुराना क्रम शुरु हो गया। वे साथ ही साथ डोलते, साथ ही साथ बैठते, साथ ही साथ भिक्षा माँगने को जाते, साथ ही साथ बैठकर गपशप मारते। उनका संन्यास और न संन्यास तो सब बराबर था। न ध्यान, न धर्म, न साधन, न कोई सिद्धि इससे इन्हें कुछ लेना-देना नहीं था। भगवान् के वचनों को सुनने की भी इन्हें कोई परवाह नहीं थी। जबकि उन्हें सुनने के लिए लोग हजारों मील से चलकर आते थे और ये तीनों अमृत स्रोत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पास रहते हुए भी मोह विष के पान में मग्न थे। बुद्ध वचनामृत से इन्हें कोई भी मतलब नहीं था।

इनकी इस विचित्र चर्या को देखकर भिक्षु और भिक्षुणियाँ उनसे परेशान होने लगे। बात भी सच ही थी। यह कुछ अजीब सा ही जमघट हो गया था इन तीनों का। इन्होंने फिर से अपना एक परिवार बसा लिया था। आखिरकार भिक्षुओं ने यह बात शास्ता तक पहुँचायी। वे अन्तर्यामी प्रभु तो जैसे पहले से ही सब कुछ जानते थे। फिर भी उन्होंने इन तीनों को बुलाया। इस बुलाहट में तीनों हड़बड़ाहट हुए से आकर खड़े हो गये। उनके मुखमण्डल पर मोह जनित भ्रान्ति का कुहासा छाया हुआ था।

स्थिति को जानते हुए प्रभु बोले-भिक्षुओं! यह तुमने किस तरह का संन्यास लिया है? इस प्रश्न का प्रत्येक अक्षर भगवान् की करुणा से ओतप्रोत था। इस करुणा से ये तीनों भी अछूते न रहे। इस स्पर्श की संवेदना से स्नात होकर युवक के पिता ने सत्य कहा-भगवन्! संन्यास से हमें कुछ भी लेना-देना नहीं था। मैं और मेरी पत्नी-बेटे के साथ रहना चाहते हैं। और बैटा है कि सदा ही हमसे भागता रहता है। यह भगोड़ा है, बचना चाहता है। मुझे डर है कि बुरे संग में पड़ जायेगा। सो हम तो इसे बचाने के लिए इसके पीछे-पीछे लगे रहते हैं।

बाप बूढ़ा था। संसार और सांसारिकता ही उसने जानी थी। सो वही बातें उसने प्रभु को बताना शुरु की-आप तो जानते ही हैं भगवान् कि यह जवानी कितनी खराब होती है। बस इसीलिए हम इसको सम्भालने के लिए साथ लगे रहते हैं। सच्चाई यही है कि न इसे संन्यास से कुछ लेना-देना है और न हमें कुछ लेना-देना है। हम तीनों एक साथ रह सकें, इसीलिए हमने संन्यास ले लिया है। हम अलग-अलग नहीं रह सकते।

उसकी ये बातें सुनकर भगवान् के नेत्रों में करुणा सघन हो आयी। उन्होंने इन तीनों को अपने पास बुलाकर बिठाया और प्रेम से उनके माथे पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना वरद हस्त का स्पर्श करते हुए बोले-पुत्र!

अयोगे युञ्जमत्तानं योगस्मिञ्च अयोजयं।
अत्थं हित्वा पियग्गाही पिहेतत्तानुयोगिनं॥

अयोग्य कर्म में लगा हुआ, योग्य कर्म में न लगने वाला तथा श्रेय को छोड़कर प्रेय को ग्रहण करने वाला मनुष्य, आत्मानुयोगी पुरुष की स्पृछ करो।

इन वचनों का सार बताते हुए भगवान् तथागत बोले-जो तुम समझते हो वह मोहजनित भ्रान्ति से बढ़कर और कुछ नहीं है। सत्य को तुम मेरे नेत्रों से निहारो। बुद्ध पुरुषों के मार्ग पर चलने का साहस करो। तुम्हारा जीवन प्रकाशित हो जायेगा। प्रभु के इन वचनों ने उनके अन्त:करण को प्रकाशित कर दिया। उनका पथ प्रकाशित हो उठा। वे धन्य हो गये।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्चा भिक्षु

श्रावस्ती नगरी भगवान् तथागत की पुण्य प्रभाव से प्रकाशित हो रही थी। सारे नगर की वीथिकाएँ, महल, अट्टालिकाएँ, आंगन, चौबारे सम्यक् सम्बुद्ध की सुगन्ध से महक रहे थे। पुरजनों में प्रभु का सान्निध्य पाने की होड़ थी। बालक, वृद्ध, युवक, युवतियाँ सभी भगवान् के आशीष के अभिषिंचन से कृतार्थ होना चाहते थे। इस हौड़ और दौड़ में सामान्य नगर जनों से लेकर नगर श्रेष्ठी, सामन्त वर्ग यहाँ तक कि स्वयं श्रावस्ती नरेश भी शामिल थे। प्रभु-प्रेम की चाहत सभी को थी। सभी उनकी कृपा के आकांक्षी थे। अनन्त करूणा के स्रोत भगवान् की भगवत्ता के एक अंश के लिए असंख्य जन व्याकुल थे।

लेकिन इसी श्रावस्ती नगरी में कोई एक ऐसा भी था- जिसे प्रभु से कुछ नहीं चाहिए था। उसके मन-अन्तःकरण में भगवान् से कुछ भी पाने की चाहत नहीं थी। और न योग विभूति व सिद्धि की चाह। उसकी सोच थी कि सर्वअन्तर्यामी एवं महाकरूणा के परम स्रोत प्रभु से भला क्या मांगना ? भगवान् के श्री चरणों में तो बस भक्ति के अर्घ्य चढ़ाएँ जाते हैं। तन समर्पित, मन समर्पित प्रभु चरणों में जीवन समर्पित, बस यही चिन्तन सूत्र उसकी भावनाओं को घेरे रहता था। पल-पल उसके मन में भगवान् तथागत के श्री चरणों में अपने सर्वस्व समर्पण के भाव उमगा करते थे।

देकर भी करता मन, दे दूँ कुछ और अभी
सुबह दूँ शाम दूँ, तुझे आठों याम दूँ

इन भावनाओं की भाव-सरिता में वह सदा निमग्न रहता था। संघ के कुछ सदस्य यदा-कदा उसकी इन भावनाओं पर परिहास भी करते। ये कहते कि अरे! पंचग्र-दायक भगवान् हमें भिक्षु बनाना चाहते हैं और तू है कि दाता बनने की हठ ठाने रहता है। अरे भगवान् को कोई क्या देगा ? वे तो सबको सब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुछ देने वाले हैं। उस भक्त की भावनाओं में संघ के सदस्यों का कोई तर्क पूर्ण उत्तर नहीं था। पर एक बात उसका मन बार-बार कहता था कि भगवान् बुद्ध के भिक्षु भिखारी नहीं हो सकते। भिक्षु का अर्थ तो कुछ और ही होगा, यदि इस जीवन पर कभी भगवान् की करूणा बरसी तो उन्हीं से इस भिक्षु शब्द में छुपे हुए अर्थ को ग्रहण करूँगा।

यही सोचकर वह पंचग्र-दायक ब्राह्मण भगवान् के श्री चरणों में अपनी भक्ति का दान करतां रहता था। इस नियम के साथ उसका एक नियम और भी था- कि खेत बोने के पश्चात् फसल तैयार होने तक पाँच बार भिक्षु संघ को दान देना। अपने इस नियम का वह सम्पूर्ण श्रद्धा व आस्था के साथ निर्वाह करता था। हालांकि यह बात उसकी पत्नी को कतई न सुहाती थी। वह उसे बार-बार समझाती कि हर कोई भगवान् के पास उनके तप का एक अंश मांगने के लिए जाता है। उनसे अपनी मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए आशीर्वाद मांगते हैं। और एक तुम हो जो बावले की तरह अपना घर लुटाने के लिए पीछे पड़े हो। पत्नी की इन बातों का उस पर कहीं कोई असर नहीं होता। वह अपने निश्चय और संकल्प पर अडिग था।

उसके इस प्रबल निश्चय को देखकर एक दिन भगवान् भिक्षाटन के लिए जाते समय उसके द्वार पर आकर खड़े हो गए। उस समय वह पंचग्र-दायक ब्राह्मण द्वार की ओर पीठ किए हुए भोजन करने के लिए बैठा था। उसकी पत्नी उसके लिए भोजन परोसने के लिए सरंजाम जुटा रही थी। भगवान् को इस तरह खड़े होते हुए देख उसका चित्त विकल हो उठा। वह चिंतित हुई कि कहीं यदि मेरे पति ने श्रमण गौतम को देखा, तो फिर वह निश्चय ही यह सारा का सारा स्वादिष्ट भोजन उन्हें दे डालेंगे। और फिर मुझे दुबारा पकाने की झंझट उठानी पड़ेगी।

ऐसा सोच कर वह भगवान् की ओर पीठ कर उन्हें अपने पति से छिपाती हुई खड़ी हो गयी, ताकि ब्राह्मण उन्हें देख न सके। पर उस समय भक्ति भावना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से भरे हुए ब्राह्मण को भगवान् की उपस्थिति अपनी अन्त:प्रज्ञा में भासने लगी। साथ ही वह अपूर्व सुगन्ध जो भगवान् को सदा घेरे रहती थी, उसके नासा पुटों तक पहुँच गयी। तथागत के महातप के आलोक से उसका भवन भी अलौकिक दीप्ति से भरने लगा। यह सारे विचित्र अनुभव उस ब्राह्मणी को भी हुए, जो अपनी ओट से अपने पति को छुपाए हुए थी। इन अलौकिक अनुभवों में उसकी सारी क्षुद्रताएँ कब विलीन हुई उसे पता ही न चला। बस वह अपनी मूर्खताओं पर हँस पड़ी।

भगवान् तथागत अभी भी अपनी उसी जगह खड़े थे। ब्राह्मण ने चौंक कर पीछे देखा। उसे तो जैसे अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं आया और उसके मुँह से बरबस निकल गया: अरे यह क्या? भगवान्! फिर उसने भगवान् के चरण छूकर वन्दना की और अपने भोजन की थाली सम्पूर्ण रूप से भगवान् के भिक्षा पात्र में उलट दी। ऐसा करते हुए वह रोमांचित हो रहा था। उसके मुख पर धन्यता की आभा थी। हाथ जोड़े हुए वह कृतार्थ भाव से बोला, प्रभु आज मैं कितना बड़भागी हूँ जो आपने मेरा नैवेद्य स्वीकार कर लिया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उसके इन वचनों पर भगवान् के अधरों पर एक स्मित की उज्ज्वल रेखा उभरी। इस उज्ज्वलता ने ब्राह्मण के अन्त:करण को उजाले से भर दिया। इस उजलेपन से उपजी जिज्ञासा को उसने प्रभु को निवेदित करते हुए कहा- हे भगवान् आप अपने शिष्यों को भिक्षु कहते हैं। क्या अर्थ समाया है इस भिक्षु शब्द में। और कोई भिक्षु कैसे हो सकता है? यह प्रश्न उसके अन्तर्मन में अंकुरित हुआ, क्योंकि भगवान् की इस अनायास उपस्थिति के मधुर क्षण में उसके भीतर संन्यास की आकांक्षा उदय हो चली थी। सम्भवत: इस पवित्र पल में उसके सारे कर्म संस्कार शेष हो गए थे।

उत्तर में भगवान् उसे करूणापूर्ण दृष्टि से देखते हुए बोले- हे पुत्र!

सब्बसो नाम रूपस्मि यस्स नत्थि समायितं।
असता च न सोचति स वे भिक्खूति वुच्चति॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिसकी नाम-रूप, पंच स्कन्ध में जरा भी ममता नहीं है। और जो उनके नहीं होने पर शोक नहीं करता, वही भिक्षु है, उसी को मैं भिक्षु कहता हूँ।

ब्राह्मण ने बुद्ध की वाणी सुनी। वह प्रीति भाव से उनके चरणों में झुका और उसने कहा- मुझे स्वीकार कर लें प्रभु- नाम रूप की ममता ने मुझे बहुत दुःख दिए हैं, अब मुझे इनके पार ले चलें। ब्राह्मण के इन स्वरों के साथ करूणामूर्ति प्रभु ने उसे थाम लिया- इसी के साथ अब वह भी भिक्षु हो गया। परम वीतराग महाभिक्षु, भगवान् बुद्ध का सच्चा भिक्षु।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ सत्य है, निश्छलता है, वहीं विजय है

भिक्षु दिव्यांशु व्यवहार में विनम्र थे। उनकी वाणी की सौम्यता मिलने वालों को सहज प्रभावित करती थी। संघ के अधिकाँश सदस्य उन्हें सरल-सीधे, कर्मठ-कार्यकुशल मानते थे। दिव्यांशु को अपनी इस छबि पर भारी मान था। मन ही मन वह इसे अपनी उपलब्धि मानते थे। कई बार तो वह अन्य भिक्षुओं को यह भी जता देते थे कि वह भगवान् तथागत के दूर के रिश्तेदार हैं। तथागत का उन पर भारी भरोसा है। उनसे अधिक भगवान् का और कोई नजदीकी नहीं है। इन सब बातों के आधार पर कइयों ने तो यह भी मान लिया कि भविष्य में वही भिक्षु संघ का संचालन करेंगे। इस मान्यता को यदा-कदा भिक्षु दिव्यांशु अपना समर्थन भी दे देते थे।

हालाँकि भिक्षु संघ के कई सदस्य इस तरह की बातों पर प्रायः हंस देते थे। क्योंकि उन्हें मालुम था कि बुद्धत्व की परम्परा बोध के अधिकार पर यकीन करती है। इसका व्यवस्था के संचालन जैसी क्षुद्रताओं से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसों में खेत-महाकाश्यप आदि सम्बुद्ध भिक्षुओं का नाम लिया जाता था। भौतिक ऐश्वर्य से विहीन किन्तु यौगिक ऐश्वर्य से भरपूर इन महा साधकों के यथार्थ को देख पाने में सभी आँखें समर्थ नहीं थी। ज्यादातर तो दिव्यांशु को ही भावीकर्त्ता-धर्त्ता, संचालक एवं सब कुछ मान बैठे थे। इन मानने वालों को सृष्टि के नियम, विधान एवं पराप्रकृति की सूक्ष्मताओं के रहस्य का ज्ञान नहीं था।

जिन्हें बोध था, जो ज्ञानी थे, वे सत्य से सर्वांग परिचित थे। महाकाश्यप, खेत एवं महाभिक्षु मौद्गलायन को यह सत्य मालुम था कि ऊपरी तौर पर सरल, शिष्ट, शालीन, विनम्र एवं व्यवहार कुशल दिखने वाले भिक्षु दिव्यांशु आन्तरिक तौर पर अनेकों मनोग्रन्थियों से ग्रसित हैं। महात्वाकाँक्षाओं के वृश्चिक दंश उन्हें सतत् पीड़ा देते हैं। पर निन्दा वृत्ति उनमें कूट-कूट कर भरी है। ये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

षड्यंत्रों की कुटिल व्यूह रचने में काफी प्रवीण है। अपनी ही जैसी वृत्ति वाले कई साथी भिक्षुओं का इन्हें भरपूर सहयोग प्राप्त है। दूसरों के चरित्र हनन में इन्हें परम सुख मिलता है। इस सुख की अनुभूति के लिए ये हर पल षड्यंत्र की सारी सीमाओं को पार करने के लिए तैयार रहते हैं।

ऐसी कुटिलताओं से उनका श्वास-श्वास भर गया था। वे तर्क में कुशल होने पर भी ध्यान में अपरिचित थे। वे क्षुद्र में कुशल थे, पर विराट् में उनकी अकुशलता थी। वह हर बात पर लोगों को हरा सकते थे, हर उपाय से हरा सकते थे। लेकिन अभी खुद की जीत भीतर हुई न थी। शब्द के धनी ये भिक्षु दिव्यांशु मौन में परम दरिद्र थे। और अक्सर ऐसा हो जाता है कि भीतर मौन की दरिद्रता हो तो आदमी बड़ा बकवासी हो जाता है। वह अपनी क्षुद्रताओं को छिपाये भी कैसे। अपनी नग्नता को भला किस तरह से छिपाये। बस शब्दों के वस्त्र ओढ़ लेता है। शब्दों के आधार पर भूला रहता है कि मैंने मौन नहीं जाना।

और प्रायः ऐसा हो जाता है कि जब तक शब्द मौन से न आये, तब तक व्यर्थ होता है। जब तक शब्द आन्तरिक शून्य से पगा हुआ न आये तब तक बेजान होता है। जब यही शब्द भीतर ही रसधार से पग कर आता है, जब यह शून्य के गर्भ से उपजता है, तब इसमें सार होता है। लेकिन लोग नासमझ हैं इस सत्य को समझते नहीं हैं। वे व्यर्थ की बातों में आनन्द लेते हैं। किसी के घर जाकर कोई कूड़ा-करकट डाले तो झगड़ा हो जाता है। लेकिन किसी के दिमाग में कोई कितना ही कूड़ा-करकट डाले, कोई झगड़ा नहीं होता। उल्टे वह बड़े प्रेम से सुनता है, वह कहता है कि और सुनाइये। भिक्षु दिव्यांशु ऐसा करने में ऐसी ही बातों को सुनाने में परम प्रवीण थे। हालाँकि वह तथागत के सामने अच्छे और सच्चे होने का ढोंग करना नहीं भूलते थे।

एक दिन उनकी कुटिल प्रवृत्तियों ने नया षड़यंत्र करने की ठानी हुआ यूँ कि उन दिनों संघ में एक नये भिक्षु का प्रवेश हुआ था। बड़े ही निश्छल एवं निष्कपट साधक थे यह। भगवान् उन्हें आत्मीय भाव से विशुद्धि कहकर बुलाते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थे। बड़ा आन्तरिक स्नेह था शास्ता का उन पर। तथागत का यह आन्तरिक प्रेम, वह भी अभी-अभी भिक्षु बने विशुद्धि पर। यह दिव्यांशु से सहन न हुआ। और उन्होंने विशुद्धि के चरित्र को कलुषित करने की पूरी योजना बना डाली। स्वयं पर्दे की ओट में रहते हुए भी उन्होंने षड़यंत्र के सारे सरंजाम जुटा दिये।

संघ की एक भिक्षुणी और अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर उन्होंने यह अपवाद फैला दिया कि भिक्षु विशुद्धि कितने कलुषित एवं दुश्चरित्र हैं। आर्य विशुद्धि का सम्बन्ध कभी वह एक से जोड़ते कभी दूसरे से। अपने आन्तरिक कलुष का जितना कीचड़ उनपर फेंक सकते थे फेंक रहे थे। विशुद्धि निर्विकार भाव से सब कुछ सहन करते जा रहे थे। क्योंकि उन्हें भरोसा भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध अन्तर्यामी का है, जो परमज्ञानी है फिर किससे और कहाँ अपनी सफाई दे। उन्होंने अपना सब भार तथागत के चरणों में समर्पित कर दिया और अपने कर्त्तव्य कर्म में एकाग्र हो गये।

विवाद एवं प्रवाद की यह लहरें शास्ता तक भी पहुँची। पहले तो वे मुस्कराये। पर संघ के कुछ सदस्यों का मन रखने के लिए उन्होंने लौकिक ढंग से पड़ताल की। पलभर में षड़यंत्र का भेद खुल गया। सारी स्थिति उजागर हो गयी। भगवान् तथागत ने भिक्षु दिव्यांशु को बुलवाया। आते ही उन्होंने अपनी सारी विनम्रता का प्रदर्शन करते हुए-भगवान् के सामने अपने निरापराध होने की कहानी सुना दी। उन्होंने शास्ता के सामने एक नया झूठ कह सुनाया। इस झूठ को सुनकर शास्ता करुणापूर्ण हो उठे। उनके हृदय में इस भिक्षु के लिए सहज प्यार उफन पड़ा।

उन्होंने स्नेहमयी वाणी से उसे सन्मार्ग का पथ दिखाते हुए कहा- विजय मूल्यवान् नहीं है, प्रिय दिव्यांशु। फिर सत्य को छोड़कर जो विजय मिले, वह तो हार से भी बदतर है। सत्य ही एकमात्र मूल्य है और जहाँ सत्य है वहीं उसकी विजय है। सत्य के साथ हार जाना भी विजय और सौभाग्य है और झूठ के साथ जीत जाना भी दुर्भाग्य है। वत्स, ऐसा करके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तू श्रमण नहीं होगा। क्योंकि जिसने सारी कुटिलताओं एवं महत्वाकाँक्षाओं को शमित कर दिया है, उसे ही मैं श्रमण कहता हूँ। पहले तो महत्त्वाकाँक्षा ही ध्यान में बाध है। उसके ऊपर इससे कुटिल प्रवृत्तियों का जुड़ जाना- यह तो बड़ी ही विक्षिप्त स्थिति है-पुत्र।

ऐस कहते हुए भगवान् ने ये धम्म गाथाएँ कहीं-

न मुंडकेन समणो अब्ब तो अलिकं मणं
इच्छालाभ समापन्नो समणो किं भविस्सति॥
यो समेति पापानि अणु थूलानि सब्बसो।
समितत्ता हि पापानं समाणोति पवुच्चति॥

'जो व्रत रहित और मिथ्याभाषी हैं, वह मुण्डित मात्र हुआ होने पर भी श्रमण नहीं होता। इच्छालाभ से भरा हुआ पुरुष क्या श्रमण होगा? जो छोटे-बड़े पापों का सर्वथा शमन करने वाला है, वह पापों के शमन के कारण ही श्रमण कहलाता है।' - शास्ता के इन वचनों ने सभी भिक्षुओं के साधन की नयी राह दिखाई। उनके लिए ध्यान को परम मार्ग प्रशस्त किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बन्धन मुक्त ही ब्राह्मण है

चन्दाभ की ख्याति की आभा सब ओर फैली थी। राजगृह के गली-चौबारों में उसकी चर्चा होती। उसके चमत्कारों की अनेकों कथाएँ कंही-सुनि जाती थीं। सभी को उसका सामीप्य प्रिय था। उसकी एक छलक पाने की चाह अनेकों के मन में थी। लेकिन वह स्वयं में अतृप्त था। कोई कसक उसे कचोटती थी। अन्तर्हृदय का अधूरापन उसे विकल करता था। एक अनजानी छटपटाहट उसे सदा घेरे रहती थी। वह अपनी अतृप्ति को मिटाना चाहता था, पर कैसे? यह सवाल अनुत्तारित था। वह अपने अधूरेपन को मिटाकर पूर्ण होना चाहता था, लेकिन किस तरह? इस सवाल का उसके पास कोई जवाब नहीं था।

बस जब वह नींद में होता तो स्वप्नों के झरोखे से उसे झलकियाँ मिलती थीं। पूर्व जन्म की कुछ यादें, पूर्व जीवन के कुछ संस्कार उसे प्रेरित करते थे। बार-बार स्वप्न ने एक संदेश सा मिलता, पर हमेशा यह संदेश अस्पष्ट होता। कहीं किसी धुंध में कोई झांकी उभरती और लुप्त हो जाती। कोई चित्र उसे टुकड़े-टुकड़े में दिखता था, पर पूरा अक्स कभी भी उभर नहीं पाता। अपनी इस लगातार चलने वाली स्वप्न श्रृंखला वह केवल इतना समझ पाया कि वह पूर्व जन्म में भगवान कश्यप बुद्ध के चैत्य में चन्दन लगाया करता था। उसके द्वारा होने वाले सभी चमत्कार उसके उसी पुण्य का सुफल है।

उसी पुण्य से उसकी नाभि से चन्द्रमण्डल जैसी आभा निकली थी। जिसे देखकर सभी चकित होते थे। उसके घर-परिवार के लोगों ने तो इसे देखकर कुछ और ही योजना बना डाली थी। सगे-सम्बन्धियों ने उन्हें सुझाया कि आप सब चन्दाभ के चमत्कारों का प्रदर्शन करके शीघ्र ही धनवान हो सकते हो योजना लुभावनी थी, घर के लोग भी मान गए। धन का लोभ, यश की चाह हमेशा राह से दूर कर देती है। पर इस सच्चाई को विरले समझ पाते हैं। ज्यादातर के पल्ले तो बस भटकन और उलझन ही पड़ती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा ही कुछ चन्दाभ के घरवालों के साथ हो रहा था। ब्राह्मण होने का गुमान, उसपर से चमत्कारी पुत्र के माता-पिता होने का अहं उनके सिर पर चढ़कर बोलने लगा। पाखण्डी रिश्तेदारों का सहयोग भी उन्हें सहज हासिल था। इन सबकी चालाकियों ने चन्दाभ की एक न चलने दी। मन मारकर उसे भी इनकी हां में हां मिलानी पड़ी। बस ये सभी पाखण्डी ब्राह्मण उसे लेकर नगर-नगर घुमने लगे। चन्दाभ के चमत्कारी गुणों की चर्चा करके वे लोगों को लूटने लगे। वे सबसे यही कहते, जो चन्दाभ के शरीर का स्पर्श करता है, वह जो चाहता है, वही पाता है।

मन मांगी मुराद, मन चाही चाहत पाने के लाभ में लोभियों की भीड़ जुटने लगी। ठगी का व्यवसाय चल निकला। दरअसल ठगी का व्यवसाय दो प्रतियोगियों के बीच प्रतिस्पर्धा से चलता है। उसमें एक प्रतियोगी ठगने वाला होता है, और दूसरा वह होता है, जो लोभवश अपनी योग्यता से ज्यादा पाना चाहता है। असलियत में ये दोनों ही एक-दूसरे को ठगना चाहते थे। पर सफलता एक ही को मिलती है। इसमें लोभी को प्राय: हराना ही पड़ता है। चन्दाभ इस ठगी के व्यवसाय को बड़े साक्षी भाव से देखता रहता था। बीच-बीच में उसके हृदय से पुकार के आर्तस्वरों के गूंज उठती रहती।

प्रभुमार्ग दो! यही स्वर उसकी अन्तर्वेदना में गूंजते रहते। पुकार और भ्रमण दोनों ही तत्त्व चन्दाभ के अस्तित्व से एकरस हो गए थे। एक समय जब भगवान तथागत जेतवन में विहार कर रहे थे, तब उसे लिए हुए वे ब्राह्मण श्रावस्ती पहुँचे। साँझ का समय था और सारा श्रावस्ती नगर भगवान के दर्शन और धर्म श्रवण के लिए जेतवन की ओर जा रहा था। उन पाखण्डी ब्राह्मणों ने लोगों को रोककर चन्दाभ का चमत्कार दिखाना चाहा। लेकिन कोई नहीं रूका। सभी के हृदय भगवान के आकर्षण में बंधे थे। विवश हो वे ब्राह्मण भी शास्ता के अनुभाव को देखने के लिए चन्दाभ को लेकर जेतवन की ओर चल पड़े।

जेतवन पहुंच कर तो एक नया अचरज हुआ। पर यह ऐसा अचर था,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसे उपस्थित जन समुदाय ने नहीं बल्कि ब्राह्मणों ने देखा। हुआ यूं कि प्रभु के समीप पहुंचते ही चन्दाभ की आभा लुप्त हो गयी। इस आभा के लुप्त होने से चन्दाभ के परिवारिक जन अति दु:खित हुए और चमत्कृत भी। उन्होंने यह समझा कि शास्ता आभा लुप्त करने का कोई मंत्र जानते हैं। अत: उन सबने मिलकर भगवान से विनती की हे गौतम! हम सबको भी आभा को लुप्त करने का मंत्र दीजिए और उस मंत्र को काटने की विधि भी बताइए। हम लोग सदा–सदा के लिए आपके दास हो जाएंगे।

उनकी बातों पर भगवान हंसे और कहने लगे कि यह मंत्र केवल चन्दाभ को मिलेगा। परन्तु इसके लिए उसे प्रवजित होना पड़ेगा। भगवान की बातों को सुनकर चन्दाभ प्रवजित हो गया। प्रवजित होते ही चन्दाभ को विगत जीवन की स्मृति ने घेर लिया। स्वप्नों में दिखाई देने वाली अधूरी झलकें आज पूरी हो गयीं। आज वह प्रभु के आशीष से ध्यान में डूब गया। थोड़े ही समय में उसने अर्हत्व को पा लिया। वह तो भूल ही गया मंत्र की बात। महामंत्र मिले तो साधारण मंत्रों को कौन न भूल जाए।

जब उसके सगे–सम्बंधी ब्राह्मण लोग उसे वापस ले चलने के लिए आए तो वह जोर से हंसा और बोला : तुम लोग वापस लौट जाओ। अब मैं नहीं जाने वाला हो गया हूँ। मेरा आना–जाना सब मिट गया है। ब्राह्मणों को तो चन्दाभ की यह बात सिरे से समझ में नहीं आयी। उन्हें समझ में ही न आया कि यह कैसी उलट–पलटी, बहकी हुई बातें कर रहा है। ब्राह्मणों ने ये बातें वहाँ उपस्थित भिक्षुओं को बतायी। वे भी हैरान हुए, उन्हें भी चन्दाभ की बातें अटपटी लगी।

समझ के अभाव में भिक्षुओं ने जाकर भगवान से कहा, भन्ते! यह चन्दाभ भिक्षु अभी नया–नया आया है और अर्हत्व का दावा कर रहा है। और कहता है कि मैं आने–जाने से मुक्त हो गया हूँ। और इस तरह निरर्थक, सरासर झूठ बोल रहा है। आप इसे चेताइए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्ता ने मीठी हंसी के साथ कहा भिक्षुओं! मेरे इस प्रिय पुत्र की तृष्णा क्षीण हो चुकी है। और वह जो कह रहा है वह सम्पूर्ण सत्य है। वह सच्चे ब्राह्मणत्व को उपलब्ध हो गया है और तब उन्होंने ये धम्मगाथाएं कही-

चन्द्र व विमलं सुद्धं विप्पसन्नमनाविलं ।
नन्दीभवपरिक्खीणं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥
हित्त्वा मानुसकं योगं दिब्बं योगं उपच्चगा।
सब्बयोगंविसंयुत्तं तमहं ब्रुमि ब्राह्मणं॥

जो चन्द्रमा की भाँति विमल, शुद्ध, स्वच्छ और निर्मल है तथा जिसकी सभी जन्मों की तृष्णा नष्ट हो गयी है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ। जो मानुषी बन्धनों को छोड़ दिव्य बन्धनों को भी छोड़ चुका है, जो सभी बन्धनों से विमुक्त है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ। भगवान तथागत के इन वचनों ने भिक्षुओं के मन को एक नयी ज्योति से भर दिया। वे सभी विनत सन्देह हो गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्चा ब्राह्मण

सारिपुत्र के तप एवं ज्ञान की प्रभा से श्रावस्ती जनपद का कण-कण प्रकाशित हो रहा था। नगरवासी उनके गुणों की कथा कहते और सनते हुए नहीं अघाते थे। स्थविर सारिपुत्र उनके लिए मानवीय आदर्श की जीवन्त मूर्ति थे। उन्हीं से इन सभी नगरजनों ने जीवन के सत्य और मर्म को जाना था। नगरवासियों के लिए ये महाभिक्षु जीवन जीने की कला के आचार्य थे। नगरजनों में से किसी को भी जब भी कोई आशंका होती, वे उनके पास पहुँच जाते। उनकी निकटता में सहज ही उन सबको समाधान के सार्थक सूत्र मिल जाते।

सारिपुत्र के इन अनुदानों से श्रावस्ती के नगरजन कृतार्थ और कृतकृत्य थे। इस कृतकृत्यता एवं कृतार्थता ने पुरवासियों के हृदय में सघन श्रद्धा का रूप ले लिया था। इसकी अभिव्यक्ति घर-आंगन, गली-चौबारों, नगर-वीथियों में जब-जब होती रहती थी। इस अभिव्यक्ति से जहाँ साधक एवं साधुजन प्रोत्साहन पाते थे। वहीं ईर्ष्यालु एवं कुटिल जनों के हृदय पीड़ित जो उठते थे।

उस दिन सांझ के क्षणों में भी कुछ यही हुआ। श्रावस्ती की पंचग्र चौक पर बहुत से नगर जन एकत्र होकर सारिपुत्र की प्रतिभा, उनके तपस्वी जीवन की प्रशंसा कर रहे थे। वहीं पास में खड़ा एक बुद्ध विरोधी ब्राह्मण भी यह सुन रहा था। ज्यों-ज्यों प्रशंसा के स्वर उसके कानों में पड़ते त्यों-त्यों वह ईर्ष्या और क्रोध की आग में झुलसता जाता। उसके इस अन्तर्दाह से बेखबर किसी एक श्रद्धालु नगरजन ने कहा; हमारे आर्य ऐसे सहनशील हैं कि आक्रोश करने वालों या मारने वालों पर भी क्रोध नहीं करते हैं।

इस बात से तो वह ब्राह्मण एकदम ही जल उठा। उसके अन्तर्दाह की लपटें तीव्र हो उठी। अपनी छटपटाहट भरी अकुलाहट में वह पूर्णतया विवेक शून्य हो गया। उससे चुप न रहा गया और विष बुझे स्वर में बोला, अरे तुम सब लोग बकवादी हो। भला ऐसा भी कहीं होता है। उन्हें कोई क्रोधित करना जानता ही न होगा। देखो मैं उन्हें क्रोधित करके दिखाता हूँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रत्युत्तर में नगरवासियों का जोरदार ठहाका गूँज उठा। इस ठहाके की गूँज से उस ब्राह्मण की क्रोधवह्नि और प्रबल हो उठी। उसने तेज स्वर में कहा कि तुम सब जिसे असम्भव समझते हो उसे मैं सम्भव करके दिखाऊँगा। नगरवासी उसके इस कथन पर हँसने लगे और उन्होंने कहा, यदि तुम उन्हें क्रोधित कर सकते हो, तो करो।

एक प्रबल हुंकार के साथ इस चुनौती को स्वीकार करके वह ब्राह्मण वहाँ से चला गया। अब उसे बस उचित अवसर की तलाश थी। एक दिन दोपहर में उसे यह अवसर मिल गया- स्थविर सारिपुत्र उस समय भिक्षाटन के लिए जा रहे थे। तपती हुई दोपहर में वह नंगे पाँव चले जा रहे थे। उनकी देह पर केवल एक पीत चीवर भर था। उन परम तपस्वी को इस तरह से जाते हुए देख उस निर्मम ब्राह्मण ने पीछे से जाकर लात से पीठ पर जोर से मारा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आघात प्रबल था। परन्तु स्थविर सारिपुत्र रंचभर भी विचलित न हुए। उन्होंने तो पीछे मुड़कर देखा भी नहीं। वे तो ध्यान में जागे हुए, ध्यान के दीए को सम्हाले चल रहे थे। सो वे वैसे ही चलते रहे। उस दुर्बुद्धि ब्राह्मण के आघात पर उन्हें रोष के स्थान पर प्रसन्नता ही अधिक हुई। इस प्रसन्नता का कारण था कि ऐसे में भी उनका मन स्थिर रहा। हालांकि साधारण तौर पर ऐसी दशा में मन का डांवाडोल हो उठना स्वाभाविक है। पर उनके साथ कुछ और ही हुआ। उनका मन निष्कम्प बना रहा और ध्यान की ज्योति और भी थिर हो उठी। उनके भीतर इस तरह से ताल का आघात करने वाले ब्राह्मण के प्रति आघात के सिवा और कुछ भी न था।

इस घटना से वह निष्ठुर ब्राह्मण भी भारी चकित हुआ। उसे इस तरह से अप्रत्याशित व्यवहार की बिलकुल भी उम्मीद न थी। उसकी अन्धता दूर हो गयी। सन्त की कृपा से उसे ज्ञान चक्षु मिले। वह सारिपुत्र के चरणों में गिर पड़ा। प्रायश्चित्त के भावों के साथ उसने भरे हृदय से क्षमा प्रार्थना की। और उन्हें घर ले जाकर भोजन कराया। अभी भी उसकी आँखें पश्चाताप के आँसुओं से भरी थी और वे आँसु उसके सारे कल्मष को बहाकर उसकी आत्मा को निर्मल कर रहे थे।

इस तरह सारिपुत्र के माध्यम से उस ब्राह्मण के ऊपर भगवान् तथागत की कृपा की किरण पड़ी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परन्तु इस घटना की अनेकों प्रतिक्रियाएँ उठी। इनमें से कुछ तो नगरवासियों के अन्तर्हृदय में उपजी। तो कुछ भिक्षुसंघों के सदस्यों के मन में पनपी। संघ के कई भिक्षुों को स्थविर सारिपुत्र का यह व्यवहार नहीं जँचा। उन्होंने भगवान् तथागत से शिकायत भरे स्वरों में कहा- हे प्रभु! आर्य सारिपुत्र ने यह अच्छा नहीं किया।

क्या भन्ते? बुद्ध ने हलके से स्मित के साथ कहा। उत्तर में कुछ भिक्षुओं ने कहा- यही मारने वाले ब्राह्मण के घर पर जाकर उन्होंने भोजन जो किया। अब भला वह किसे बिना मारे छोड़ेगा। इस तरह तो वह भिक्षुओं को मारने की आदत बना लेगा। अब तो बस वह भिक्षुओं को मारता हुआ ही विचरण करेगा।

भिक्षुओं के इस कथन पर शास्ता ने कहा; भिक्षुओं! ब्राह्मण को मारने वाला ब्राह्मण नहीं है। सारिपुत्र ने वही किया जो कि सच्चे ब्राह्मण के लिए उचित है। क्या तुम्हें यह पता नहीं है कि सारिपुत्र के ध्यानपूर्ण व्यवहार ने एक अन्धे आदमी को आँखें प्रदान कर दी हैं।

इसी के साथ उन्होंने उन भिक्षुओं को प्रबोध करने वाली ये गाथाएँ कहीं-

न ब्राह्मणस्सेतदकिंञ्चि सेय्यो यदा निसेधो मनसो पियेहि।
यतो यतो हिंसमनो निवत्तति ततो ततो सम्मति एव दुक्खं॥

न जटाहि न गोत्तेहि न जत्त्वा हीति ब्राह्मणो।
यम्हि सच्चञ्च धम्मो च सो सुची च ब्राह्मणो॥

अर्थात्- ब्राह्मण के लिए यह कम श्रेयस्कर नहीं है कि वह प्रिय पदार्थों को मन से हटा लेता है। जहाँ-जहाँ मन हिंसा से निवृत्त होता है, वहाँ-वहाँ दुःख शान्त हो जाता है।

न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है। जिसमें सत्य और धर्म है, वहीं शुचि है, वही ब्राह्मण है।

भगवान् तथागत अपनी इन गाथाओं को सुनाकर मौन हो गए। लेकिन उनके इस मौन में भी एक सन्देश मुखरित था- जो सुनने वाले साधकों के मनो को निर्मल बना रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूर्णा चली पूर्णता की डगर पर

राजगृह की भूमि इन दिनों तथागत के चरण स्पर्श से पावन हो रही थी। भगवान् यहाँ एक आम्रकुञ्ज में विराज रहे थे। उनके साथ भिक्षु संघ के अनेकों सदस्य भी थे। जो नित्य प्रति अपने शास्ता के अमृत वचनों से धन्य होते थे। राजगृह के नगर जन भी भगवान् के सान्निध्य का लाभ लेने के लिए रोज आते थे। हालांकि इनकी संख्या रोज घटती-बढ़ती रहती थी। सांसारिक जीवन की अनेकों उलझनें, तरह-तरह की लालसाएँ उन्हें जब तक रोक लेती। आज भी अनेकों पग यहाँ तक नहीं पहुँच सके थे। वजह यह थी कि नगर में आज शरद पूर्णिमा के महोत्सव की धूम मची थी।

युवक-युवतियों की अठखेलियों से नगर की वीथियाँ गूँज रही थी। शमा कुछ ऐसा था कि जैसे धरती पर नहीं आकाश में भी यह उत्सव मनाया जा रहा हो। निरभ्र नीलगगन में चन्द्रदेव की शोभायात्रा आज पुरी सज-धज के साथ निकल रही थी। वे भी तारक-तारिकाओं के समुदाय से घिरे थे। यही नहीं आज वे शरद पूर्णिमा के महोत्सव के अवसर पर मुक्त हाथों से अपने चाँदनी के कोष को लुटा हरे थे। उनके द्वारा बरसायी जा रही यह चाँदनी नगर की वीथियों में भी झर रही थी और प्रभु की उपस्थिति से धन्य हो रहे इस आम्रकुञ्ज में भी। नगर जन जहाँ आज की चाँदनी वृष्टि को अपने हास-विलास के लिए उत्प्रेरक मान रहे थे, वहीं भिक्षुओं के लिए इसका अर्थ भिन्न था। वे तो इसे बस निर्मल मन की अजस्र सम्पदा के रूप में देख रहे थे।

पूर्णा भिक्षुओं की इस मनोदशा से अनजान थी। उसके जीवन के मानदण्ड उनसे अलग थे। वह जीवन को यश, ऐश्वर्य एवं भोग के रूप में परिभाषित करती थी। वह परम रूपवती तो थी ही। उसे अपने सौन्दर्य पर भारी घमण्ड भी था। इस सौन्दर्य को अधिक से अधिक निखारना ही उसके लिए परम पुरुषार्थ था। अपने नित्य नवीन श्रृंगार से सभी को चकित करते रहना उसके जीवन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबसे बड़ा रोमांच था। आज तो उसने कुछ विशेष ही शृंगार रचा था। यौवन से दीप्त सौन्दर्य का साकार रूप बनी वह मदिर गति से अपने कक्ष में घूम रही थी। उसके आभूषणों की चमक रूप ज्वाला की लपट बनकर समूचे कक्ष में फैल रही थी। काम की कन्या सी कमनीय पूर्णा को आज अपने प्रिय की प्रतीक्षा थी। उसके सभी हाव-भाव यही सन्देश दे रहे थे।

प्रतीक्षा से व्याकुल पूर्णा की दृष्टि उस आम्रकुञ्ज पर पड़ी, जहाँ भगवान् अपने भिक्षुओं के साथ विराज रहे थे। उसने देखा अनेक भिक्षु शानत बैठे हैं, अनेक भिक्षु खड़े हैं, अनेक भिक्षु चल-फिर रहे हैं। यह देखकर उसे बड़ी हैरानी हुई। उसने सोचा इतनी रात गए ये भिक्षु भला क्या कर रहे हैं ? क्यों जाग रहे हैं। उसने सोचा कि मैं तो अपने प्रिय की प्रतीक्षा में जाग रही हूँ। मेरे जागरण का कारण तो विरह की व्याकुलता है। लेकिन भला इन्हें किसकी प्रतीक्षा है। ये किसके विरह की व्याकुलता में जाग रहे हैं। ऐसा सोचते हुए वह एक कुटिल हंसी हंस दी। और अपने आप ही बोली, अरे सब भ्रष्ट हैं, ढोंगी हैं, पाखण्डी हैं। इन्हें भी अपने प्रमियों, प्रयेसियों की प्रतीक्षा होगी। अन्यथा आधी रात इस तरह से जागते रहने का क्या प्रयोजन है।

उसकी इस विडम्बनाग्रस्त मनःस्थिति से अवगत अन्तर्यामी भगवान् तथा दूसरे दिन सुबह उसके द्वार पर भिक्षाटन के लिए गए। वह तो बहुत चौंकी। एक पल को सोला कि भला यह यहाँ क्यों आ गया। पाखण्डियों का ही गुरु है, तो होना तो पाखण्डी ही चाहिए। मन में तो आया कि अभी भगा दें। लेकिन सामने खड़े इस शान्त मुद्रा व्यक्ति को भगा न सकी। वह इन्कार करना चाहकर भी इन्कार न कर सकी। पहले तो कुछ क्षणों तक चुप खड़ी रही। फिर उसने भगवान् को किसी तरह से भोजन कराया।

भगवान् ने बड़ी प्रसन्न मुद्रा में आदर भाव के साथ उसके द्वारा दिया गया भोजन ग्रहण किया। बाद में भोजनोपरान्त उन्होंने उससे कहा- पूर्णे, तू मेरे भिक्षुओं की निन्दा क्यों करती है। भगवान् के इस कथन पर वह अवाक् रह गयी। मन की अचकचाहट उसके चेहरे पर उभर आयी। उसे उनके वचनों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भरोसा ही न आया। क्योंकि उसने यह बात किसी से न कही थी। वह बोली, भंते कैसी निन्दा। निन्दा तो मैं कभी नहीं करती। मैने कब की निन्दा? भगवान् मुस्कराते हुए बोले, रात की सोच, रात तूने क्या सोचा था?

तथागत के इस कथन पर पूर्णा बहुत शर्मिन्दा हुई। और फिर उसने सारी बात कह सुनायी। शास्ता ने उससे कहा- पूर्णे, तू अपने दुःख से नहीं सोयी थी, और मेरे भिक्षु अपने आनन्द के कारण जागते थे। तू विचारों-विकारों के कारण नहीं सोती थी, जबकि मेरे भिक्षु ध्यान कर रहे थे। वे निर्विकार होने के कारण नहीं सोए थे। पूर्णा ये बातें करते हुए तथागत का मुखमण्डल करूणा से दीप्त हो उठा। वह अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोले- नींद और नींद में भेद है पूर्णे। इसी तरह से जागरण और जागरण में भी बड़ा भेद है। यह नया जागना सीख, पागल, पुराना जागना कुछ खास जागना नहीं है। सोए-सोए तो सब गंवाया ही गंवाया। अब कुछ कमा भी ले।

इसी के साथ उन्होंने यह धम्म गाथा कही-

सदा जागरमानानं अहोरत्तानुसिक्खिनं।
निब्बानं अधिकयुत्तानं अत्थं गच्छति आसवा॥

जो सदा जागरूक रहते हैं और दिन रात सीखते रहते हैं तथा निर्वाण ही जिनका एकमात्र उद्देश्य है, उनके ही आश्रव नष्ट होते हैं।

भगवान के मुख से इस धम्मगाथा को सुनकर पूर्णा जैसे गहरी नींद से जागी। उसकी आँखों से प्रायश्चित की वेदना और जिज्ञासा की आतुरता एक साथ छलक आयी। भावों की सघनता के कारण वह कुछ बोल तो नहीं पायी, पर अपलक नेत्रों से भगवान् को निहारती रह गयी। उसके इस परिवर्तन पर अपनी करूणा का जल ढारते हुए भगवान् अपने द्वारा कही गयी कथा का मर्म उजागर करते हुए बोले-

जागते वही हैं जो अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हैं। और जिनका शिष्यत्व सम्पूर्ण है, वे सीखने से कभी चूकते नहीं। दिन हो कि रात, सुबह हो या सांझ, अपना हो या पराया, शत्रु हो या मित्र, कोई घृणा करे या प्रेम, कोई गाली दे या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मान, वे सीखते ही रहते हैं। जो हर चीज को अपने शिक्षणमें बदल देने की कला जानते हैं, वही निर्वाण को अपना लक्ष्य बना पाते हैं। शरीर और मन की सीमाओं से मुक्त होर सर्वव्यापक चेतना में लीन होने के लिए जो उत्सुक हैं। जो अपनी बूँद को सागर में गिरा देने के लिए उत्सुक हैं, ऐसा ही व्यक्ति अंधेरे के पार जाता है। प्रभु की इस वाणी को सुनकर पूर्णा पूर्णता की डगर पर चल पड़ी। उसके साथ और भी अनेकों पग इस ओर चलने के लिए उत्सुक हुए।

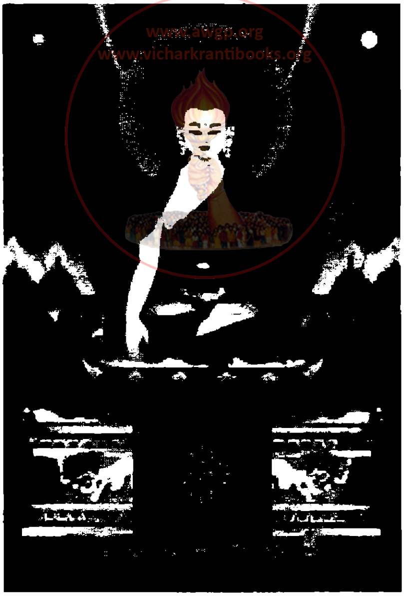

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहिरंग नहीं, प्रभु के अंतरंग को जाना

'भिक्षां देहि'- सुनकर सुनने वालों के पांव ठिठक गए। करूणा, कोमलता और मधुरता में सने थे ये शब्द। नगर वीथी से गुजर रहे लोगों की अनगिन आँखें उस मुखड़े पर जा टिकीं, जहाँ से ये शब्द निकले थे। तप से दपदप दमकता चेहरा, सरलता का सलोनापन, अजस्र करूणा की स्रोत आँखें, भव्य देहयष्टि, सचमुच ही सौन्दर्य का सरस पुञ्ज लग रहे थे, भगवान् तथागत। उनके इस सम्मोहक सौन्दर्य को जिसने भी देखा- देखता ही रह गया। भगवान् के आगे बढ़ते पाँवों के साथ अनगिनत मन लिपटे हुए जा रहे थे। सभी की यही चाहत थी कि प्रभु आज मेरे द्वार रूकें। मेरे यहाँ से भिक्षा ग्रहण करें। मेरा आंगन भगवान् की चरण धूलि से पवित्र हो।

अनेकों के आकर्षण से असंपृक्त प्रभु एक द्वार पर जा रूके। यह श्रावस्ती नगरी के परम विद्वान् वसुबन्धु का घर था। आचार्य वसुबन्धु की गणना नगर के श्रेष्ठ ब्राह्मणों में की जाती थी। आचार्य विद्वान् होने के साथ अचारवान व तपस्वी थे। उनके घर में केवल तीन प्राणी थे, वे स्वयं, उनकी धर्मपत्नी सुलक्षणा एवं इकलौता युवा पुत्र वक्कलि। प्रभु द्वारा की गयी भिक्षा की पुकार को सबसे पहले उसी ने सुना। और सुनते ही भागा-भागा द्वार पर गया और प्रभु के अद्‌भुत सौन्दर्य को निहारता ही रह गया। बहुत देर बाद भी जब पुत्र न लौटा तो गृहस्वामी ने पुकारा- बाहर कौन है पुत्र।

इस प्रश्न का भी जब कोई उत्तर न मिला तो स्वयं आचार्य वसुबन्धु द्वार पर आये। उन्होंने देखा कि स्वयं भगवान् तथागत द्वार पर खड़े हैं। यह देखते ही आचार्य हर्ष से विह्वल हो गये। उनका अहोभाव आँखों में छलक आया। गद्‌गद कण्ठ से उन्होंने कहा- मैं बड़भागी हूँ प्रभु! जो आप मेरे घर आए। आचार्य वसुबन्धु की सघन श्रद्धा की कड़ियों को सुलझाते हुए प्रभु ने कहा- मैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भिक्षा प्रार्थी हूँ आचार्य। भगवान् के इन वचनों के साथ ही वसुबन्धु ने उनके चरण पखारे और भोजन के लिए आसन पर बिठाया। गृहस्वामिनी सुलक्षणा ने उनको प्रीति व सत्कारपूर्वक भोजन कराया।

तथागत जितनी देर भोजन करते रहे, आचार्य का युवा पुत्र वक्कलि उन्हें एकटक देखता रहा। प्रभु को इस तरह निहारते हुए उसने सोचा कि कितने सम्मोहक हैं भगवान्। यदि मैं इनके पास भिक्षु हो जाऊँ, तो सदा इन्हें देख पाऊँगा। उसने अपने मन की इस चाहत का छोटा सा अंश अपने माता-पिता को बताया। उसके माता-पिता धर्मपरायण होने के साथ परम विवेकी भी थे। उन्हें संसार की असारता का ज्ञान था। पुत्र भगवान् बुद्ध की शरण में यदि जाना चाहता है, तो इससे श्रेष्ठ भला और क्या होगा? उन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ पुत्र को भिक्षु होने की अनुमति दे दी।

धम्मं शरणं गच्छामि! संघं शरणं गच्छामि!! बुद्धं शरणं गच्छामि!!! इन तीन प्रतिज्ञाओं के साथ वक्कलि ने प्रव्रज्या ग्रहण कर ली। हालांकि इन प्रतिज्ञाओं को उन्होंने केवल मुख से उच्चारित किया था। उनका अन्तर्मन तो केवल भगवान् के सौन्दर्य में उलझा हुआ था। वह तो केवल उन्हें देखने के लिए, देखते रहने के लिए प्रवजित हुए थे। यही वजह थी कि वे प्रव्रज्या के दिन से ही ध्यान-धारणा आदि न करके केवल तथागत के रूप-सौन्दर्य को देखा करते थे। प्रारम्भ में भगवान् भी उनके ज्ञान की अपरिपक्वता को देखकर कुछ नहीं कहते थे।

परन्तु जब यह सिलसिला निरन्तर चलता रहा तो प्रभु ने एक दिन वक्कलि को टोका। उसे चेताते हुए उन्होंने कहा- वक्कलि! इस अपवित्र शरीर को देखने से क्या लाभ? शरीर तो बस मल-मूत्र का पिटारा है। इसे देखते रहना छोड़कर तुम ध्यान करने की कोशिश करो। धर्म के तत्त्व को जानने की कोशिश करो। धर्म मेरा वास्तविक स्वरूप है। जो धर्म को देखता है, वही मुझे देखता है। भगवान् के इस तरह समझाने के बावजूद वक्कलि को सुध न आयी। उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी आदतें पहले की ही भाँति बनी रही। वे शास्ता का साथ छोड़कर कहीं भी न जाते थे। शास्ता के कहने पर भी नहीं। किसी भी भाँति उनका यह मोह छूटता ही नहीं था।

उन्हें इस भाँति मोहासक्त देखकर भगवान् ने विचार किया कि यह भिक्षु चोट खाए बिना नहीं सम्हलेगा। यह संवेग को प्राप्त हो, तो ही शायद समझे, सम्हले। सो एक दिन किसी विशिष्ट महोत्सव के समय भगवान् ने उस पर करारी चोट की। हजारों भिक्षुओं के सामने उन्होंने उसका घोर अपमान किया। उसे डांटते, फटकारते, तिरस्कार करते हुए वह बोले- हट जो वक्कलि, तू मेरे सामने से हट जा। तू नीच है, कुसंस्कारी है, तेरा चित्त विकारों से भरा है। तू मेरे पास रहने योग्य नहीं है। यहाँ से चला जा। इन वचनों के साथ ही प्रभु ने भिक्षुओं को संकेत किया कि वे वक्कलि को यहाँ से बाहर निकाल दें।

करूणामूर्ति प्रभु के इस क्रोध ने सभी को चकित कर दिया। सभी हैरान थे। आखिर ऐसा क्यों किया भगवान् ने। वक्कलि को तो प्रभु की बातों से गहरी चोट लगी। उसका अन्तःकरण हाहाकार कर उठा। उसके क्षुब्ध हृदय में पीड़ा आन्दोलित होने लगी। आखिर उसे चोट भी तो गहरी लगी थी। हालांकि उसने इस गहरी चोट की भी गलत व्याख्या की। अपनी भ्रान्तिवश उसने सोचा कि भगवान् मुझसे क्रुद्ध हैं। उन्होंने मुझे त्याग दिया है। और जब उन्होंने ही मुझे त्याग दिया है तो फिर इस जीवन का क्या प्रयोजन? जब मैं उनके सामने निरन्तर बैठकर उनका रूप नहीं निहार सकता, तो फिर ऐसे में मर ही जाना उचित है।

अपनी धुन में ऐसा सोचते हुए वह गृद्धकूट पर्वत की ओर चल पड़ा। पर्वत के पास पहुँचकर उसने आँसू भरी आँखों से पर्वत को देखा और ऊपर की ओर चढ़ने लगा। इस तरह चढ़ते हुए अन्धेरा हो गया। और वह शिखर पर जा पहुँचा। उस शिखर से कूदकर वह आत्मघात करना चाहता था। भगवान् का स्मरण करते हुए उसने आत्मघात का अन्तिम निश्चय किया। इस आखिरी क्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में बस वह कूदने को ही था- कि उस घुप्प अंधेरे में से कोई हाथ उसके कन्धे पर आया। उसने पीछे- मुड़कर देखा। भगवान् सामने खड़े थे। अंधेरी रात्रि में उनकी प्रभा अपूर्व थी। आज प्रभु का स्पर्श भी अलौकिक था। इस स्पर्श ने वक्कलि को नयी चेतना दी थी। सो उसने आज शास्ता की देह नहीं, बल्कि स्वयं शास्ता को देखा। आज उसने धर्म को अपने सामने जीवन्त खड़े देखा। एक नयी प्रीति उसमें उमड़ी- ऐसी प्रीति जो कि बांधती नहीं, मुक्त करती है।

तब भगवान् ने इस अपूर्व अनुभूति के क्षण में यह धम्मगाथा कही-

छिदं सीतं परवकम्म कामे पनुद ब्राह्मण।
संखर रानं खयं अत्वा अकटाञ्ञसि ब्राह्मण॥

हे ब्राह्मण! पराक्रम से तृष्णा के स्रोत को काट दे और कामनाओं क़ो दूर कर दे। हे ब्राह्मण, संस्कारों के क्षण को जानकर तुम अकृत- निर्वाह का साक्षात्कार कर लोगे।

भगवान् द्वारा कही गयी इस गाथा को सुनकर वक्कलि की अन्तर्चेतना निर्वाण के पथ पर मुड़ चली। यह परम सौभागय प्रभु की कृपा का सुफल था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निंदा छोड़ो-ध्यान सीखो

श्रेष्ठी अतुल श्रावस्ती के महाधनपति थे। उनके नाम की हुण्डियाँ पूरे देश में चलती थीं। विश्व के अनेक बन्दरगाहों पर उनके व्यापारिक जलयान खड़े रहते थे। दुनिया भर के प्रतिष्ठित व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में श्रेष्ठी अतुल के नाम की धाक थी। सभी उनके व्यापार प्रबन्धन के कायल थे। उन्हें लेकर अनेकों किम्वदंतियाँ देश भर के नगर जनपदों के साथ देशान्तरों में फैली थी। धन अर्जन के साथ श्रेष्ठी अतुल की अभिरूचि धर्म अर्जन में भी थी। हालांकि इस क्षेत्र में वे अभी तक अकुशल थे। फिर भी गाहे-बगाहे इसके लिए कोशिशें करते रहते थे। कभी-कभी यहाँ भी वह अपनी व्यापारिक तकनीकें अपनाने से नहीं चूकते थे। सोच यही थी कि शायद इस तरह व्यापार की भाँति धर्म में भी सफलता मिल जाय।

इसी वजह से वह भगवान् तथागत के धम्म संघ को भरपूर दान देते थे। समय-समय पर अपने जनपद के अनेक लोगों के साथ भगवान् के दर्शनों के लिए पहुँचते थे। किसी के पूछने पर बताते थे कि इस तरह से तथागत के यश का विस्तार होगा। उनके संघ का प्रचार होगा। साल में कम से कम चार उनकी इस तरह की यात्राएँ होती थीं। हालांकि जितनी बार वे जाते थे, उतनी ही बार वह संघ की निन्दा, भिक्षुओं पर कटूक्ति भरे व्यंग करने से नहीं चूकते थे। बड़ी अनोखी भावदशा थी उनकी- बुद्ध संघ में जाना भी और संघ की निन्दा भी करना। हाँ, इतना जरूर था कि उनके मन में कहीं बुद्ध के प्रति प्रीति का अंकुर भी था।

इस सबार भी वह पाँच सौ व्यक्तियों के साथ भगवान् के संघ में धर्म श्रवण के लिए आए थे। इन पाँच सौ व्यक्तियों में देश भर के गणमान्य नागरिक एवं प्रतिष्ठित व्यवसायी थे। कई विदेशी जन भी इस बार उनके साथ थे। इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबके साथ संघ में आते ही उन्होंने भिक्षुओं से कहा- कि इन सभी को अविलम्ब तथागत से भेंट करनी है। तुरन्त ही इसकी व्यवस्था की जाय। भिक्षुओं ने उनकी बात ध्यान से सुनकर विनम्र स्वर में कहा- भन्ते! पहले आप महास्थविर रेवत से मिल लें। उनकी देशना सुनें। इसके बाद यदि वह उचित समझेंगे तो शास्ता से मिलने की व्यवस्था हो जाएगी।

भिक्षुओं के इस उत्तर से श्रेष्ठी अतुल बुरी तरह से झुंझला उठे। उन्होंने लगभग गरजते हुए कहा- तुम लोग शायद मुझे जानते नहीं। अन्यथा ऐसी हिम्मत व हिमाकत न करते। खैर चलो, देखें तो सही ये महास्थविर रेवत आखिर हैं कौन? इसी तरह झल्लाते और झुंझलाते हुए श्रेष्ठी अतुल अपनी पूरी मण्डली के साथ स्थविर रेवत के पास पहुँच गए। एक बड़े सभागार में उन सभी को बिठाया गया। स्थविर रेवत भी वहाँ एक आसन पर बैठे थे। उन्होंने इन सभी को देखा, देखकर भावभरा नमन किया, पर कुछ बोले नहीं। थोड़ी देर तक तक सभागार में सन्नाटा छाया रहा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेकिन इस सन्नाटे में श्रेष्ठी अतुल के अन्तर्मन में भारी शोरगुल मच गया। उनकी झुंझलाहट और भी बढ़ गयी। उन्होंने सभी को उठने का संकेत दिया और स्वयं भी उठ खड़े हुए। स्थविर रेवत को छोड़कर ये सभी द्वार से बाहर निकल गए। द्वार से निकलते ही इनकी भेंट स्थविर सारिपुत्र से हो गयी। उन्होंने इन्हें मधुर वचनों से शान्त करने का प्रयास किया। अनेक दृष्टान्तों से उनको समझाया। परन्तु अतुल और उनके मित्रों का क्रोध बढ़ता गया। आखिरकार हारकर स्थविर रेवत ने इन सबको आनन्द के पास भेज दिया। आनन्द स्वभाव से परम शान्त थे। भगवान् तथागत के चरणों में उनकी अविरल भक्ति थी। उन्होंने भी इन सबको समझाने की, शान्त करने की भरसक कोशिश की। लेकिन बात बनी नहीं।

हार-थक कर वह इन सबको भगवान् के पास ले गए। भगवान् के पास पहुँचते ही श्रेष्ठी अतुल का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने शिकायती लहजे में कहा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान् आपके भिक्षुओं को बिलकुल भी समझ नहीं है। ये न तो आपको ठीक तरह से समझते हैं और न ही इन्होंने मुझे ढंग से समझा। श्रेष्ठी की इन बातों पर तथागत मुस्करा दिए। और इसी मन्द मुस्कान के साथ वह बोले- तुम भिक्षुओं को छोड़कर अपनी बात कहो श्रेष्ठी।

ऐसा कहने पर उसने भगवान् से कहा- भन्ते! मैं इतनी प्रबल आशा से धर्म श्रवण के लिए आया था। लेकिन स्थविर रेवत कुछ बोले ही नहीं, चुपचाप बैठे रहे। भला यह भी कोई बात हुई। मैं अकेला भी नहीं, पाँच सौ लोगों को साथ लेकर आया था। हम सभी काफी दूर से आए थे। बड़ा नाम सुना था रेवत का कि ज्ञान को उपलब्ध हो गए हैं। आपके बड़े शिष्य हैं। लेकिन यह क्या बात है कि हम सब बैठे रहे और वे चुपचाप बैठे रहे, कुछ नहीं बोले। मुझे तो उनका यह रवैया बिलकुल भी नहीं जमा।

फिर हम सब सारिपुत्र के पास गए। सारिपुत्र बोले, लेकिन इतना बोले कि सब हमारे सिर पर से बह गया। वे जरूरत से ज्यादा ही बोले। उन्होंने न जाने कैसी अटपटी और उलझी हुई बातें कीं। कि हमारी पकड़ में तो कुछ भी नहीं आया। हम सबकी तो ऐसी हालत हो गयी कि बैठे-बैठे उबासी आने लगी। कईयों को तो उबकाई आने लगी कुछ की तो झपकी लग गयी। और कई तो सो गए। अब आप ही कहें किसी को इतना बोलना चाहिए क्या? इस तरह की सूक्ष्म एवं अटपटी बातें करनी चाहिए।

अरे भई, बोलना है तो ऐसे बोलो जो कि हमारी समझ में आए। उन्होंने तो इतना ज्यादा कहा कि हमें जो थोड़ी-बहुत समझ थी, वह भी समाप्त हो गयी। यह सारिपुत्र तो बड़े बातूनी हैं, हमेशा बकवास भरी बक-बक करते रहते हैं। बड़ा अजब तमाशा रहा- एक सज्जन तो चुपचाप बैठे रहे, बोले ही नहीं। उनसे एक बूंद भी न मिली। और ये दूसरे सज्जनतो ऐसे बरसे मूलसलाधार कि जो हाथ में था, वह भी बह गया।

फिर हम उन्हें सुनने के बाद आनन्द के पास गए। उन्होंने बहुत थोड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा। अत्यन्त सूत्र रूप में बोले, हम सबकी पकड़ में तो कुछ आया ही नहीं। अरे यह भी कुछ बात हुई। उन्हें इतना तो सोचना चाहिए कि कुछ फैलाकर कहें, समझाकर करें। कुछ दृष्टान्त कहें, कहते-कहते कुछ दोहराएँ भी ताकि हमारी समझ में आए। ये सूत्र तो बड़े कठिन होते हैं। हमारी समझ में आए भी तो कैसे? अब हार-थक कर हम आपके पास आएँ हैं। आपके इन तीनों शिष्यों पर हमें बहुत ही क्रोध है।

भगवान् ने श्रेष्ठी अतुल की बातें ध्यान से सुनी। और हँसते हुए उन्होंने ये धम्मगाथा कही-

योराणमेतं अतुल! नेतं अज्ञनमिव।
निन्दन्ति तुष्हीमासीनं निन्दन्ति बहुमाणिनं।
मितमाणिनम्पि निन्दन्ति नत्थि लोके अनिन्दतो॥

हे अतुल! यह पुरानी बात है यह कोई आज की बात नहीं है। कि लोग चुप बैठे हुए की निन्दा करते हैं, बहुत बोलने वाले की निन्दा करते हैं, मितभाषी की भी निन्दा करते हैं, लोक में अनिन्दित कोई भी नहीं है।

इतना सुनाकर भगवान् प्रीतिपूर्ण वचनों से बोले- श्रेष्ठी अतुल, धन-उपार्जन और धर्म अर्जन की विधियाँ अलग हैं। धन सांसारिक और चतुराई भरे व्यवहार से मिलता है, जबकि धर्म ध्यान से जाना जाता है। निन्दा छोड़ो और ध्यान सीखो। इसी में तुम्हारा कल्याण है।

सम्पर्क सूत्र :-

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411

Ph.No.Off.- 01334-260602, 260403, 261328 Fax-260866
www.awgp.org shantikunj@awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उठाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‍घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‍बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‍भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org